राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषानिबद्ध
विविध वाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक
पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य
सम्मान्य संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर;
ऑनरेरि मेम्बर ऑफ जर्मन ओरिएन्टल सोसाइटी, जर्मनी;
निवृत्त सम्मान्य नियामक (ऑनरेरि डायरेक्टर),
भारतीय विद्याभवन, बम्बई; प्रधान सम्पादक,
सिंघी जैन ग्रन्थमाला, इत्यादि

ग्रन्थाङ्क ७४

सायांजी झूला कृत

रुकमणी - हरण

प्रकाशक
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
संचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

सायांजी झूला कृत

रुषमणी - हरण

सम्पादक

श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया
एम ए., साहित्यरत्न

प्रकाशनकर्ता
राजस्थान राज्याज्ञानुसार
सञ्चालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

विक्रमाब्द २०२१
प्रथमावृत्ति १०००

भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८८६

खिस्ताब्द १९६४
मूल्य– ३.५० न.पै.

मुद्रक– श्री हरिप्रसाद पारीक, साधना प्रेस, जोधपुर ।

विषयानुक्रमणिका

सञ्चालकीय वक्तव्य

अनेक प्रतिभावान कवियो की ख्याति अपनी प्रादेशिक सीमाओं को पार कर पडौसी प्रदेशो मे पहुँच जाती है और उनकी रचनाओं का प्रभाव भी सम्बन्धित प्रदेशो के जन-मानस पर स्थाई हो जाता है। अनेक चारण कवियो का महत्त्व राजस्थान, गुजरात और मध्य भारत मे समान रूप से है तथा इनको रचनाए जनता द्वारा नित्य पाठ में सम्मिलित हो चुकी है। ऐसे कवियों में महात्मा सायांजी अग्रगण्य हैं। सन्त सायांजी के चमत्कारपूर्ण कार्यो के विषय मे कतिपय जनश्रुतिया भी प्रचलित हो गई है और इनका रचित काव्य "नागदमण" हमारी जनता मे नित्यपाठ का ग्रन्थ हो चुका है।

सन्त कवि सायाजी कृत "नागदमण" के अतिरिक्त इनकी अपर काव्य-कृति "रुक्मिणी-हरण" साहित्यिक इतिहास-ग्रन्थो मे बहुचर्चित रही है। प्रसन्नता का विषय है कि अब रुक्मिणी-हरण का सस्करण विभिन्न पाठान्तरो सहित सुसम्पादित रूप मे "राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला" के माध्यम से सुविज्ञ पाठको के हाथो मे पहुँच रहा है।

रुक्मिणी-हरण के अनेक अंश काव्यात्मक चमत्कार से पूर्ण हैं। मार्मिक उक्तियो, मौलिक कल्पनाओ और प्रसङ्गानुकूल अलङ्कृत शब्दो की योजना भी यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होती है। कवि ने युद्ध-वर्णन मे विशेष रुचि प्रदर्शित की है। काव्यगत विस्तृत युद्ध-वर्णन से प्रकट होता है कि कवि को युद्ध का प्रत्यक्ष अनुभव था। "हरण" का युद्ध-वर्णन मध्यकालीन भारतीय युद्ध-प्रणाली के एक प्रतिनिधि विवरण के रूप मे लिखित है।

सम्पादक ने रुक्मिणी-हरण के सम्पादन मे प्राप्य विभिन्न प्रतियों के पाठान्तर विधिपूर्वक पूर्ण रूप में दिये हैं। साथ ही शब्दार्थ, टिप्प-

णियो और सुविस्तृत परिचयात्मक भूमिका के लेखन मे भी सम्पादक ने पर्याप्त अध्ययन और श्रम किया है जिससे यह प्रकाशन पाठकों के लिये विशेष उपयोगी और रुचिकर हो गया है।

प्रस्तुत प्रकाशन के व्यय का अर्द्धांश भारत सरकार के वैज्ञानिक और सांस्कृतिक मन्त्रालय की ओर से आधुनिक भारतीय भाषा-विकास-योजना—राजस्थानी के अन्तर्गत प्रदान किया गया है तदर्थ हम हार्दिक आभार प्रकट करते हैं।

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर ता० ३० मार्च, १९६४ ई०

मुनि जिनविजय
सम्मान्य सञ्चालक

सम्पादकीय प्रस्तावना

भगवान श्रीकृष्ण के पावन चरित्र मे चन्द-खिलौना लेने की बाल-हठ; माखन-चोरी का बाल-चापल्य; रास-लीला की रसिकता, वशी-वादन और ग्वाल-नृत्य का कला-प्रेम, कुँज-विहार का शृगार; गोप-लीलाओ का माधुर्य; शकटासुर, वत्सासुर, अघासुर, धेनुक, प्रलम्बासुर, बकासुर और कस आदि को मारने की वीरता, श्रीमद्भगवद्गीता का ज्ञान, महाभारत-युद्ध की नीतिज्ञता तथा राजसी ऐश्वर्य आदि लौकिक एव अलौकिक तत्त्व हैं जिनके कारण अनेक कवि-कोविद और कलाकार युग-युगान्तर से प्रभावित होते रहे है। श्रीकृष्ण पूर्णब्रह्म, परमेश्वर और सच्चिदानन्द होते हुए भी मानवी रूप धारण कर विभिन्न लीलाओ का प्रसार करने वाले हैं, आजीवन गृहस्थ-रूप मे रहते हुए भी योगेश्वर हैं और देवराज इन्द्र, जरासध तथा शिशुपालादि को पराजित करने मे समर्थ होते हुए भी नीतिवश रणछोड हैं। ऐसे श्रीकृष्ण की समकक्षता में कोई अन्य चरित्र नही प्रस्तुत किया जा सकता जिसमे सर्वाङ्गीण प्रभाव से युक्त ऐसी विविधता हो।

भारतीय साहित्यिक परम्परा एव संगीत, चित्रकला, नृत्य, शिल्प, स्थापत्य, वेश-भूषा और साज-सज्जा के साथ ही सम्पूर्ण भारतीय दर्शन एव विचार-धारा पर श्रीकृष्ण का प्रभाव स्पष्टरूपेण लक्षित होता है। इस प्रकार श्रीकृष्ण भारतीय जनता के लिए एक अजस्र प्रेरणा-स्रोत बने हुए हैं और लोक-रक्षक के साथ ही लोकरजक रूप मे भी प्रतिष्ठित हैं।

श्रीकृष्ण सम्बन्धी आख्यान की प्राचीनता

श्रीकृष्ण-नाम का प्राचीनतम उल्लेख ऋग्वेद मे प्राप्त होता है। ऋग्वेद मे एक स्तोता विशेष के रूप मे श्रीकृष्ण सोमपान के लिये अश्विनीकुमारो का आह्वान करते हैं और कहते हैं कि अश्विनीकुमार उनका आह्वान सुन कर हर्ष-प्रदायक सोम को पीने हेतु अश्व-सयुक्त रथ मे आरूढ होकर पदार्पण करें।[1]

---

[1] आ मे हवं नासत्याश्विना गच्छतं युवम्। मध्व. सोमस्य पीतये॥ १
इमं मे स्तोममश्विनेम मे शृणुत हवम्। मध्वः सोमस्य पीतये॥ २
अयं वां कृष्णो अश्विना हवते वाजिनीवसू। मध्वः सोमस्य पीतये॥ ३

(शेष अश पृ २ पर)

ऋग्वेद मे श्रीकृष्ण के पुत्र विश्वक् का भी उल्लेख है। अश्विनीकुमारो की स्तुति मे कहा गया है कि उन्होने विश्वक् को पशु के समान खोए हुए पुत्र विष्णायू से मिला दिया।[१]

देवकी-पुत्र कृष्ण का नाम सर्वप्रथम छान्दोग्य उपनिषद् मे प्राप्त होता है। छान्दोग्य उपनिषद् मे प्रकट किया गया है कि घोर आङ्गिरस ने देवकी-पुत्र कृष्ण को विशेष ज्ञान प्रदान किया था।[२] तत्पश्चात् नारायणाथर्वशीर्षोपनिषद् और आत्मबोध उपनिषद् मे देवकी-पुत्र कृष्ण को मधुसूदन अर्थात् विष्णु बताया गया है। श्री आर० जी० भाण्डारकर के मतानुसार वासुदेव सभवत सात्वत जाति के प्रसिद्ध राजकुमार थे और सात्वत जाति मे ही सर्वप्रथम वासुदेव पूज्य हुए।[३]

जैन मतानुसार वासुदेव, बलदेव और प्रतिवासुदेव मे से प्रत्येक की सख्या ९ है।[४] जेम्स हेस्टिंग्ज के मतानुसार वासुदेव और कृष्ण मूलत भिन्न थे और कालान्तर मे एक अवतार के रूप में पूज्य हुए। वासुदेव का उल्लेख सर्व प्रथम तैत्तिरीयोपनिषद् मे नारायण और विष्णु के रूप मे प्राप्त होता है।[५] ग्रियर्सन,

---

शृणुत जरितुर्हवं कृष्णस्य स्तुवतो नरा। मध्व सोमस्य पीतये ॥ ४
छर्दिर्यन्तमदाभ्य विप्राय स्तुवते नरा। मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ५
गच्छत दाशुषो गृहमित्था स्तुवतो अश्विना। मध्वः सोमस्य पीतये ॥ ६
युञ्जाथां रासभ रथे वीड्वङ्गे वृषण्वसू। मध्व सोमस्य पीतये ॥ ७
—ऋग्वेद, मण्डल ८वा, सूक्त ८५वा, प्रका गायत्री तपोभूमि, मथुरा।

[१] अवस्यते स्तुवते कृष्णियाय ऋजूयते नासत्या शचीभिः।
पशुन नष्टमिव दर्शनाय विष्णाप्व ददथुर्विश्वकाय ॥ २३
—ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त ११६, प्रका गायत्री तपोभूमि, मथुरा।

[२] छान्दोग्य उपनिषद् ३।१७।४-६।

[३] . it is possible that Vāsudeva was a famous prince of the sātvata race and on his death was deified and worshipped by his clan, and a body of doctrines grew up in connection with that worship and the religion spread from that clan to other classes of the Indian people —Report on the Search for Sanskrit Mss 1883-84, Bombay 1887, p 74

[४] आचार्य हेमचन्द्र, त्रिशष्टिशलाकापुरुषचरित्रम्, जैन आत्मानन्दसभा, भावनगर।

[५] We conclude that Vāsudeva, the God, and Krsna the sage, were originally, different from one another, and only afterwards became, by a syncretism of beliefs, one deity, thus giving rise to, or bringing to perfection, a theory of incarnation
—Encyclopaedia of Religion and Ethics, Vol 7 T & T. Clark, Edinburgh, p. 195.

केनेडी और वेबर आदि विद्वानो ने अनुमान किया है कि क्राइस्ट के बाल-चरित के अनुकरण मे ही गोपाल कृष्ण का बाल-चरित निरूपित किया गया है ।[१]

देवकी-पुत्र वासुदेव श्रीकृष्ण की महत्ता सर्वप्रथम महाभारत से प्रकट होती है । महाभारत-युद्ध के प्रसङ्ग मे अर्जुन इन्द्र की अपेक्षा श्रीकृष्ण के सहयोग को अधिक महत्त्व प्रदान करते हैं । अर्जुन श्रीकृष्ण को इन्द्र से अधिक पराक्रमी मानते हुए कहते हैं कि श्रीकृष्ण ने भोज राजाओ को नष्ट किया, रुक्मिणी का हरण किया, नगजित के पुत्रो को पराजित किया, राजा पाण्ड्य का सहार किया, काशी नगरी का उद्धार किया, निपादराज एकलव्य का वध किया और उग्रसेन के पुत्र सुनाम को मारा, आदि । श्रीकृष्ण ने बाल्यावस्था मे ही हयराज और अन्य राक्षसो को मारा, जल-देवता को परास्त किया तथा इन्द्र के नन्दनवन से सत्यभामा की प्रसन्नता के लिए पारिजात ले आये ।[२] इस प्रकार महाभारत मे श्रीकृष्ण की वीरता का विशेष विवरण प्राप्त होता है ।

श्री कृष्ण के गोपाल रूप का सुविस्तृत वर्णन श्रीमद्भागवत मे प्राप्त होता है । श्रीमद्भागवत महापुराण मे श्रीकृष्ण की बाल-लीलाओ को विशेष महत्त्व दिया गया है । साथ ही श्रीकृष्ण के उत्तरकालीन ऐश्वर्यमय स्वरूप को भी यथाप्रसङ्ग चित्रित किया गया है । इसलिये श्रीमद्भागवत के कृष्ण पूर्ण कृष्ण कहे जाते हैं । श्रीमद्भागवत मे ऋग्वेद के स्तोता कृष्ण, महाभारत के राजनीतिज्ञ कृष्ण और गोपाल कृष्ण, तीनो ही प्रतिनिधि रूपो का समन्वित चित्रण हुआ है, जिससे श्रीमद्भागवत मे वर्णित श्रीकृष्ण का चरित्र विशेष लोकप्रिय और उपास्य हुआ है ।

पुरातात्त्विक दृष्टि से श्रीकृष्णोपासना का प्राचीनतम प्रमाण माध्यमिका (नगरी, चित्तौड के समीप) के अवशेषो से प्राप्त होता है ।[3] तदुपरान्त मथुरा से प्राप्त एक शिलामूर्तिपट्ट से श्रीकृष्ण-चरित्र का प्रमाण मिलता है । यह पट्ट अनुमानतः प्रथम शताब्दी ईस्वी का है और इसमे वसुदेव को नवजात कृष्ण के साथ यमुना पार करते हुए दिखाया गया है ।[४] मथुरा से ही एक अन्य शिला-पट्ट प्राप्त हुआ है जिसमे कालियदमन का प्रसङ्ग उत्कीर्ण है ।[५]

---

[१] डॉ० व्रजेश्वर वर्मा, कृष्ण-भक्ति साहित्य, हिन्दी साहित्य भाग २, भारतीय हिन्दी परिषद्, प्रयाग, पृ० ३३५ ।

[२] महाभारत, उद्योगपर्व ।

[३] डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल का निबन्ध, राजस्थान में वासुदेव की उपासना, शोध पत्रिका, उदयपुर ।

[४] इण्डियन आर्कियोलोजीकल सर्वे रिपोर्ट, वर्ष १९२५-२६ ।

[५] पुरातत्त्व-संग्रहालय, मथुरा मे सुरक्षित ।

राजस्थान मे मण्डोर (जोधपुर की प्राचीन राजधानी) से उपलब्ध द्वारपट्टों पर श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन-धारण, माखन-चोरी, शकट-भञ्जन और कालियदमन के प्रसङ्ग उत्कीर्ण किये हुए हैं जिनका समय ४ थी-५वी शताब्दी ईस्वी है।[१] राजस्थान मे सूरतगढ (बीकानेर) से मिट्टी की पट्टिकाएँ प्राप्त हुई है जिन पर गोवर्द्धन-धारण और दान-लीलाएँ प्रदर्शित हैं।[२] इसी प्रकार दक्षिण-भारत मे बादामी गुफाओं मे श्रीकृष्ण-जन्म, पूतना-वध, शकट-भञ्जन, प्रलंब-वध, धेनुक-वध, कस वध आदि के दृश्य उपस्थित किये गये हैं जिनका समय ६ठी-७वी शताब्दी माना गया है।[3]

श्रीकृष्ण का विविध काव्यो मे निरूपण भी प्रथम शताब्दी ई० से ही प्राप्त होता है। सर्व प्रथम अश्वघोष (प्रथम शताब्दी ई०) कृत संस्कृत काव्य 'बुद्ध-चरित'[४] और प्राकृतभाषा-निबद्ध हाल सातवाहन की 'गाहासतसई' मे श्रीकृष्ण-लीलाओ की सरस झाँकियाँ दी गई है। दक्षिण भारत मे आलवार सन्तो ने ५वी से ९वी शताब्दी ई० पर्यन्त श्रीकृष्ण सम्बन्धी अनेक रचनाएँ प्रस्तुत की। राजा यशोवर्मा (८वी शताब्दी ई०) के सभा-कवि वाक्पतिराज कृत प्राकृत महाकाव्य 'गउडवहो' मे भी श्रीकृष्ण की स्तुति है।[५] हेमचद्राचार्य (१२वी शताब्दी ई०) ने भी अपने सुप्रसिद्ध व्याकरण-ग्रन्थ मे राधा-कृष्ण सम्बन्धी कतिपय पद्य उद्-धृत किये हैं। कालान्तर मे श्रीकृष्ण सम्बन्धी काव्यो मे राधा-चरित्र को क्रमश अधिक महत्त्व का स्थान मिलता गया। जयदेव कृत 'गीत-गोविन्द' राधा-कृष्ण की शृङ्गारिक लीलाओं से पूर्ण प्रथम महत्त्वशाली काव्य है, जिसका प्रभाव अनेक काव्यो पर लक्षित होता है।

---

[१] इण्डियन आर्कियोलोजीकल सर्वे रिपोर्ट वर्ष १९०५-६।

[२] पुरातत्त्व सग्रहालय, बीकानेर में सुरक्षित।

[3] आर्कियालाजिकल मेमॉयर्स, वर्ष १९२८-२९।

[४] बुद्धचरित् १-५।

[५] सो जयइ जामइल्लागभाण-मुहलालि-वलय-परिआल।
लच्छि-निवेसन्तेउर-वइव जो वहइ वण-माल ॥२०॥
बालत्तणम्मि हरिणो जयइ जसो आएँ चुम्बिय वयण।
पडिसिद्ध-नाहि-मगुद्ध-णिग्गय पुण्डरीयव ॥२१॥
महरेहा राहा-कारणाओ करुणं हरन्तु वो सरसा।
पच्छत्थलम्मि कोत्थुह-किरणा अन्तीओ कण्हस्स ॥२२॥
त णमह जेण अज्जवि विलूण कण्ठस्स राहुणो वलई।
दुस्समनिच्चरियचिय अमूल-लहुएहि सासेंहि ॥२३॥—मंगलाचरण

मध्यकालीन भक्ति-भावना और श्रीकृष्ण

मुस्लिम सेना-नायको ने भारतवर्ष पर आक्रमण कर अधिकाश भूमि पर बलपूर्वक अपनी राज्य-सत्ता स्थापित कर ली तो जनता मे घोर नैराश्य का वातावरण छा गया। मुस्लिम नायको का शासन इस्लाम के सिद्धान्तानुसार तलवार के बल पर चलने लगा और हिन्दू-जनता के धार्मिक कृत्यो तथा विचारो पर कड़े प्रतिबन्ध लगा दिये गये। हिन्दू मन्दिरो और अन्य धार्मिक स्थानो को तोड कर मसजिदो मे परिवर्तित किया जाने लगा, हिन्दू तीर्थों पर भारी कर लगा दिये गये, हिन्दुओ को बलात् इस्लाम की दीक्षा दी जाने लगी और जिन हिन्दुओ ने इस्लाम को अगीकार नही किया उन्हे जजिया देने के लिए विवश किया गया। हिन्दू समर्थ होकर किसी प्रकार का विद्रोह न करें इसलिये उनके पाम किसी प्रकार की विशेष सम्पत्ति नही रहने दी गई और न आय के विशेष स्रोत ही उनके पास छोड़े गये। उथल-पुथल के उस युग मे हिन्दू जनता ने कभी इस्लामी शासन के अत्याचारो के विरुद्ध पुकार की तो सामूहिक रूप मे उनके गाँव जला दिये गये और आबालवृद्ध नर-नारियो को अनेक प्रकार की यातनाओ के साथ कत्ल का भी सामना करना पडा। ऐसे हृदय-द्रावक उदाहरणो से हमारा मध्यकालीन इतिहास भरा पडा है।

इस्लामी शासन के ऐसे घोर आपत्तिकाल मे अनेक राजाओ ने भी मुसलमान बादशाहो की अधीनता स्वीकार करली। ऐसी अवस्था मे धर्म-प्राण जनता के लिए केवल मात्र ईश्वर का ही आश्रय रह गया। अवश्य ही राजस्थान की वीर जनता कतिपय स्वाधीनता-प्रेमी और भारतीय मान-मर्यादा के रक्षक राजपूत राजाओ के नेतृत्व मे इस्लामी शासन के विरुद्ध अन्त तक सघर्षरत रही। भारतीय धर्म और अस्तित्व की रक्षा करने वाले इन राजपूत राजाओ ने धर्माचार्यों को विशेष प्रोत्साहन तथा प्रश्रय प्रदान किया, जिसके परिणामस्वरूप देश की धार्मिक प्रवृत्तियाँ उस घोर विनाशकारी युग मे भी सुरक्षित रह सकी। इसी समय मे वल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य आदि ने उत्तरी भारत मे अपने उपासना-केन्द्र स्थापित किये और इन्होने स्व-सिद्धान्तानुसार पूर्णब्रह्म परमेश्वर का लोकरक्षक और लोकरजक रूप जनता के समक्ष प्रस्तुत कर उसे आश्वस्त करने के सत्प्रयत्न किये।

भारतीय पुराण-ग्रन्थो मे राम और कृष्णावतार की महत्ता सम्यक् रूपेण प्रतिपादित हो चुकी थी। मध्यकालीन भारतीय धर्माचार्यों ने भारतीय सस्कृति की रक्षा हेतु पुराणो से मुख्यत मर्यादा-पुरुषोत्तम राम और पूर्णब्रह्म श्रीकृष्ण के

लोकानुरजनकारी तथा लोकरक्षक रूपो को ग्रहण करते हुए इनकी उपासना की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया ।

मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीराम ने अत्याचारी रावण और अन्य दानवो का सहार कर ऋषि-मुनियो के यज्ञ-यागादि धार्मिक कृत्यो को निर्विघ्नतापूर्वक सम्पादित करने की व्यवस्था कर धर्मप्राण जनता को अभय कर दिया । इसी प्रकार श्रीकृष्ण ने शकटासुर, वत्सासुर, अघासुर, प्रलम्बासुर, कसासुर, शङ्खासुर, भौमासुर, जरासन्ध और शिशुपालादि का सहार कर धर्म की पुन सस्थापना की थी । श्रीकृष्ण ने असुरो का सहार कर अपने लोक-रक्षक रूप को प्रकट करने के साथ ही रासलीलादि मे लोकरजनकारी रूप भी प्रदर्शित किया । प्रसगानुसार श्रीकृष्ण द्वारा देवराज इन्द्र, ब्रह्मा और वरुणादि का भी दर्प चूर्ण किया गया तो श्रीकृष्ण का देवाधिदेव परमब्रह्म पूर्णावतार का स्वरूप भी प्रतिष्ठित हो गया ।

रामानुज, वल्लभ, मध्व और निम्बार्कादि आचार्यो ने अपने सिद्धान्त-ग्रथो की रचनाएँ सस्कृत मे की थी । आचार्यों के सिद्धान्तो का जनता मे प्रसार करने का महत् कार्य सम्प्रदायगत शिष्य-प्रशिष्यो और कवियो ने सम्पादित किया । उदाहरणरूपेण रामभक्त कवियो में अग्रदास तथा तुलसीदास और कृष्ण-भक्त कवियो मे सूरदास, नन्ददास, कुभनदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, चतुर्भुजदास, छीतस्वामी और गोविन्ददास आदि ने अपनी सरस रचनाओ मे सम्प्रदायगत आचार्य-सिद्धान्तो का सरल जन-भाषाओ में विवेचन किया । साथ ही मैथिल कवि विद्यापति, राजस्थान की मीरा और गुजरात के नरसी मेहता प्रभृति कवियो एव कवयित्रियो ने ईश्वर के लोकरक्षक और लोकरजक रूप की झाँकी अपनी परम प्रभावशालिनी रचनाओ द्वारा जनता मे प्रसारित की ।

इसी काल मे भारतवर्ष मे ऐसे सम्प्रदाय भी प्रचलित हुए जिनमे हिन्दू और इस्लाम दोनो ही सस्कृतियो के समन्वय के प्रयास किये गये । असिधारी एव अश्वारोही कट्टर मुस्लिम आक्रान्ताओ के साथ ही कतिपय शान्त सूफी फकीरो का भी भारतवर्ष में प्रवेश हुआ । इन्होने विभिन्न भारतीय प्रेमाख्यानों का आधार ले कर भारतीय भाषा-शैली में ही अपने साम्प्रदायिक काव्य-ग्रन्थो की रचनाएँ की । ऐसे सूफ़ी कवियो में 'चन्दायन' (१३७९ ई०) के कर्ता मुल्ला दाउद, 'मृगावती' (१५०३ ई०) के कर्ता शेख कुतबन, 'पद्मावत' (१५२० ई०) के कर्ता मलिक मुहम्मद जायसी, 'मधुमालती' (१५४५ ई०) के कर्ता मझन, 'चित्रावली' (१६१३ ई०) के कर्ता शेख उसमान आदि विशेष उल्लेखनीय हैं ।

भारतवर्ष में अनेक सन्तों ने निर्गुण और निराकार ब्रह्म की उपासना पर बल दिया तथा मूर्तिपूजा, तीर्थ, व्रत, बलिदान, रोजा, नमाज आदि का विरोध

किया। ऐसे सन्त-सम्प्रदाय ज्ञानमार्गी निर्गुणोपासक सम्प्रदाय कहे गये और इनमें भक्ति की अपेक्षा ज्ञान का अधिक महत्त्व माना गया। राम और कृष्ण के व्यापक प्रभाव से निर्गुण सम्प्रदाय भी वचित न रहे, किन्तु इन्होने राम और कृष्ण की महत्ता निर्गुण ब्रह्म के रूप मे अपने साम्प्रदायिक दृष्टिकोण के अनुसार ही प्रतिपादित की। निर्गुणमार्गी सन्त कवियो पर रामानन्दाचार्य की विचारधारा का विशेष प्रभाव लक्षित होता है, जिन्होने अनेक प्रकार के जातिगत बन्धनो को शिथिल कर भक्तिमार्ग को प्रशस्त बनाया। रामानन्द के विलक्षण व्यक्तित्व से प्रभावित हो कर अनेक जातियो के व्यक्ति उनके शिष्य-प्रशिष्य बन गये जिनमें कबीर प्रमुख माने जाते हैं। अन्य निर्गुणोपासक सन्तो मे नानक, रज्जब, दादू, रैदास आदि भारतीय जनता में विशेष लोकप्रिय हैं।

मुस्लिम शासन-काल मे विभिन्न प्रकार के जैन सम्प्रदायो का भी विकास हुआ। विभिन्न राजपूत राजाओ के मन्त्रियो, प्रबन्धको और मुत्सद्दियो मे जैन-धर्मानुयायी वैश्यो का आधिक्य था, जिन्होने अनेक कलापूर्ण जैन मन्दिरो, उपाश्रयो और अन्य धार्मिक स्थानो का निर्माण करवाया। इस प्रकार प्रोत्साहन प्राप्त कर अनेक जैन सन्तो, साध्वियो और अन्य जैनियो ने प्रचुर परिमाण मे जैन सिद्धान्तानुसार धार्मिक साहित्य की रचनाएँ की। जैन धर्म के प्रधान केन्द्र राजस्थान और गुजरात के तत्कालीन समृद्ध नगरो मे स्थापित हुए। तदनुसार जैन साहित्य भी राजस्थानी और गुजराती भाषाओ मे अधिक प्राप्त होता है। जैन साहित्य मे भी राम और कृष्ण सम्बन्धी चरित्रो का महत्त्वपूर्ण स्थान है एवं अनेक जैन रामायणें और श्रीकृष्ण सम्बन्धी काव्य उपलब्ध होते हैं। जैन साहित्यकारो मे देवसेन (९९० वि०स०, ९३३ ई० सन्), जिनदत्तसूरि (११५० वि० स०, १०९३ ई० सन्), शालिभद्रसूरि (१२४० वि० स०, ११८३ ई० सन्) कुशललाभ (१५८०-१६१७ वि० स०, १५२३-१५६० ई० सन्), हेमरतन (१६४५ वि० स०, १५८८ ई० सन्), मतिसुन्दर (१७२४वि० सं०, १६६७ ई० सन्) और उदैचद भण्डारी (१८६० वि० स०, १८०३ ई० सन्) आदि प्रमुख हैं।

इस प्रकार मुस्लिम शासन-काल मे एक विशेष प्रकार के भक्ति-युग का आविर्भाव हुआ और नाना प्रकार के सन्त-सम्प्रदायो के अन्तर्गत अनेक भक्त कवियो और कवयित्रियो ने भक्ति विषयक साहित्य का प्रचुर परिमाण मे निर्माण किया। भारतवर्ष मे श्रीकृष्ण-भक्ति का प्रधान केन्द्र श्रीकृष्ण की प्रधान लीला-भूमि व्रजप्रदेश मे स्थापित हुआ किन्तु कालान्तर मे मुगल सम्राट औरगजेब के अत्याचारो के कारण मेवाड मे नाथद्वारा और कांकरौली नामक स्थानो

मे क्रमश' श्रीकृष्ण के प्रधान स्वरूपो, श्रीनाथजी और द्वारिकाधीशजी की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित की गईं। श्रीकृष्णोपासना से सम्बन्धित सम्प्रदायो में वल्लभाचार्य का पुष्टिमार्ग अथवा वल्लभ सम्प्रदाय, चैतन्य का गौडीय सम्प्रदाय, गोस्वामी हित-हरिवश का राधावल्लभ सम्प्रदाय और स्वामी हरिदास का सखी सम्प्रदाय विशेष उल्लेखनीय हैं। उक्त सम्प्रदायो मे वल्लभाचार्य का पुष्टिमार्गीय शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय प्रमुख है। शुद्धाद्वैत सिद्धान्त में माया के स्थान पर भक्ति की प्रतिष्ठा हुई और इस प्रकार मानो अद्वैत को शुद्ध किया गया, तदनुसार यह शुद्धाद्वैत सम्प्रदाय कहा गया। शुद्धाद्वैत सिद्धान्तानुसार भक्ति ज्ञान से श्रेष्ठ है क्योकि ज्ञान से ब्रह्म का केवल ज्ञान प्राप्त हो सकता है और भक्ति से ब्रह्म की अनुभूति सभव है। शुद्धाद्वैत मतानुसार जीव और जगत् ब्रह्म के ही चित् और सत् अग हैं तथा ब्रह्म के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु का अस्तित्व नही है। प्रकृति, सुर, नर, असुर आदि सभी ब्रह्म के ही रूपान्तर हैं।

भक्ति-भावना श्रीकृष्ण के अनुग्रह पर निर्भर रहती है। इस अनुग्रह को 'पुष्टि' कहा गया जिससे इस सम्प्रदाय का नाम भी पुष्टि सम्प्रदाय के रूप में प्रसिद्ध हुआ। आचार्य वल्लभ के सिद्धान्तानुसार पुष्टि चार कोटियो की है—

१ **प्रवाह पुष्टि**— सांसारिक सुखोपभोगो में लिप्त रहते हुए भी श्रीकृष्ण की भक्ति हृदय में प्रवाहित होती रहे।

२ **मर्यादा पुष्टि**— सासारिक सुखोपभोगो से विरक्ति होते हुए श्रीकृष्ण की भक्ति हो।

३ **पुष्ट पुष्टि**— श्रीकृष्ण-भक्ति की साधना उत्तरोत्तर अधिक होती जावे।

४ **शुद्ध पुष्टि**— प्रेम और अनुराग के आधार पर श्रीकृष्ण की अनुभूति भक्त-हृदय मे होना।

श्रीकृष्ण-भक्ति मूलत माधुर्यभाव से युक्त है जिसका आधार श्रीमद्भागवत महापुराण है। श्री वल्लभाचार्य और अन्य कृष्ण-भक्ति से सम्बन्धित आचार्यो ने श्रीमद्भागवत के आधार पर ही अपने सिद्धान्तो का प्रतिपादन किया। श्रीमद्भागवत सम्पूर्ण वैष्णव धर्म के पुनरुत्थान मे विशेष सहायक सिद्ध हुई। तदनुसार श्रीकृष्ण-भक्ति विषयक काव्यो का मूल स्रोत भी भागवत ही हुई।

कालान्तर में सस्कृत, राजस्थानी, गुजराती, व्रज, खडी बोली, बगला, मराठी आदि अनेक भाषाओ मे कवि-कोविदो ने भागवत महापुराण से प्रेरित हो कर विविध विषयक साहित्यिक रचनाएँ की, जिनका सम्बन्धित जनता मे विशेष

प्रसार हुआ। भागवत महापुराण अद्यावधि कवि-कोविदो के साथ ही भक्त-जनो और सुरसज्ञों का परम प्रिय एवं उपास्य ग्रन्थ बना हुआ जीवन मे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के दाता रूप मे सुप्रतिष्ठित है।

राजस्थानी साहित्य और श्रीकृष्ण-चरित्र

हमारे देश मे कालक्रमानुसार क्रमश: वैदिक (छान्दस्), सस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश नामक प्राचीन भाषाओ का प्रभुत्व रहा। राजस्थानी भारतीय आर्य-भाषा-परिवार की एक आधुनिक भाषा मानी गई है। राजस्थानी भाषा का उद्भव राजस्थान मे प्रचलित नागर अपभ्रश से हुआ है।[1]

राजस्थानी भाषा के उद्भव-काल के विपय मे विभिन्न मत प्रकट किये गये हैं। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने राजस्थानी और अन्य भारतीय आधुनिक भाषाओ का उद्भव-काल ७६० ई० (वि०सं० ८१७) निर्धारित किया है।[2] डॉ० मोतीलालजी मेनारिया के मतानुसार राजस्थानी भापा-साहित्य का आरम्भकाल वि० स० १०४५ है[3] और श्री नरोत्तमदासजी स्वामी ने उद्भव-काल वि० स० ११५० लिखा है।[4]

राजस्थानी भाषा-साहित्य की प्राचीनतम रचना के रूप मे पूषी अथवा पुष्य कवि द्वारा वि० स० ७०० मे रचित अलङ्कार-ग्रंथ का उल्लेख मात्र प्राप्त होता है।[5] यह कृति अद्यावधि अप्राप्य है अतएव इसके विषय मे निश्चितरूपेण मत नही व्यक्त किया जा सकता। इसी प्रकार चित्तौड-नरेश खूमाण द्वितीय (वि० स० ८७०-६००) कृत 'खूमाण-रासो' का उल्लेख भी प्राप्त होता है किन्तु यह ग्रथ भी प्राप्य नही है।[6] १८वी सदी मे दौलतविजय, अपर नाम दलपत-विजय रचित 'खूमाण-रासो' और उक्त खूमाण कृत 'खूमाण-रासो' को एक ही कृति मान लेने के भ्रम के कारण विद्वानो मे एक विवाद अवश्य उठ खड़ा हो गया है।[7]

---

[1] राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति और विकास के विषय में विशेष विवरण 'राजस्थानी भाषा की रूपरेखा', हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस, पृ० ७–२३ पर द्रष्टव्य है।

[2] प्रस्तावना, हिन्दी काव्य-धारा, किताब महल, प्रयाग, पृ० १२।

[3] राजस्थानी भाषा और साहित्य, हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग, पृ० १०३।

[4] राजस्थानी भाषा और साहित्य, नवयुग ग्रन्थ कुटीर, बीकानेर, पृ० २२।

[5] (क) डॉ० रामकुमार वर्मा, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, रामनारायण-लाल, इलाहाबाद, १९५८, पृ० ४९।
(ख) प्रो० उदयसिंह भटनागर, हिन्दी साहित्य, भाग २, भारतीय हिन्दी परिषद्, प्रयाग, १९५९ ई०, पृ० ६२०।

[6] शिवसिंह सरोज, सातवां सस्करण, १९२६, पृ० ९।

[7] (क) रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, सातवां सस्करण, स० २००८, पृ० ३३।
(ख) डॉ० रामकुमार वर्मा, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, रामनारायणलाल, इलाहाबाद, १९५८, पृ० १४४।

इस प्रकार राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति के सम्बन्ध मे उक्त ग्रथो को प्रमाण-स्वरूप नही प्रस्तुत किया जा सकता।

उद्योतनसूरि द्वारा वि० स० ८३५ मे लिखे गये 'कुवलयमाला' कथा-ग्रन्थ से राजस्थानी भाषा के मरुदेशीय रूप का उल्लेख नाम सहित इस प्रकार प्राप्त होता है—

"वके जडे य जड्डे वहु भोइ कठि(ढि)ण-पीण सू(थू)णगे ।
अप्पा तुप्पा भणिरे अह पेच्छइ मारुए तत्तो ॥"[१]

उक्त प्रमाण से प्रकट है कि राजस्थानी भाषा का उद्भव वि० स० ८३५ मे हो चुका था और उसके मरुदेशीय रूप की प्रतिष्ठा भी हो चुकी थी। इसीलिये उद्योतनसूरि ने देश की तत्कालीन अठारह उल्लेखनीय प्रमुख भाषाओ मे मरुदेशीय भाषा की गणना की। इस प्रकार राजस्थानी भाषा-साहित्य का उद्भवकाल नवमी शताब्दी विक्रमीय मान लेने मे कोई आपत्ति नही होनी चाहिए।

९वी शताब्दी से आधुनिक काल तक राजस्थानी भाषा-साहित्य का निर्माण निरन्तर होता रहा है जिससे इस साहित्य की सम्पन्नता स्वत. प्रकट होती है। राजस्थान मे ब्राह्मण पण्डितो, राजपूतो, चारणो, मोतीसरो, ब्रह्मभट्टो, ढाढ़ियो, जैन साधु-साध्वियो, यतियो, निर्गुणी सन्तो आदि साहित्यानुरागियो द्वारा प्रचुर परिमाण मे राजस्थानी भाषा-साहित्य का निर्माण, सरक्षण, सवृद्धि, अनुवाद, टीका आदि कार्य सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ है। राजस्थानी भाषा-साहित्य प्राचीनता, विषयो की विविधता, रचना-शैलियो की अनेक रूपता, पद्य के साथ ही गद्य की प्रचुरता और उत्कृष्टता की दृष्टि से विशेष महत्त्व का माना गया है, यथा—

"भक्ति-साहित्य हमे प्रत्येक प्रान्त मे मिलता है। सभी स्थानो के कवियों ने अपने ढंग से राधा और कृष्ण के गीतो का गान किया है, किन्तु राजस्थान ने अपने रक्त से जिस साहित्य का निर्माण किया है, वह अद्वितीय है। और उसका कारण भी है। राजस्थानी कवियो ने जीवन की कठोर वास्तविकताओ का स्वय सामना करते हुए युद्ध के नक्कारे की ध्वनि के साथ स्वभावत अयत्नज काव्य-गान किया। उन्होने अपने सामने साक्षात् शिव के ताण्डव की तरह प्रकृति का नृत्य देखा था। क्या आज कोई अपनी कल्पना द्वारा उस कोटि के काव्य की रचना कर सकता है? राजस्थानी भाषा

---

[१] (क) कुवलय माला कथा, सिंघी जैन ग्रन्थमाला, स०, पद्मश्री मुनि जिनविजयजी, भारतीय विद्या भवन, बम्बई।

(ख) अपभ्रंशकाव्यत्रयी, सं०, लालचन्द्र भगवानदास गांधी, गायकवाड़ ओरिएन्टल सिरीज़, ओरिएन्टल इस्टीट्यूट, बड़ोदा, पृ. ९२–९३।

के प्रत्येक दोहे मे जो वीरत्व का भावना है, और उमग है वह राजस्थान को मौलिक निधि है और समस्त भारतवर्ष के गौरव का विषय है ।"

—विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ।[1]

"राजस्थानी वीरो की भाषा है; राजस्थानी साहित्य वीर-साहित्य है । ससार के साहित्य मे उसका निराला स्थान है। वर्तमान काल के भारतीय नवयुवको के लिए तो उसका अध्ययन अनिवार्य होना चाहिए । इस प्राण भरे साहित्य और उसकी भाषा के उद्धार का कार्य अत्यन्त आवश्यक है । . मैं उस दिन की प्रतीक्षा मे हू जब हिन्दू विश्वविद्यालय मे राजस्थानी का सर्वांगपूर्ण विभाग स्थापित हो जायेगा जिसमे राजस्थानी भाषा और साहित्य की खोज तथा अध्ययन का पूर्ण प्रबन्ध होगा ।"

—महामना प० मदनमोहन मालवीय ।[2]

"साहित्य की दृष्टि से भी चारणी कृतियाँ बडी महत्त्वपूर्ण है । उनका अपना साहित्यिक मूल्य है और कुल मिला कर वे ऐसी साहित्यिक निधियाँ है जो अधिक प्रकाश मे आने पर आधुनिक भारतीय भाषाओ के साहित्य मे अवश्य ही अत्यन्त महत्त्व का स्थान प्राप्त करेगी ।"

—श्री आशुतोष मुकर्जी ।[3]

राजस्थानी भाषा-साहित्य का वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है—

१ जैन साहित्य, २ डिंगल साहित्य, ३. पिंगल साहित्य, ४ पौराणिक साहित्य, ५. भक्ति एव सन्त साहित्य, ६. लोक-साहित्य और ७ आधुनिक साहित्य ।

राजस्थानी जैन साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ है प्राचीनता, पद्य-रूपो की विविधता, गद्य की प्रचुरता और जीवन को उच्च ध्येय की ओर अग्रसर करने की क्षमता । जैन साहित्य के प्रमुख प्रणेता सामान्य सासारिक जीव नही, वरन् जीवन के विस्तृत अनुभवो से युक्त और साधना के उच्च धरातल पर पहुँचे हुए ज्ञानी महात्मा रहे हैं, अतएव जैन साहित्य शुद्ध साहित्यिक तत्त्वो से युक्त होता हुआ भी उपदेश-तत्त्वो से पूर्ण है ।

जैन साहित्य केवल धार्मिक विषयो पर ही नही रचा गया, वरन् वैद्यक,

---

[1] (क) मॉडर्न रिव्यू, कलकत्ता, सितम्बर, १९३८, जिल्द ६४, पृ० ७१० ।
(ख) नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वाराणसी, भाग ४५, अक ३, कार्तिक स० १९९७, पृ० २२८-३० ।

[2] ठाकुर रार्मासहजी का अध्यक्षीय अभिभाषण, अखिल भारतीय राजस्थानी साहित्य सम्मेलन, दिनाजपुर, वैशाख स० २००१, पृ० ११-१२ ।

[3] ठाकुर रार्मासहजी का अध्यक्षीय अभिभाषण, अखिल भारतीय राजस्थानी साहित्य सम्मेलन, दिनाजपुर, वैशाख, स० २००१, पृ० ११-१२ ।

कोष, नगर-वर्णन, काव्य-शास्त्र, इतिहास, भूगोल, वास्तुविद्या आदि अनेक विषयो पर गभीरता और अधिकारपूर्वक लिखा गया है।

साहित्यिक विधाओ की दृष्टि से जैन साहित्य के अन्तर्गत प्रबन्ध, कथा, रास, चउपई, फाग, सवाद, गीत, धमाल, दूहा, गजल, स्तवन, सज्भाय, मंगल, पट्टावली, टीका, टब्बा और बालावबोध आदि रूप सुविकसित रूप में प्राप्त होते है।

जैन साहित्यकारो की रचनाओं मे शालिभद्रसूरि का 'भरत-बाहुबलि रास' (स० ११८६), कुशललाभ की 'ढोला-मारू चउपई' और 'माधवानल कामकन्दला' (१६वी सदी), समयसुन्दर (सं० १५८०–१६४२) कृत 'सीताराम चउपई', और जीतमलजी का 'भगवती सूत्र' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं।

जैन मतानुसार २२ वे तीर्थंकर नेमिनाथ (अपर नाम रिष्टनेमि अथवा रिट्ठनेमि) और गजसुकुमाल श्रीकृष्ण के क्रमश चचेरे और सहोदर भाई माने गये हैं इसलिये नेमिनाथ और गजसुकुमाल सम्बन्धी विभिन्न कृतियो मे श्रीकृष्ण का चरित्र भी प्रसगानुसार अकित हुआ है।

नेमिनाथ यादवकुल मे परम शक्तिशाली थे। इनका विवाह राजकुमारी राजुलदेवी से निश्चित हुआ था किन्तु विवाह के अवसर पर भोज्य पदार्थों के लिए वध किए जाने वाले जीवो का आर्त क्रन्दन सुन कर नेमिनाथ मे वैराग्य उत्पन्न हो गया और उन्होने राजसी सुख-वैभव का पूर्णरूपेण त्याग कर दिया। राजुलदेवी ने भी साथ ही वैराग्य धारण कर लिया। नेमिनाथ और राजुलदेवी सम्बन्धी अनेक जैन-रचनाएँ उपलब्ध होती है किन्तु इनमे श्रीकृष्ण का चरित्र अविकसित ही रहा है।[1]

गजसुकुमाल ने नेमिनाथ से प्रभावित होकर बाल्यकाल मे ही वैराग्य को धारण कर लिया था।[2] गजसुकुमाल हाथी के बच्चे की भाँति कोमल और सुगढ़

---

[1] क नेमिनाथ चतुष्पादिका, विनयचन्द्रसूरि (वि स १३२५) कृत, पृ. ५।
ख नेमिनाथ रास पुण्यरत्न कृत ले का वि. स १३३६, पृ २४३।
ग नेमिफाग, वि स १६६५, गजसागर सूरि शिष्य कृत पृ ४०३।
घ नेमिरास, वि स. १६७५, धर्मकीर्ति कृत, पृ ४६१।
ङ नेमिराजुल बारामासा, वि स १६८६, लाभोदय कृत, पृ ५३४।
जैन गुजर कविओ, भाग १, मो द. देसाई, जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेंस, बम्बई।
च नेमिनाथ सिलोका, उदयरतन कृत ले. का. स. १८७१, ग्रन्थाक ४८३७ रा.प्रा.वि.प्र

[2] क गजसुकुमार संधि, वि स १५५३ मूलप्रभ कृत पृ ६५।
ख गजसुकुमार रास, वि. स० १६१७ लावण्यकीर्ति कृत पृ. २१७
ग गजसुकुमार रास, वि सं १६६६, पृ. ४०८।—जैन गुर्जर कविओ; भाग १, मो. द देसाई, जैन श्वेताम्बर कान्फ्रेंस, बम्बई।

थे और इसलिए इनका यह नाम प्रसिद्ध हुआ। गजसुकुमाल सम्बन्धी रचनाओं मे श्रीकृष्ण के राजदरबार और ऐश्वर्य का वर्णन विशेष हुआ है।

जैन साहित्यकारो द्वारा हरिवंश-पुराण, पाण्डव-चरित्र, प्रद्युम्न-चरित्र और द्रौपदी-रास आदि ग्रन्थ भी लिखे गये जिनमे श्रीकृष्ण सम्बन्धी चरित्र का निरूपण हुआ है। ऐसी जैन रचनाओ मे निम्न लिखित रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं—

धवल कृत हरिवंश-पुराण (र. का. ११वी शताब्दी वि०), रविसागर कृत प्रद्युम्न-चरित्र (र. का. १२०७ वि), विनयचद्र कृत नेमिनाथ चतुष्पादिका (र का १३२५ वि० लगभग), यशकीर्ति कृत पाण्डव-पुराण (र. का. १४९७ वि०) लावण्यकीर्ति कृत नेमिनाथ रास (र का. १६९२ वि०) और द्रौपदी रास (र. का १६९३) आदि।

डिंगल राजस्थानी साहित्य की एक विशेष शैली है जिसको राजस्थान के समस्त भागो मे अपनाया गया है। डिंगल का मूलाधार पश्चिमी राजस्थानी अर्थात् मारवाडी है, जिसको मरुभाषा अथवा मरुदेशीय भाषा भी कहा गया है।

डिंगल मे अनेक प्रबन्ध-काव्यो के साथ ही मुक्तक गीत, दूहा, झूलणा, कुण्डलिया, नीसाणी, झमाल और छप्पयादि प्रचुर मात्रा मे लिखे गये। डिंगल गीत गेय नही होते किन्तु विशेष प्रभावशाली शैली मे उच्चारित किये जाते है। डिंगल गीतो के मुख्य भेद ९१ प्रकार के प्राप्त होते हैं।[1]

डिंगल काव्य ओजोगुण-सम्पन्नता, रस-परिपाक, ऐतिहासिकता और प्रभावशालिता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माने गये हैं। डिंगल कवियो को जीवन के विविध पक्षो का विस्तृत अनुभव रहा है इसलिए डिंगल साहित्य मे यथार्थ और सजीव रूप एवं दृश्य-चित्रण के स्पष्ट दर्शन वर्तमान हैं। डिंगल कवि कलम चलाने मे कुशल होने के साथ ही तलवार के भी धनी रहे हैं। वीरता, शृङ्गार और भक्ति तीनो ही इन कवियो के प्रिय विषय रहे हैं। इसी वीरता, शृङ्गार और भक्ति की त्रिवेणी मे स्नान कर मध्यकालीन राजस्थान का जन-समाज अनुपम शौर्य और त्याग-भावना का परिचय दे सका है। मध्यकालीन राजस्थानी वीर-वीराङ्गनाओ के प्रमुख प्रेरणा-स्रोत डिंगल काव्य ही रहे हैं और डिंगल काव्यो से स्वाधीनता, स्वाभिमान एव आत्म-रक्षा का अमर सन्देश प्राप्त होता है।

---

[1] श्री नारायणसिंह भाटी, मध्यकालीन डिंगल गीत-साहित्य, राजस्थानी साहित्य का मध्यकाल, परपरा, राजस्थानी शोध-संस्थान, जोधपुर, पृ० २५५-२७३।

श्रीकृष्ण के पावन चरित्र मे वीरता, भक्ति और शृगार तीनो ही रसों के अनुकूल प्रसग उपलब्ध होते हैं इसलिए श्रीकृष्ण अन्य भारतीय कवियों की भाँति डिंगल कवियो के भी विशेष चरित्र-नायक रहे हैं। डिंगल कवियों ने अपनी-अपनी रुचि के अनुसार श्रीकृष्ण का वीररसात्मक, भक्तिपरक अथवा शृंगारिक रूप विभिन्न काव्य-ग्रन्थो मे चित्रित किया है। महाराज पृथ्वीराज राठौड जैसे समर्थ कवि ने तो अपनी एक ही काव्यकृति 'वेलि क्रिसन रुक्मिणी री' मे वीर, शान्त और शृगार तीनो ही रसो का चरम उत्कर्ष प्रकट कर काव्य-क्षेत्र मे एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

श्रीकृष्ण के बाल-रूप और गोपाल-रूप का तो सामान्यरूपेण डिगल कवियों ने चित्रण किया ही है किन्तु श्रीकृष्ण का महाभारतकालीन रूप राजस्थान के वातावरण के लिए अधिक अनुकूल सिद्ध हुआ है। मध्य युग मे राजस्थान अपनी मान-मर्यादा की रक्षा हेतु सघर्षरत रहा जिससे श्रीकृष्ण का दुष्टदल-सहारक रूप डिंगल कवियो को विशेष रुचिकर लगा।

रुक्मिणी-हरण जैसे प्रसग में डिगल के कवियो को श्रीकृष्ण का राजसी ऐश्वर्ययुक्त वीर-चरित्र व्यक्त करने का विशेष अवसर प्राप्त हुआ, अतः डिंगल के कवियो ने विभिन्न दृष्टिकोण से रुक्मिणी-हरण सम्बन्धी अनेक काव्य-ग्रथ लिखे।

श्रीकृष्ण सम्बन्धी निम्नलिखित डिंगल-काव्य विशेष उल्लेखनीय हैं—

महाकवि ईसरदासजी (वि. स. १५९५-१६७६) कृत हरिरस और गुण भागवत, महाराज पृथ्वीराज राठौड (वि स १६०६-१६४४) कृत वेलि क्रिसन रुक्मिणी री, दसम भागवत रा दूहा और वसदेव रावउत; सायाजी भूला (वि. सं १६३२-१७०३) कृत रुखमणी-हरण और नागदमण, माधोदास (वि. सं १६९०) कृत भाषा दसमस्कध तथा खेतसी सादू कृत भाषा-भारथ (र का. वि स. १७९०) आदि।

राजस्थानी पिंगल काव्य से तात्पर्य शौरसैनीप्रभावित राजस्थानी काव्य से है। प्रारम्भ मे पिंगल शैली को मुख्यत ब्रह्मभट्ट कवियो ने अपनाई जिनमे पृथ्वीराज रासा[1] का कर्ता महाकवि चन्द विशेष उल्लेखनीय है। 'पिंगल' शब्द का मूल अर्थ छन्द शास्त्र होता है इसलिए परम्परागत छन्द-शैली मे रचित काव्यो को पिंगळ काव्य कहा गया।

---

[1] पृथ्वीराज रासो की उपलब्ध प्राचीनतम प्रति वि. स १६६४ में लिखित है और यह राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के केन्द्रीय हस्तलिखित ग्रंथालय में सुरक्षित है।

श्रीकृष्ण सम्बन्धी पिंगल काव्यो में नरहरिदास बारहठ (वि. स १६४८-१७३३)कृत अवतार-चरित्र, महाराजा बहादुरसिंह, किशनगढ़ (शा. का. १७४६ १७८२ वि० स०) कृत मुक्तक छन्द, गणेशपुरीजी (ज. स. १८८३) कृत वीर विनोद (महाभारत गत प्रसग पर आधारित), महाराजा प्रतापसिंह, जयपुर (वि. स. १८२१-१८६०), महाराणा जवानसिंह, उदयपुर (वि स १८५७-१८९५), राजकुमारी सुदर कुवरी, किशनगढ (वि स १७९१-१८५३) और स्वरूपदास कृत पाण्डवयशेन्दुचद्रिका (२०वी सदी) महत्त्वपूर्ण कृतिया हैं।

राजस्थानी भाषा मे पुराण ग्रन्थो पर आधारित साहित्य भी विशाल परिमाण मे लिखा गया है। इस प्रकार का साहित्य पद्य के साथ ही गद्य मे भी प्राप्त होता है, इसलिए विशेप महत्त्वपूर्ण है। राजस्थानी पौराणिक साहित्य मे राम, कृष्ण, शिव, दुर्गा आदि के साथ ही हरिश्चन्द्र और उषा-अनिरुद्ध आदि के चरित्रो का विस्तृत निरूपण हुआ है। साथ ही ब्रह्माड पुराण, श्रीमद्‌भागवत और सूर्यपुराण के टीकायुक्त राजस्थानी अनुवाद भी मिलते हैं। श्रीकृष्ण सम्बन्धी पौराणिक साहित्य में सोढीनाथी (अमरकोट) कृत बालचरित्र (स. १७३१) और कसलीला (स १७३१), सम्मन बाई कविया (अलवर) कृत कृष्ण बाललीला, भीम कवि कृत हरिलीला (र का स १५४१) तथा श्रीमद्‌भागवत्, हरिवशपुराण और विष्णुपुराण सम्बन्धी रचनाएँ उल्लेखनीय हैं।

राजस्थान के राजपूत राजाओ और अन्य वीरो के आश्रय मे अनेक भक्ति-सम्प्रदायो एव सन्तमतो को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ जिससे राजस्थान मे इनके अनेक केन्द्र स्थापित हुए। दादू, रामस्नेही, विश्नोई आदि सम्प्रदायो की जन्म-भूमि होने का श्रेय भी राजस्थान को प्राप्त है। राजस्थान मे अनेक निर्गुणोपासक सन्तो के साथ ही सगुणोपासक भक्तो ने अपनी भावमयी वाणी से जनता को प्रभावित किया। इनमे से कतिपय सन्तो और भक्तो की वाणी का अखिल भारतीय प्रचार एव प्रसार है जिनमे मीरां (स १५५५-१६०३), और चन्द्र-सखी के भजन मुख्य हैं। निम्वार्क सम्प्रदाय के परशुरामजी का श्रीकृष्ण चरित (सं. १६७७) भी श्रीकृष्ण सबन्धी प्रमुख रचना है।

जनता से मौखिक परपरानुसार प्राप्त होने वाला साहित्य ही लोक-साहित्य है। राजस्थान मे प्राचीन काल से ही मौखिक साहित्य को लिपिबद्ध करने की परिपाटी रही है, तदनुसार प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो मे भी अनेक लोक-कथायें, लोकगीत, कहावतें, पहेलियां और लौकिक काव्यादि लिखित रूप मे प्राप्त हो जाते हैं। राजस्थान का प्राकृतिक वातावरण हरी-भरी उपजाऊ घाटियो,

मरुस्थलीय टीबो, ऊंचे पर्वतो, कलकल निनादी निर्झरो और सुविस्तृत जलाशयो से युक्त विभिन्नताओ से पूर्ण है, इसलिये राजस्थानी लोक-साहित्य मे भी विविधताओ के दर्शन होते हैं।

राजस्थानी भाषा मे लोक-साहित्य के अन्तर्गत हजारो की सख्या मे लोक-गीत, लोक-कथाएँ, कहावते, मुहावरे, पहेलिया, पवाडे और ख्याल (लोक-नाटक) प्रचलित हैं। कालान्तर मे इनके लुप्त हो जाने की आशका है, अतएव इनको शीघ्रातिशीघ्र वैज्ञानिक विधियो से लिपिबद्ध करने की आवश्यकता है।

राजस्थानी जनता ने अपनी भक्ति-भावना को लोक गीतो मे मुख्यत: 'हर-जस' के रूप मे व्यक्त किया है। राजस्थानी 'हर-जस' साहित्य के अन्तर्गत कृष्ण-लीला सम्बन्धी गीत प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होते हैं। माखन-चोरी, गो-चारण, नाग-दमण, चीर-हरण, रास और मथुरा-गमन आदि लीला-सम्बन्धी गीतों मे श्रीकृष्ण के लोकानुरञ्जक और लोक-रक्षक रूप की झाकी प्रदर्शित हुई है। ऐसे गीतो मे गोकुल को एक राजस्थानी गाव के रूप मे और राधा-कृष्ण को राजस्थानी नायिका एव नायक के रूप मे चित्रित किया गया है।[1]

श्रीकृष्ण-सम्बन्धी लौकिक काव्यो मे 'नरसीजी रो माहेरो' और 'रुक्मिणी-मंगल' अथवा 'हरिजी रो व्यावलो' मुख्य हैं। इनमे से 'माहेरो' रतन खाती का और 'रुक्मिणी-मगळ' अथवा 'व्यावलो' पदम तेली का रचित माना जाता है। 'नरसीजी रो माहेरो" मे भक्तवर नरसीजी की ओर से श्रीकृष्ण-रुक्मिणी द्वारा नरसीजी की पुत्री नानीबाई के ससुराल मे भात भरने की कथा है। राजस्थान और गुजरात की जनता में माहेरा गेय रूप मे बहुत प्रिय है। माहेरा मे नरसी की निर्धनता और असहायावस्था का यथार्थ चित्रण है। श्रीकृष्ण अपने भक्त की पुकार पर स्वयं श्री रुक्मिणी के साथ पहुँच कर आश्चर्यजनक रीति से भरपूर माहेरा भरते हैं। डॉ० हीरालाल माहेश्वरी ने 'माहेरो' का रचनाकाल स० १६१७ माना है।[2] वास्तव में इसका रचनाकाल सं० १६७७ है जैसा उनके ही द्वारा उद्धृत ज्ञान-भण्डार, बीकानेर की प्रति की निम्न पक्तियो से स्पष्ट विदित होता है—

> संवत सोलै सततरै माल, सांवरन्ना पधारचा छा नगर अंजार।
> गावै नै माहेरा सहजी रतन वरी, लाख चौरासी सु जु दोर ल्यौ हरी ॥[3]

---

[1] श्री मनोहर शर्मा, एम. ए., का निबन्ध, भारतीय लोक-कला निबन्धावली, भाग ३, भारतीय लोक-कला मण्डल, उदयपुर।

[2] राजस्थानी भाषा और साहित्य, आधुनिक पुस्तक भवन, ३०।३१ कलाकार स्ट्रीट कलकत्ता ७, पृ २११

[3] वही।

माहेरा प्रकाशित हो चुका है।[1] किन्तु हस्तलिखित ग्रथो और मौखिक-कथाओ के पाठान्तर सहित विधिवत् सम्पादित किये गये 'नरसीजी रो माहेरो' का प्रकाशन आवश्यक है।

कतिपय आधुनिक लेखको ने भी श्रीकृष्ण विषयक रचनाएँ राजस्थानी भाषा मे प्रस्तुत की हैं। ऐसी रचनाओ मे श्रीसत्यप्रकाश जोशी की 'राधा'[2] और श्रीसांवलदान आशिया कृत चारणी गीतो मे महाभारत पर आधारित काव्य[3] विशेष उल्लेखनीय हैं। श्रीमनोहर शर्मा बिसाऊ और श्रीनाथूदान महियारिया प्रभृति आधुनिक राजस्थानी कवियो की श्रीकृष्ण सम्बन्धी फुटकर रचनाएँ[4] भी महत्त्वपूर्ण है।

सायांजी झूला का जीवन-परिचय

कृष्ण-भक्त महात्मा सायाजी चारणो की झूला शाखा[5] मे उत्पन्न हुए इसलिए झूला कहे गये। राजस्थान, मध्यभारत और गुजरात आदि प्रदेशो मे चारण कवियो का विशेष सम्मान रहा है। चारण ओजस्विनी कविता पढने के अतिरिक्त युद्ध-क्षेत्र में तलवार चलाने मे भी परम कुशल रहे हैं। विद्या-व्यसन और अपनी गद्य-पद्यात्मक विविध विषयक रचनाओ मे प्रभावशाली रूप में सत्य का अकन करना इनकी विशेषताएँ रही हैं। यही कारण है कि अनेक चारण कवि शासको के विद्यागुरु, प्रधान परामर्शदाता और सेनापति रहे है। राजपूत शासको की यथातथ्य कटु आलोचना करना चारण-काव्य की एक विशेषता रही है जिसको विसहर (स० विषधर) काव्य कहा जाता है। अनेक चारण कवियो ने अपने आश्रयदाताओ की प्रशसा नही करते हुए और सासारिक सुखोपभोगो को तुच्छ समझते हुए केवल मात्र ईश-स्तवन के रूप मे ही अपनी काव्यात्मक अभिव्यक्ति की। ऐसे कवियो मे महात्मा सायाजी झूला प्रमुख हैं।

महात्मा सायाजी झूला ने अपनी रचनाओ मे मुख्यत भगवान श्रीकृष्ण का पावन चरित्र ही निरूपित किया है इसलिए अतःसाक्ष्य के आधार पर

---

[1] क. शाह शिवकरण रामरतन दरक, इन्दौर।
ख श्यामलाल हीरालाल, श्याम काशी प्रेस, मथुरा।

[2] प्रकाशित, रूपायन प्रकाशन, बोरूदा, जोधपुर।

[3] अप्रकाशित।

[4] राजस्थानी अर्वाचीन साहित्य, राजस्थानी साहित्य समिति, बिसाऊ, जयपुर।

[5] चारणो की शाखाएँ १२० मानी गई हैं। इनमे से रेढ़ शाखा के अन्तर्गत 'झूला' एक उपशाखा है।—महाकवि सूर्यमल कृत वशभास्कर, भाग १, सम्पादक प० रामकर्णजी आसोपा, प्रताप प्रेस, जोधपुर, स० १९५६, पृ. ८४।

सायाजी की जीवनी नही लिखी जा सकती। सबंधित इतिहास-ग्रथो में प्राप्त सायाजी सबधी प्रासगिक सूचनाओ और जनश्रुतियो द्वारा ही सायाजी का जीवन-परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

राजस्थानी साहित्य सबधी इतिहास-ग्रंथो मे सायाजी की जीवनी के विषय मे यही ज्ञात होता है कि "सायाजी झूला खाप (शाखा) के चारण और ईडर राज्य के लीलछा गाव के निवासी स्वामीदास[1] के द्वितीय पुत्र थे। इनका जन्म स० १६३२ मे और देहात स० १७०३ मे हुआ था। ईडर नरेश राव कल्याण-मल[2] इनके आश्रयदाता थे जिन्होने इनको एक लाख-पसाव[3] और कुवावा नामक ग्राम प्रदान किया था।"[4]

"...इनके बडे भाई का नाम भायाजी था। इनके गुरु कोई महन्त गोविन्ददासजी[5] थे। ईडर के राव वीरमदेव और उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके छोटे भाई राव कल्याणमल इनके आश्रयदाता रहे थे। वीरमदेव ने इनको एक लाख-पसाव दिया तथा कल्याणमलजी ने भी एक लाख-पसाव तथा कुवावा नामक एक गाँव इनको प्रदान किया था। यह इनाम इनको सवत्

---

[1] लीळछा नामक गांव गुर्जरेश्वर सिद्धराज जयसिह ने चारण कवि आलाजी झूला को प्रदान किया था और सायाजी के पिता स्वामीदास आलाजी की नवीं पीढ़ी में उत्पन्न हुए थे। स्वामीदासजी सरल स्वभाव के उदार वृत्ति वाले और भगवान शकर के अनन्य भक्त थे—राज्य कवि हमीरदानजी, नागदमण की भूमिका पृ० १।२। सोलकी सिद्धराज जयसिह का शासनकाल वि स ११५० से वि स. ११९९ तक माना जाता है। फार्वस कृत रासमाला, श्री गोपालनारायणजी बहुरा एम ए. कृत हिन्दी अनुवाद और सम्पादन, भाग १ पूर्वार्द्ध, पृ. ७६। —स०

[2] राव कल्याणमल के पूर्व इनके अग्रज राव वीरमदे भी सायाजी के आश्रयदाता थे जिन्होने सर्व प्रथम सायाजी को अपने दरबार में सम्मानित कर लाख-पसाव दिया था। दृष्टव्य रासमाला, श्री गोपालनारायणजी बहुरा कृत हिन्दी अनुवाद और सम्पादन भाग १, पूर्वार्द्ध, प्रकरण आठवां। —स०

[3] राजस्थान में शासको की ओर से कवियों को लाख-पसाव, करोड-पसाव और अरब-पसाव प्रदान कर सम्मानित करने की प्रथा थी। लाख पसाव, करोड-पसाव और अरब-पसाव के रूप में कवियो को क्रमश: लाख, करोड़ और अरब रुपए की सम्पत्ति भेंट की जाती थी। पसाव शब्द प्रसाद (स०) का अपभ्रंश है। —स०

[4] राजस्थानी भाषा और साहित्य, ले० श्री मोतीलालजी मेनारिया, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वितीय सस्करण स० २००८ पृ० स. १७५।१७६।

[5] गोविन्ददासजी निरजनी सम्प्रदाय के प्रवर्तक हरिदासजी के शिष्य थे। निरजनी सम्प्रदाय का प्रधान केन्द्र टीडवाना (जोधपुर) के निकट गाढा नामक स्थान है जहां पर प्रतिवर्ष फाल्गुन शुक्ला १ से १२ तक मेला भरता है।—सं०

१६६१ मे मिला, जब वे 'नागदमण' और 'रुपमणी-हरण' नामक काव्यो की रचना कर चुके थे ।"[1]

फार्व्स कृत रास-माला से महात्मा सायाजी के विषय मे कतिपय उपयोगी सूचनाएँ उपलब्ध होती हैं ।[2] रास-माला मे प्रकट किया गया है कि राव वीरमदेव ईडर के परम वीर और दानी राजा थे । वीरमदे ने एक वार नटुवा और जाल्हार नामक दो घोड़े चालीस हजार रुपये मे मोल लिये ।[3] राव ने दशहरा-महोत्सव के अवसर पर अपना प्रसिद्ध घोडा जाल्हार सायाजी गढवी[4] को दान मे दिया और अपनी पीथापुर की वाघेली राणी से इसके विषय मे अनेक बार कहा । इस पर रानी ने उत्तर दिया—'आप एक टट्टू का दान कर मुझे बार-बार क्यो कहते हैं ?' ऐसा सुन कर राव क्रोधित हो गया और उसने कहा—'तुम्हारे पिता ऐसा घोडा चारण को दान मे देंगे तब मैं तुम्हारे महल मे आऊँगा ।' राव ऐसा कह कर वाघेली राणी के महल से निकल आया और राणी प्रात काल ही रथ जुतवा कर अपने पीहर के लिए रवाना हो गई । पीहर पहुँच कर वाघेली ने अपने पिता से समस्त वृत्तान्त कह सुनाया । वाघेला राजा ने चारो ओर अपने आदमी भेज कर जाल्हार जैसे अच्छे घोडे की खोज करवाई किन्तु सफलता नही मिली । तदुपरान्त वाघेला राजा स्वय सायाजी के यहाँ पहुँचा । वाघेला ने युक्तिपूर्वक सायाजी को प्रसन्न किया और वे मुंह माँगा मोल

---

[1] राजस्थानी भाषा और साहित्य, ले० श्रीहीरालालजी माहेश्वरी, आधुनिक पुस्तक-भवन, ३०-३१ कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता, पृ १७७ ।

[2] हिन्दी-अनुवाद और सम्पादन श्रीगोपालनारायणजी वहुरा, एम ए, मङ्गल-प्रकाशन, जयपुर, भाग २, प्रकरण आठवां ।

[3] रासमाला के गुजराती अनुवादक ने घोड़ों का मोल छत्तीस हजार रुपये लिखा है और नागदमण के सम्पादक श्री हमीरदानजी ने केवल जल्हार घोडे का मूल्य वाइस हजार वताया है। नागदमण, प्रका राज्यकवि लाखाजी कानजी, दिलखुशाल वाग, पालणपुर (उ गु.) ।

[4] क. गढ़वी शब्द चारण का पर्याय है। राजस्थानी सबद-कोस, कर्ता श्रीसीतारामजी लाळस, राजस्थानी शोध-सस्थान, चोपासनी, जोधपुर, पृ. ६७५ ।

ख. वीरा रस तणो न भावै वरणण,
नह भावै मोनू जस-गीत ।
गरज नहीं म्हारै गीतांरी,
गढ़वा ! काय सुणावै गीत ॥

—वांकीदासजीरी ख्यात, सं. श्रीनरोत्तमदासजी स्वामी, राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, पृ २१६ ।

चुका कर जाल्हार घोडा ले आये। छ माह घोडे को अपने यहाँ रख कर वाघेला राजा ने पुन सायाजी को जाल्हार घोडा प्रदान कर दिया। राव वीरमदे यह समाचार जान कर वहुत प्रसन्न हुए और स्वय पीथापुर पहुँचे। वीरमदे अपने श्वसुर की प्रशसा करते हुए वाघेली रानी के साथ पुन. ईडर लौट आये।

थोडे समय के पश्चात् सायाजी ने जाल्हार घोड़ा ब्रह्मखेड के सरदार मालजी के यहाँ रक्खा। मालजी ने उस घोड़े पर सवारी कर तरसगमा के राणा के विरुद्ध युद्ध किया जिसमे घोड़ा घायल हो गया और घावो की पीडा से मर गया। कहते है कि श्रीकृष्ण के अतिरिक्त किसी अन्य चरित्र पर काव्य नही लिखने की आन रखने वाले सायांजी ने घोडे की मृत्यु पर मरसिया लिखे।

राव वीरमदे का इसी तरह का विवाद एक बार उनकी रामपुरा की चन्द्रावती रानी से दशहरा-उत्सव पर वीरमदे द्वारा मारे गये भैसे के विपय मे हो गया। चन्द्रावती रानी ने कहा कि वीरमदे द्वारा मारा गया भैसा ऐसा प्रवल नही था कि जिसका कोई वखान किया जावे। वीरमदे ने कहा—'तुम कोई प्रवल भैंसा वताओगी तव तुम्हारे महल मे आऊँगा।' चन्द्रावती ने अपने पीहर पहुँच कर एक जगली भैसे को खिला-पिला कर पुप्ट करना प्रारम्भ किया और रावजी को दीपावलि पर रामपुरा आने का निमन्त्रण दिया।

वीरमदे दीपावलि पर रामपुरा पहुँचे। रामपुरा के एक चारण का ईडर मे कभी अपमान हो गया था इसलिए उस चारण ने वीरमदे के मार्ग मे उस तैयार किये हुए प्रवल जगली भैसे को छोड़ दिया। वीरमदे ने वीरतापूर्वक उस भैसे को मार डाला। साथ ही वूदी वालो से युद्ध कर रामपुरा वालो की जमीन पुन. रामपुरा वालो को दिलवा दी। वूदी वालो ने रामपुरा की जमीन पर वल-पूर्वक अधिकार कर लिया था। इस अवसर पर पुन वीरमदे ने सायाजी को एक लाख-पसाव प्रदान किया।

राव वीरमदे की मृत्यु के पश्चात इनके लघु भ्राता कल्याणमल ईडर के शासक हुए। इनके समय मे सायाजी ने अपने गाँव कुवावा मे एक दुर्ग वनाने का विचार किया। सायाजी का दुर्ग वनवाना राव कल्याणमल को उचित नही प्रतीत हुआ।

सायाजी ने अपने ज्योतिपी को कह रक्खा था कि वह सायाजी का अन्त-काल निकट होने पर उनको सूचित कर दे जिससे वे तीर्थ-स्थान पर जा कर देह-त्याग कर सकें। राव कल्याणमल ने उस ज्योतिपी से मिल कर सायाजी

को उनका अन्तकाल सूचित करवा दिया। सायांजी ज्योतिषी के कथनानुसार व्रज मे पहुँचे और उन्होने वहाँ श्रीनाथजी के मन्दिर मे तेरह सेर सोने की थाली भेंट की।[१] तदुपरान्त सायाजी काशी पहुँचे। वहाँ दस वर्ष रहने के उपरान्त वे वहुत रुग्ण हुए और उन्हे अपना अन्त समय निकट ज्ञात हुआ तो उन्होने पत्र लिख कर ईडर के राव से मिलने की इच्छा प्रकट की। पत्र प्राप्त कर ईडर के राव काशी के लिए रवाना हो गये किन्तु काशी से एक पडाव दूर रहने पर ही सायांजी का देहान्त हो गया।[२] राव गङ्गा-स्नान कर उदयपुर होता हुआ ईडर लौट आया और अपने साथ गढवी गोपालदास[3] को लेता आया। राव ने थँरसण और रामपुर नामक गाँव गोपालदास को दिये।

महात्मा सायाजी एक कुशल कवि होने के साथ ही अपने समय के लोकप्रिय भगवद्भक्त थे। ऐसे सन्त-महात्माओ के विपय मे लौकिक-अलौकिक घटनाओ से युक्त जनश्रुतियाँ प्रचलित हो जाती हैं और महात्मा सायाजी भी इस विपय मे अपवाद नही हैं। ऐसी जनश्रुतियो से सम्वन्धित चरित्र का जनता पर चमत्कारपूर्ण प्रभाव ज्ञात होता है और इनके विशेप अध्ययन से जीवन-सम्बन्धी वास्तविकता का ज्ञान भी प्राप्त होता है।

चारण कवि महात्मा सायाजी के सम्वन्ध मे कतिपय जनश्रुतियाँ निम्नलिखित हैं—

सायाजी के पिता स्वामिदासजी थे। प्रारभ मे स्वामिदासजी के कोई सन्तान नही थीं इसलिये वे वहुत उदास रहते थे। स्वामिदासजी भगवान शिव के अनन्य भक्त थे इसलिये अपने गाँव लीलछा के समीप ही प्रतिष्ठित भुवनेश्वर महादेव के दर्शनार्थ जाया करते थे। एक समय की वात है कि स्वामिदासजी शिवरात्रि के अवसर पर पूजादि कर्म से निवृत्त हो कर शिवालय मे ही सोये

---

[१] नागदमण के सम्पादक राज्य कवि श्रीहमीरदानजी ने तेरह सेर सोने की थाली उदयपुर के निकट नाथद्वारा में श्रीनाथजी को अर्पित करने का उल्लेख किया है। साथ ही नाथद्वारा में महाराणा जगतसिंह को चमत्कार वताने का उल्लेख किया है। (भूमिका पृ ३७-४०)। वास्तव में तव तक न तो नाथद्वारा वसा था और न मेवाड मे श्रीनाथजी की प्रतिमा ही प्रतिष्ठित हुई थी। मेवाड में श्रीनाथजी की प्रतिमा महाराणा राजसिंह प्रथम के शासनकाल में वि. सं १७२८ में प्रतिष्ठित हुई थी।

[२] नागदमण के सम्पादक श्रीहमीरदानजी ने सायाजी का मथुरा के समीप यमुना में जलसमाधि लेने का उल्लेख किया है। भूमिका पृ ४७।

[3] गढवी गोपालदास सिंढायच उदयपुर-महाराणा जगतसिंह के सभाकवि थे। नागदमण, भूमिका पृ. ५०।

हुए थे। इतने मे शिवमूर्ति मे से तेज का बिंव प्रकट हुआ और स्वामिदासजी के नेत्र खुल गये। तेजबिंब मे से भगवान शकर ने प्रकट हो कर स्वामिदासजी को आज्ञा की "मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हू। इच्छित वर मागो।" स्वामिदासजी को सम्पूर्ण दृश्य स्वप्नवत ज्ञात हुआ। स्वामिदासजी ने निवेदन किया "मुझे परमानन्द-रूप आपकी सेवा के अतिरिक्त किसी वस्तु की कामना नही है किन्तु परलोक की सिद्धि के लिये पुत्र की आकाक्षा अवश्य है।"

कहते है कि भगवान शकर ने स्वामिदासजी को दो पुत्रो का वरदान दिया जिसके अनुसार उनके वि० स० १६२४ मे भायाजी और वि० स० १६३२ मे सायाजी नामक पुत्र हुए।

× × ×

सायाजी की बाल-लीला के विषय मे एक जनश्रुति इस प्रकार है कि एक समय मे सायाजी अपने बाल-सखाओ के साथ लीलछा गाव से थोडी दूर आम्र-वृक्षो की सघन छाया मे विश्राम कर रहे थे। इसी समय सामने के पेड पर बैठे हुए एक बन्दर ने सायाजी के समीप दो फल गिराये। फल गिराते ही वह बन्दर वनस्थली मे अतर्धान हो गया। सायाजी ने अपने मित्रो से इन फलो का नाम पूछा किन्तु कोई नही बता सका। सायाजी ने फल काट कर अपने सखाओ मे वितरित किये और स्वय भी उनका स्वाद लिया। ऐसे मधुर फलो का स्वाद पहले किसी ने नही लिया था। कहते हैं कि स्वय हनुमानजी ने प्रसादरूप मे उक्त फल सायाजी को प्रदान किये थे।

× × ×

किसी समय सायाजी अपने बाल-मित्रो के साथ भुवनेश्वर महादेव के दर्शनार्थ जा रहे थे। मार्ग मे सायाजी को पेडो पर पके हुए आम मिले। कुछ पके हुए आम सायाजी ने महादेव की भेट के लिये अपने साथ ले लिये। जाते हुए आगे एक योगीराज मिले। सायाजी ने श्रद्धापूर्वक योगीराज के आगे नमन किया और आम के फल उन्हें समर्पित कर दिये। योगीराज ने प्रसन्नतापूर्वक सायाजी को आशीर्वाद दिया और स्थूल दृष्टि से अदृश्य हो गये। कहा जाता है कि योगीराज स्वय भुवनेश्वर महादेव थे।

× × ×

सायाजी के पिता स्वामिदासजी का देहान्त हो गया तो थोड़े दिन पश्चात् भायाजी उदासमना ईडर के लिये रवाना हुए। इस समय सायाजी की अवस्था केवल बारह वर्ष की थी। सायाजी ईडर के मार्ग में छायादार वृक्षो के मध्य एक वापिका के समीप विश्राम हेतु ठहरे। तदुपरान्त वापिका मे उतरे और ठडा

पानी पी कर पानी के किनारे ही लेट गये। कहते हैं कि तब स्वय भगवान श्री कृष्ण ने उन्हे दर्शन दिये और हरिदासजी के शिष्य गोविन्ददासजी के आशीर्वाद की प्राप्ति तथा रुक्मिणीहरण एव नागदमण काव्यो के निर्माण का वरदान दिया।

इसी समय जमादार सुलेमान भीलोडा से ईडर जाते हुए अपने आदमियो के साथ विश्राम के लिये वापिका के समीप रुके। सुलेमान का एक सेवक वापिका मे जल लेने उतरा तो उसने देखा कि एक सर्प सायांजी के मुह पर अपने फण की छाया किये हुए है। सेवक ने तुरन्त ही यह दृश्य सुलेमान को ला कर वताया। सुलेमान वापिका मे उतरा तब सर्प अदृश्य हो गया। सुलेमान ने सायाजी के समीप पहुँच कर विचार किया कि शारीरिक लक्षणो को देखते हुए अवश्य ही यह सोया हुआ व्यक्ति होनहार है किन्तु कारणवश दुखी है। सुलेमान ने सायाजी के दाये पैर की ओर देखा तो पैर मे ६ अगुलिया दिखाई दी। सुलेमान ने समझा कि यह ६ठवी अगुली ही इस व्यक्ति के दुख का कारण है। ऐसा विचार कर सुलेमान ने अपनी तलवार से तुरन्त ही वार कर ६ठवी अगुली को काट दिया। अगुली पर प्रहार होते हो सायाजी उठ खडे हुए। सुलेमान ने आश्वासन देते हुए सायाजी का प्राथमिक उपचार किया और उन्हे घोडे पर बैठा कर अपने साथ ले लिया। सुलेमान ने ईडर पहुँच कर सायाजी के निवास, भोजन और शिक्षण का प्रबन्ध किया। ईडर मे ही सायाजी का गोविन्ददासजी से साक्षात्कार हुआ तब प्रीतिपूर्वक गोविन्ददासजी ने सायांजी को अपना शिष्य वना लिया।

× × ×

एक समय सायाजी ईडर के समीप पहाडो मे भ्रमण कर रहे थे। इस समय एक गाय चर रही थी जिस पर अचानक एक बाघ ने आक्रमण किया। सायाजी ने उस बाघ की ओर लपक कर कहा "दूर गधा"। सायाजी के साथियो ने देखा कि वाघ तुरन्त गधा बन गया और गाय को छोड कर भाग गया।

× × ×

सायांजी सम्बन्धी एक घटना इस प्रकार कही जाती है कि एक दिन सायाजी सूर्योदय के समय ईडर के तालाब पर स्नानादि हेतु गये हुए थे। सायाजी के पानी मे उतरने पर एक मगर उनके पैरो से लग कर पानी की सतह पर आया। सायाजी ने अञ्जली मे जल भर कर मगर की ओर फेंका। मगर जल के छीटे लगते ही यक्ष के रूप मे खडा हुआ और कहने लगा—"महाराज ! मैं आपके चरणस्पर्श और आशीर्वाद से शापमुक्त हो कर अब पुन स्वर्ग मे जा रहा हूँ।"

× × ×

नागदमण और रुक्मिणी-हरण काव्यो की रचना से प्रसन्न हो कर कहते हैं कि भगवान ने एक साढनी (ऊटनी) पर लदवा कर स्वर्ण-मुद्राए सायाजी के पास कुवावा गाव मे भेजी । मुद्राओ के साथ प्राप्त होने वाले पत्र मे लिखा हुआ था—"नागदमण और रुक्मिणी-हरण की रचना से हम वहुत प्रसन्न हुए हैं । वर्ण-धर्म को देखते हुए आप चारण और मैं क्षत्रिय हू इसलिये आपका दान लेने का और मेरा दान देने का अधिकार है । द्वारिका से रणछोड़ की सही ।" पत्र पढ कर कहते हैं सायाजी ने यह दूहा लिखा—

दिये तो घर बेठा दिये, न दिये पोकारे ।
ढाहर उभी आगणे, काना टवारे ।।

अर्थात् ईश्वर देता है तो घर बैठे हुए को भी देता है, मागने पर नही देता है । (ईश्वर की कृपा होने पर मुहरो से लदी हुई) ऊटनी आगन मे खड़ी हो कर कान फडफडाती है ।

कहते हैं कि इसी द्रव्य से सायाजी ने कुवावा गाव मे दुर्ग, गोपीनाथजी का मन्दिर और ऊटनी के आ कर ठहरने के स्थान पर एक कुआ वनवाया एव अन्य सत्कार्य किये ।

× × ×

एक समय की घटना है कि सायाजी सायङ्काल राव कल्याणमल के दरबार मे बैठे हुए थे । सायाजी वैठे-वैठे अचानक ही अपने हाथो से इस प्रकार की क्रिया करने लगे मानो किसी के वस्त्रो मे लगी हुई आग वुझाने का प्रयत्न करते हो । थोडी देर पश्चात् सायाजी शान्त हुए तो दरबारियो ने देखा कि सायाजी के हाथों मे जलने के चिन्ह बन गये हैं । राव कल्याणमल ने आग्रहपूर्वक सायाजी से इस घटना का कारण पूछा तो सायाजी ने कहा "द्वारिका मे पुजारी के हाथ मे रही हुई आरती से भगवान रणछोड के वस्त्रो मे आग लग गई जिसको वुझाते हुए मेरे हाथो में जलने के निशान हो गये हैं ।"

राव कल्याणमल को सायाजी के उक्त कथन से आश्चर्य हुआ और उन्होने अपने विश्वस्त दरवारी चादोजी राठौड को तथ्यान्वेषण हेतु द्वारिका भेजा । चादोजी को द्वारिका के रणछोड-मन्दिर मे यह जान कर परम आश्चर्य हुआ कि "सायाजी तो नियमित रूप से सायङ्काल-आरती के दर्शन हेतु मन्दिर मे आते हैं और रणछोडजी की पोषाक मे आग लगने पर सायाजी ने ही उसको प्रयत्नपूर्वक वुझाया था ।" इसी दिन सायङ्काल आरती के समय चादोजी ने सायाजी को मूर्ति के दर्शन करते हुए और अदृश्य होते हुए भी देख लिया । चादोजी ने लौट कर राव कल्याणमल को समस्त घटना का विवरण सुनाया और आश्चर्यचकित किया ।

× × ×

सायाजी वृद्धावस्था मे अपनी अर्द्धाङ्गिनी सुहागणबाई के साथ दानादि के लिये सवा लाख रुपये लेकर तीर्थयात्रा हेतु गये, जिसके विषय मे यह दूहा प्रसिद्ध है—

साथ सवागण[1] सूँ चले, के दडे भूपाळ ।
सवा लाख ले साइड़ो, गो गोकुळ तज बाळ ॥

सायाजी ने श्रीनाथजी के मन्दिर मे पहुँच कर तेरह सेर सोने का थाल भेट करने का संकल्प किया और जोधपुर-नरेश महाराजा गजसिंह को सोने का थाल बनवा भेजने के लिये लिखा—

गजसिंघ अनेरां ठक्करां, बीजां बात विहामणो ।
चाहिजे थाल चूंदाहरा, तेर सेर सोना तणो ॥

महाराजा गजसिंह ने, कहा जाता है कि, तुरन्त ही तेरह सेर सोने का थाल बनवा कर सायांजी के पास भिजवा दिया । सायांजी ने वह थाल प्रसन्नतापूर्वक श्रीनाथजी के मन्दिर मे समर्पित कर दिया ।

× × ×

तीर्थों मे भ्रमण करते हुए सायाजी को अपने अन्त समय का ज्ञान हुआ तो उन्होने ईडर के राव कल्याणमल से मिलना चाहा । सायाजी ने एक गीत राव कल्याणमल के नाम लिख कर, कहते हैं कि, सूर्य की ओर उछाल दिया । सूर्य ब्राह्मण का रूप धारण कर तुरन्त ही राव कल्याणमल के दरबार मे पहुँचा और सायांजी का गीत रावजी को प्रस्तुत किया । गीत इस प्रकार है—

आखे सूरहो सदेस अमेणो,
व्रज आयां पयम वळिये ।
सामे त्रियो सेर सामळियो,
मळे तो मयुरा मळिये ॥ १

अकळ नहि कांई अठे अणगमो,
दकळ नहि कांई दरियो ।
गग-सनान करण गाढां गर,
आवे जो ईडरियो ॥ २

रयण समो भ्रम सरस अठेरव,
अळगो घणो अमांणो ।
गरवर भेट्या तणी गोरधन,
कहज्यो करे कल्याणो ॥ ३

---

[1] 'सवागण' से तात्पर्य सुहागिन भी है ।

सायाजी ने अनेक प्रकार के दान-पुण्यादि कार्य सम्पादित कर वि० सं० १७०३ की श्रावण शुक्ला २ को प्रातःकाल अपनी विवाहिता सुहागणबाई के साथ जल-समाधि ली ।[1]

इस प्रकार ज्ञात होता है कि सायाजी चारणकुल मे उत्पन्न एक कुशल कवि, परम परिश्रमी, विद्यावान्, धार्मिक, उदार, दानी, दयालु, भगवद्भक्त और सिद्ध महात्मा थे । सायाजी का प्रभाव उनके समय मे ही जनता पर इतना व्यापक हो गया था कि वे एक चमत्कारी चारण कवि और महात्मा के रूप मे प्रसिद्ध हो गये । एक निर्धन परिवार मे जन्म लेकर भी सायाजी अपनी काव्य-प्रतिभा, भगवद्भक्ति और उदारता के बल पर ही अनेक शासको के पूज्य बन गये । वे झोपडी मे जन्म लेकर भी अपने कार्य-कौशल से दुर्ग के निर्माता हुए, भक्ति मे ऐसे महान् हुए कि स्वयं भगवान् भी उनके भक्त माने गये, वे ऐसे निडर और स्वाभिमानी थे कि शासकों से लाखो रुपयो की संपत्ति स्वीकार करते हुए भी उन्होंने भगवान् श्री कृष्ण का ही गुणगान किया । सायाजी ऐसे दानी हुए कि अपने जीवन मे सञ्चित सवा लाख रुपयो का त्याग करते हुए उन्हें कोई संकोच नही हुआ और दान देने के लिए ही आजीवन दान ग्रहण करते रहे ।

सायांजी झूला की रचनाएं

भक्त कवि सायाजी झूला की काव्यात्मक रचनाए मुख्यत दो हैं — नाग-दमण और रुखमणी-हरण । उनकी कतिपय स्फुट-पद्य रचनायें भी बताई जाती हैं । यथा—

> अपणा हुआ और, मनरा मेळू माढ़वा ।
> ओ दुख आरो पोर, चुभै पल-पल सायोड़ा ॥ १
>
> हिवाड़ा वाळी हूक, कै कांना किण नै कहां ।
> काळे म्हारी कूक, कहै न सुणी सांयोडा ॥ २[2]

---

[1] नागदमण, स० श्री हमीरदानजी देथा, प्रकाशक-राज्य-कवि लाखाजी कानजी, दिल-खुशाल बाग, पालणपुर (उ. गु.), भूमिका ।

[2] अपने मन के मित्र और प्रेमी पराये हो गये । सायांजी कहते है कि यह दु:ख पल-पल आर-पार चुभता है ।

हे कृष्ण ! तुम ही बताओ, अपने हृदय का दु:ख किसको कहा जावे ? सायांजी कहते हैं कि हे स्याम ! मेरी दुख-भरी पुकार कष्टदायक है जो न कही जा सकती है, न सुनी जा सकती है ।

—श्री हनुवंतसिंह देवड़ा, सयुक्त राजस्थान, अगस्त १९५६, सार्वजनिक सम्पर्क कार्यालय, जयपुर ।

गीत

अध आध नमेक म थायेस अळगो,
माहव हुतो मूझ मुख।
सुख सांभर ते सरागम सुख,
दुख सांभळे त दुःख॥ १

बीठल अध खण रखे वीसरे,
समपण मुकतीज भगतीज सरा।
जोवन जप्यां भामणै जोवम,
जुरा जपै वलिहार जुरा॥ २

किसन अमार कणे कज करवो,
संसारीक कथीर सीलो।
भज न ऊचा ऊचा कुळ भामी,
भज न नीच कुळ नीच भलो॥ ३

साक पाक तो नाम सखधर,
मायाजाळ कंटाल मडो।
राग मिल्यां हरि वडो राग-रस,
वैराग मिलै तो वैराग वडो॥ ४[1]

नागदमण और रुखमणी-हरण दोनो ही काव्य राजस्थानी भाषा मे हैं और कृष्णाख्यान पर अधारित हैं। नागदमण मे श्रीकृष्ण की मुख्यतः बाल-लीला कालिय-दमन का और रुखमणी-हरण मे प्रसङ्गानुसार समस्त बाल-लीलाओ के सक्षिप्त वर्णन के साथ रुक्मिणी-हरण-प्रसङ्ग का काव्यात्मक निरूपण हुआ है।

---

[1] अर्थात् हे माधव ! तेरा नाम मेरे मुंह से आधे निमिष के लिए भी दूर न हो। सुख और दुःख जो सुने जाते हैं, वे मेरे लिए समान हैं।

हे बिट्ठल ! तू आधे क्षण के लिए भी मुझे मत भुलाना। तू वास्तव में भक्ति और मुक्ति का दाता है। युवावस्था में मैंने स्त्री के यौवन का ही जप किया। अब वृद्धावस्था में तेरा स्मरण कर बलिहारी होता हू।

हे कृष्ण ! मैं सांसारिक जीवन में रह कर कथीर के समान शिथिल हो गया हूं, अथवा ससार मेरे लिए कथीर तुल्य है इसलिए अब मुझे स्वर्ण के समान बना दे ! हे स्वामी ! यदि नीच कुल में जन्म लेकर भी भजन किया जावे तो वह श्रेष्ठ हो जाता है और उच्च कुल में जन्म लेकर भजन नहीं करने से वह उत्तम गति नहीं प्राप्त कर सकता।

हे शङ्खधारी ! तेरा नाम ही पवित्र है। इस ससार में कटीला माया-जाल है। हरि राग में मिले तो बड़ा राग-रस है अथवा हे हरि ! तुम्हारी कृपा से राग-रस मिले तो राग-रस बड़ा है और वैराग्य मिले तो वैराग्य बड़ा है।

—श्री सावलदानजी आशिया, कड़िया के सग्रह से प्राप्त।

नागदमण और रुक्मिणी-हरण के विषय मे आलोचकों के मत परस्पर विरोधी है। अधिकाश आलोचको ने "रुखमणी-हरण" से नागदमण को श्रेष्ठ माना है—

"'रुषमणी-हरण' एक साधारण श्रेणी का वर्णनात्मक ग्रन्थ है। सायांजी का दूसरा ग्रथ 'नागदमण' है।... ग्रन्थ मे विषयों के वर्णन की जो शैली कवि ने अपनाई है, उससे इसकी विशेषता अधिक बढ गई है। कवि ने कृष्ण की बाल-लीला का वर्णन, नागणी के साथ संवाद तथा कालियमर्दन का सजीव चित्रण उपस्थित किया है। ग्रन्थ की भाषा प्रसादगुणयुक्त तो है ही तथापि विषया-नुरूप वात्सल्य, माधुर्य, ओज, भय, विस्मय आदि भावो की सुन्दर अभिव्यक्ति के कारण उसमे विशेष रस-प्रवाह हो गया है।"[1]

"'रुषमणी-हरण' मे काव्यत्व का कही पता भी नही है। यह एक बहुत साधारण श्रेणी का वर्णनात्मक ग्रन्थ है। 'रुपमणी-हरण' की अपेक्षा सायांजो का 'नागदमण' पर्याप्त सजीव और पुष्टता लिए हुए है।.. इसमें कृष्ण की किशोरा-वस्था, यशोदा के वात्सल्य, गोपियो के प्रेम और कृष्ण-कालिय-युद्ध का चित्रोपम वर्णन है। डिंगल की प्रासादिकता और ओज का यह ग्रथ एक अच्छा नमूना है।"[2]

"नागदमण' का विशेष महत्त्व उसके वर्णनो और सवादो के कारण है। ये बहुत ही पुष्ट और सजीव बन पड़े हैं। वर्णन ऐसे है कि जिनसे सारा का सारा दृश्य अपने आस-पास के वातावरण के साथ साकार हो जाता है। इसी प्रकार सवादो मे, विशेषतया नागणी और कृष्ण के सवादो मे माधुर्य, वात्सल्य, आश्चर्य, भय, उत्साह आदि भावो का एक साथ सुन्दर सामञ्जस्य मिलता है। वे बड़े फबते हुए और उपयुक्त हैं। सरल वर्णन और सुन्दर सम्वाद एक-दूसरे के साथ गुथ कर पाठक की उत्कंठा बढाते हैं और जिज्ञासा उत्पन्न करते है। ××× रुषमणी-हरण वीर-रसपूर्ण एक वर्णनात्मक काव्य है, ...गौण रूप से वीभत्स रस का वर्णन भी मिलता है। इसमे रसानुकूल शब्द-योजना और चित्रमय वर्णन स्थान-स्थान पर पाये जाते हैं। 'नागदमण' की भाँति 'हरण' मे भी सवाद और विविध वर्णनो के प्रसग प्रमुख हैं।"[3]

---

[1] श्री सीतारामजी लाळस, राजस्थानी-शब्द कोष, भाग १, राजस्थानी शोध-सस्थान, जोधपुर, भूमिका पृ० १४४।

[2] श्री मोतीलालजी मेनारिया, राजस्थानी भाषा और साहित्य, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, पृ० स० १३३।

[3] डॉ० हीरालालजी माहेश्वरी, राजस्थानी भाषा और साहित्य, आधुनिक पुस्तक-भवन, ३०-३१ कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता ७, पृ० १७८, १८२।

"यह (रुक्मिणी हरण) और वेलि दोनों ग्रथ एक साथ बादशाह अकबर को निरीक्षणार्थ भेजे गये। बादशाह ने पहले वेलि को सुन कर हरण को सुना। अन्त मे हरण की रचना को श्रेष्ठतर निर्णीत करके श्लेष और व्यग्य मे पृथ्वीराज से कहा 'पृथ्वीराज तुम्हारी वेलि को चारण बावा की हरिणियाँ चर गई।'"[1]

इस प्रकार 'रुखमणी-हरण' एक ओर तो अकबर सम्बन्धी प्रवाद के अनुसार महाराज पृथ्वीराज कृत 'वेलि क्रिसन रुखमणी री' से भी श्रेष्ठ कहा गया और दूसरी ओर विद्वानों ने इसे एक सामान्य वर्णनात्मक कृति माना। हमारे ग्रन्थ-भण्डारो मे सायाजी कृत 'रुखमणी-हरण' की प्रतियां बहुत कम मिलती हैं इसलिए आलोचको की धारणाएँ इस विषय मे स्पष्ट नही हो सकी।

'नागदमण' का प्रचार राजस्थान और गुजरात मे अधिक रहा है। इसकी अनेक प्रतियां यहा के ग्रन्थ-भडारो मे मिलती हैं और इसका प्रकाशन भी बहुत पहले हो चुका है।[2]

'नागदमण' और 'रुक्मिणी हरण' एक ही कवि की कृतिया हैं तथा दोनो मे कवि को समान रूप मे सफलता प्राप्त हुई है। 'नागदमण' मे वात्सल्य, माधुर्य, भय, उत्साह और वीरता का सुन्दर समन्वय हुआ है। कवि को प्रकृति-चित्रण करते हुए पृष्ठभूमि मे काव्य के अनुकूल वातावरण प्रस्तुत करने मे विशेष सफलता मिली है। इसमे सवादो और उक्तियो की छटा भी प्रभावशालिनी है।

रुषमणी - हरण

'रुखमणी-हरण' का मुख्य आधार-ग्रन्थ श्रीमद्भागवत महापुराण है। इसके दशम स्कध मे ५२ वें से ५५ वे अध्याय पर्यन्त रुक्मिणी-हरण का प्रसग है। श्रीमद्भागवत के उक्त अध्याय ही सायाजी झूला और 'रुक्मिणी-हरण' विषयक रचना करने वाले अन्य कवियो के मूलाधार रहे है।

यद्यपि रुक्मिणी-हरण का प्रसङ्ग श्रीविष्णुपुराण और श्रीहरिवशपुराण में भी वर्णित है किन्तु इनमे श्रीमद्भागवत जैसा कथा-विस्तार और पूर्णता नही है।[3] भागवत्कार ने श्रीकृष्ण-रुक्मिणी का राक्षस-विवाह होने की ओर संकेत मात्र किया है[4] किन्तु विष्णुपुराण में इसको स्पष्ट रूपेण राक्षस-विवाह कहा गया है—

---

[1] वेलि क्रिसन रुक्मिणीरी, सम्पा० डॉ० आनन्दप्रकाशजी दीक्षित, विश्वविद्यालय-प्रकाशन, गोरखपुर, उद्धरण, भूमिका पृ० ३५।

[2] सम्पादक श्री हमीरदानजी मोतीसर, पालणपुर, सन् १९३३ ई०।

[3] विष्णुपुराण, अश ५, अध्याय ३८; हरिवशपुराण, अध्याय ५९, ६०।

[4] दशम स्कध, अध्याय ५२, श्लो० १८।

निर्जित्य रुक्मिणं सम्यगुपयेमे स रुक्मिणीम् ।
राक्षसेन विवाहेन सम्प्राप्तां मधुसूदनः ॥

श्रीकृष्ण-रुक्मिणी-विवाह-प्रसग में शृङ्गार, भक्ति और वीरता सम्बन्धी अनेक मार्मिक भावो का समावेश हुआ है अतएव इस प्रसङ्ग के आधार पर विभिन्न भाषाओ मे अनेक रचनाएँ हुईं।

राजस्थानी भाषा मे भी रुक्मिणी-हरण-प्रसङ्ग के आधार पर अनेक कवियो ने अपनी रचनाएँ की जिनमें निम्नलिखित विशेष उल्लेखनीय है—

१ किसनजी री वेल, कर्त्ता— करमसी सांखला, र का स० १६३४ से पूर्व ।
२ वेलि क्रिसन रुकमणी री, कर्त्ता— राठौड़ पृथ्वीराज, र. का. स० १६३७-४४ ।
३ रुषमणी हरण, कर्त्ता— सायांजी भूला (सं. १६३२-१७०३) ।
४ रुक्मिणी-मगल, कर्त्ता— पद्म भक्त, लगभग १६०० वि० ।
५ रुक्मिणी-हरण, कर्त्ता— विट्ठलदास, देवीदास आदि ।

करमसी सांखला कृत 'किसनजी री वेल' २२ द्वालो को एक छोटी रचना है। इसकी एक प्राचीन प्रति वैशाख शुक्ला ३ स० १६३४ की उपलब्ध हो चुकी है।[1] इस वेल में प्रधानत. रुक्मिणी के शारीरिक सौन्दर्य और शृङ्गार का वर्णन है। इन छन्दो में कथावस्तु का विस्तार नही है किन्तु इनका प्रभाव पृथ्वीराज राठौड़ कृत 'वेलि' पर भी लक्षित होता है।[2] करमसी की 'वेल' अपने उक्ति-वैचित्र्य, अलङ्कार-सौन्दर्य और छन्द-सौष्ठव की दृष्टि से परवर्ती रचनाओं के लिए प्रेरक रही है ।

महाराज पृथ्वीराज राठौड़ कृत 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' एक उत्कृष्ट राजस्थानी काव्य-कृति है। इसकी कथावस्तु में क्रमश. मङ्गलाचरण, कवि का असामर्थ्य, कथा की महत्ता, रुक्मिणी के बाल-रूप, वय.सन्धि वर्णन, रुक्मैया द्वारा शिशुपाल को रुक्मिणी के विवाह हेतु लग्नपत्रिका भेजना, रुक्मिणी की विकल दशा और श्रीकृष्ण को पति रूप मे वरण करने की कामना से ब्राह्मण द्वारा श्रीकृष्ण को पत्र भेजना, श्रीकृष्ण का यथासमय कुन्दनपुर पहुँच कर रुक्मिणी का हरण करना, युद्ध-वर्णन, श्रीकृष्ण की विजय, द्वारका में श्रीकृष्ण-रुक्मिणी का विवाह, श्रीकृष्ण-रुक्मिणी का विवाहोपरान्त मिलन, षट् ऋतु-वर्णन, प्रद्युम्न-जन्म और वेलि का माहात्म्य-वर्णन है। पृथ्वीराज कृत 'वेलि' मे शृङ्गार,

---

[1] अनूप संस्कृत-पुस्तकालय, बीकानेर, प्रति स० ६६ ।

[2] राजस्थानी भाषा और साहित्य, डॉ० हीरालालजी माहेश्वरी, आधुनिक पुस्तक भवन, ३०-३१, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता ७, पृ० १६३-६५ ।

भक्ति और वीरता का उक्त अनेक प्रसङ्गो मे सजीव चित्रण हुआ है। साथ ही कवि ने अपनी अनूठी कल्पनाओ के प्रयोग से सम्पूर्ण कथा मे अनुपम भाव-सौन्दर्य की सृष्टि की है। 'वेलि' मे अलङ्कार-सौन्दर्य, प्रकृति-वर्णन मे नवीन उद्भावनाए और भाषा का लालित्य अन्य राजस्थानी काव्यो की अपेक्षा अधिक है।

पद्मभक्त रचित रुक्मिणी-मगल की प्राचीनतम प्रति स० १६६६ फाल्गुन कृष्णा १० की लिखित मानी गई है[1] जिससे इसकी रचना स० १६०० के लगभग अनुमानित की गई है।[2] रुक्मिणी-मङ्गल राजस्थान और गुजरात की जनता में गेय रूप मे भी प्रचलित है। गेय होने से इसमें परिवर्तन और परिवर्द्धन भी होते रहे। श्रीमद्भागवत और मङ्गल की कथा मे कतिपय अन्तर भी है। यथा—शिशुपाल की बरात आने पर रुक्मिणी श्रीकृष्ण के पास ब्राह्मण के द्वारा पत्र भेजती है, रुक्मिणी के माता-पिता उससे सहमत हैं, कृष्ण कुन्दनपुर रवाना होते समय श्री बलदेव को भी तैयारी के साथ आने हेतु सूचित करते हैं और कृष्ण-रुक्मिणी का विवाह कुन्दनपुर में ही होता है, आदि। मङ्गल में राजस्थान की ग्राम्य सस्कृति का चित्रण अधिक है।

विट्ठलदास कृत 'रुखमणी हरण' के कथानक मे विशेष अन्तर यह है कि राजा भीष्मक स्वय ब्राह्मण को बुला कर श्रीकृष्ण को आमन्त्रित करने हेतु द्वारका भेजते है और शिशुपाल की सेना मे असुरो और म्लेच्छो के दल भी सम्मिलित होते है।

'रुषमणी-हरण' की कथा

कवि ने प्रारम्भ मे मगलाचरण देते हुए ही अपनी काव्य-प्रतिभा का परिचय दे दिया है (छन्द सं० १-३)।

कवि ने अपने काव्य-रूपक को भव-सागर तैरने हेतु 'तुवा-जाली' कहा है। कवि भक्त के नाते ईश्वर से प्रार्थना करता है कि अन्य कवियो ने तो शब्द रूपी जहाजो का आश्रय लेकर भवसागर पार किया किन्तु उसने एक तुवा-जाली का ही निर्माण किया है। ईश्वर समुद्र मे डाले गये पत्थरो को तैराने और उस पर से सेना पार उतारने मे समर्थ है तो 'तुवे' पर बैठे हुए को वह कैसे नही तारेगा? इस प्रकार कवि ने प्रारंभ मे ही अपनी विनम्रता, उक्ति-वैचित्र्य,

---

[1] डॉ० हीरालाल माहेश्वरी, राजस्थानी भाषा और साहित्य, आधुनिक पुस्तक भवन, ३०-३१, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७, पृ० २१०-२११।

[2] क श्रीयुत मनोहरजी शर्मा, पद्म भक्त का जनकाव्य रुक्मिणी-मंगल, राजस्थान साहित्य, उदयपुर, सितम्बर, १९५३, पृ० ५। ख. प्रकाशित—राजस्थानी साहित्य समिति, बिसाऊ।

मार्मिक व्यंजना एव काव्यगत कौशल का परिचय देते हुए सच्चे भक्त के नाते ईश्वर के प्रति अपना अधिकार प्रकट करते हुए विश्वासपूर्वक लिखा है—'तुवे वेठां केम न तारे ?'

आगे 'रुषमणी-हरण' के छन्द-संख्या ५ से ५१ तक श्रीकृष्ण-चरित्र का समावेश है। कवि ने राजा भीष्मक और रुक्मैया के सवाद मे श्रीकृष्ण के प्रति अनूठे भाव व्यक्त किए हैं। कवि ने अपनी ओर से श्रीकृष्ण को उपालंभ न देते हुए रुक्मैया द्वारा 'खरी-खोटी' सुनाई है। इस प्रकार कवि ने अपनी भक्ति की एक विचित्रता प्रकट की है।

वेलि-कर्त्ता महाराज पृथ्वीराज और सायांजी की काव्य-रचना में उद्देश्य-भिन्नता स्पष्ट ही दृष्टिगोचर होती है। वेलिकार का ध्यान मुख्यतः शृगार की ओर है किन्तु सायांजी का लक्ष्य श्रीकृष्ण-चरित्र-निरूपण तथा वीर-रस की अभिव्यक्ति है। पृथ्वीराज ने अपनी वेलि मे निहित शृङ्गार की ओर स्पष्ट ही सङ्केत किया है—

सुकदेव व्यास जैदेव सारिखा,
सुकवि अनेक ते एक सन्थ।
श्री-वरणण पहिलौ कीजै तिणि,
गूंथियै जेणि सिंगार-ग्रन्थ॥ ८

सायांजी ने रुक्मैया के शब्दो मे श्रीकृष्ण-लीला का वर्णन करते हुए श्री कृष्ण की आलोचना भी की है (छन्द सं० ७-८ आदि)।

कवि को इस विषय में प्रसग भी सर्वथा अनुकूल प्राप्त हुआ है क्योकि रुक्मैया श्रीकृष्ण का कृष्ण-पक्ष बता कर उनसे रुक्मिणी का विवाह नही करने के लिए अपने पिता को सहमत करना चाहता है और पिता श्रीकृष्ण की प्रशंसा करते हुए रुक्मैया को समझाना चाहते हैं :

कविवर सायांजी ने प्रस्तुत काव्य मे श्रीकृष्ण की अनेक लीलाओ का निरूपण किया है। यथा—

पूतनावध – छन्द सं० ६,
चीर-हरण-लीला – छन्द सं० ९,
दानलीला – छन्द स० १०,
ओखल-वन्धन – छन्द सं० १७,
नागदमन – छन्द स० १९,
गोवर्द्धन धारण – छन्द सं० ३६।

श्रीकृष्ण के परब्रह्म त्रिष्णु-रूप को ओर सकेत करते हुए कवि ने सागर-मन्थन और लक्ष्मी-वरण का भी उल्लेख किया है (छन्द स० ३६) ।

इसी प्रकार कवि ने राम और कृष्ण की एकता भी युग के अनुकूल अनूठे रूप में प्रतिपादित की है (छन्द स० ४०) ।

कवि ने राजा भीष्मक के शब्दो मे तीनो लोको को पवित्र करने वाली गगा और नर्मदा का अवतरण भी श्रीकृष्ण के चरणो से बताया है—

कुवर त्रीलोक जे गग पावन करे।
नरबुदा एहीजरा चरणसू नीसरे ॥ ४६

रुक्मैया राजा भीष्मक की ऐसी बातो की ओर ध्यान नही देता हुआ रुक्मिणी के विवाह हेतु शिशुपाल को लग्नपत्रिका प्रेषित कर देता है (छन्द स० ५२) । आगे कवि ने शिशुपाल द्वारा विवाह हेतु प्रस्थान करते समय के और मार्ग के अपशकुनो का वर्णन किया है (छन्द स० ५३ से ६२) जिससे प्रकट है कि कवि को शकुनशास्त्र का विशेष ज्ञान था ।

तदुपरान्त कवि ने रुक्मिणी की विपन्नावस्था बताते हुए रुक्मिणी की ओर से ब्राह्मण द्वारा श्रीकृष्ण को पत्रिका भेजने का वर्णन किया है (छन्द स० ६३ से ६६) ।

श्रीकृष्ण रुक्मिणी के पत्र में 'निमषरो विलबरो नाथ अवसर नथी' पढते ही रथ मगवा कर कुन्दनपुर की ओर चल दिये (छन्द स० ७७) । ब्राह्मण का श्रीकृष्ण सहित आगमन जान कर रुक्मिणी प्रसन्न हुई । रुक्मिणी ने लक्ष्मी के रूप में ब्राह्मण के आगे नमन किया तो ब्राह्मण को किस बात की कमी हो सकती थी (छन्द स० ७८–८०) ।

बलदेव को श्रीकृष्ण के जाने की सूचना मिली तो वे पूर्ण सैनिक तैयारी के साथ श्रीकृष्ण की सहायता हेतु पहुँचे । थोडे समय के लिए भी अलग नही होने वाले हलधर और गिरिधर कुन्दनपुर मे मिले तथा इनका आगमन सुन कर राजा भीष्मक को प्रसन्नता हुई (छन्द स० ८१ से ६०) ।

आगे कवि ने श्रीकृष्ण के कुन्दनपुर मे स्वागत-सत्कार और विभिन्न पक्षो की चित्तवृत्तियो का वर्णन किया है । कुन्दनपुर मे एक रुक्मैया के विना सभी श्रीकृष्ण के आगमन से प्रसन्न हुए और उनके दर्शन हेतु लालायित हुए (छन्द स० ६१) ।

श्रीकृष्ण के स्वागत मे सज्जनो के मुख 'राजीव जिम सरद रत्त' के रूप मे विकसित हो गये और कृष्ण-रुक्मिणी-परिणय की कामना हेतु अपने सुकृत

अर्पित करने लगे (छन्द स० ६३)। राजा भीष्मक ने श्रीकृष्ण को भक्तिपूर्वक सात खण्डे महल मे ठहराया (छन्द स० ६८)।

इस अवसर पर शिशुपाल भी अपने सहयोगी राजाओ और सैनिको सहित रुक्मिणी से विवाह करने हेतु पहुच जाता है। 'कन्या हेक नै वर दोय चटीया कडे।' के कारण दोनो पक्षों की ओर से युद्ध की तैयारी होती है क्योंकि अब युद्ध अवश्यभावी हो चुका है।

रुक्मिणी अपनो सहेलियो के साथ अम्बिका-पूजन के लिए जाती है तो शिशुपाल और जरासन्ध पूर्ण सावधानी से रुक्मिणी की रत्न के समान रक्षा का प्रबन्ध करते हैं (छन्द स० १०६)।

रुक्मिणी ने ज्योही अम्बिका का पूजन कर श्रीकृष्ण की प्रतीक्षा की तो आकाश-मार्ग से श्रीकृष्ण ने पहुँच कर रुक्मिणी को अपने रथ मे बैठा लिया और समस्त सैनिक मूच्छित हो गये (छन्द स० ११६)।

रुक्मिणी-हरण का एक प्रमुख अंग युद्ध-वर्णन है। श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी का हरण कर ज्योही शङ्ख-नाद किया, समस्त सैनिक लडने हेतु उद्यत हो गये (छन्द स० १२०-१२२)

कविवर सायांजी भक्त होने के साथ ही एक कुशल योद्धा भी थे इसलिये 'रुषमणी-हरण' मे मध्यकालीन भारतीय युद्ध-पद्धति का विस्तृत एव यथार्थ वर्णन उपलब्ध होता है (छ सं १२३-१९४)। युद्ध-वर्णन प्रस्तुत काव्य का एक प्रमुख और महत्त्वपूर्ण भाग है जिससे काव्य वीर-रस-प्रधान हो गया है। इस युद्ध-वर्णन के अन्तर्गत शत्रु-सेना के युद्ध-प्रयाण का, विभिन्न प्रकार के मध्य-कालीन आयुधो का, विविध वाहनो का, वीरो के सिंहनाद का, कायरो की भाग-दौड और घायलो की कराहट का हृदय-स्पर्शी चित्रण है।

सेना-प्रयाण से आकाश-मण्डल धूल से आच्छादित हो गया जिसका वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है—

चक्कवे-चक्कवी पूर रयणी चिया।
गेहणी छोड भरयार दूरें गिया।।
मैण पुड ऊपडो वेह वेहां मली।
आपरां बछांने ना उलखें अनली।। १३०

युद्ध सम्बन्धी वाद्यो की गर्जना और आयुधो का प्रभाव कवि ने इन शब्दों मे व्यक्त किया है—

सद डवर घुतणा रणतूर भेरू ब्रहे।
साल ले रवदां पाच सववां वहे।।
खेलरी नीध्रसण ढीकलीरा होआ।
साल कीया सवद सुण थांट आगण सोहा।। १५०

गाज त्रवाल पड रोल गैंणाइयां ।
सालुले सिंधुयें राग सरणाइयां ।।
कूव ग्या कायरां वाजती काहली ।
वीर आकासमां सूरमां वलकुली ।। १५१

× × ×

धरण-पुड ऊपडी देष मातो धमस ।
आतस वाजीयां माझीयां उकरस ।।
वहें जत्रवाण चंद्रवांण छूटे वला ।
काट भूडड कोडड कर तडला ।। १५४

युद्ध मे श्रीकृष्ण द्वारा किये गये शस्त्र-प्रहार और उसके प्रभाव का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है—

मोषीया वांण सधाण मधुसूदने ।
विसनर धडहडयो जाण धडे वने ।।
झाझा नामी चकर सीस लागा झडण ।
पतर भर जोगणी रगत लागी पीयण ।। १७३
डहडहे डाक होय हाक होकारवण ।
धाय घूमें घुलें भडे भाजण घडण ।।
विसनरा चक्र पडे सर वेरीया ।
दडदडे झाल पष कोरणे कोरियां ।। १७४

श्रीकृष्ण और बलदेव के सामने युद्ध मे शिशुपाल, जरासध और रुक्मैया तीनो ही पराजित हुए। श्रीकृष्ण ने रुक्मैया को बाध लिया किन्तु फिर रुक्मिणी के निवेदन पर उसको मारने का विचार छोड दिया। इस विषय मे कवि ने लिखा है—

भई भगवांनरे वात मनभावती ।
जोवीयो श्रीकिसन सांमुहो जूवती ।।
ताप छोडो प्रभू वीर वहीवा तणो ।
घरा-घर लोक उपहास करसी घणो ।। १८३
तिका आ रुकमणी एम कहसी त्रीया ।
काल कूल वध मारावतो छाकीया ।।
पथ पत-मात पीहर तणो पालसी ।
सासरे मेंहणा सोकरा सालसी ।। १८४

रुक्मिणी के ऐसे वचनो का श्रवण कर श्रीकृष्ण ने रुक्मैया को उसकी आधी मूछ और मस्तक मुण्डित करवा कर मुक्त कर दिया। तदुपरान्त कवि ने युद्ध-स्थल मे प्रवाहित होने वाली लोहू की धाराओ, हाथियो, घोडो और

योद्धाओ की कटी हुई लोथों पलचरो की प्रसन्नता आदि का वर्णन करते हुए श्रीकृष्ण की विजय का उल्लेख इस प्रकार किया है—

नरदले असपती गजपती नरपती।
दुलहणी लावीओ जीप धारामती॥
किसन कारज वने पंथ हेकण कीया।
सेसचो भार उतार आंणी सीया॥ १९४

यहा द्रष्टव्य है कि कवि ने श्रीकृष्ण को पूर्णब्रह्म परमेश्वर और दुष्टो का विनाश कर पृथ्वी का भार उतारने वाला लिखा है एव रुक्मिणी को सीता अथवा लक्ष्मी कहा है।

कवि ने आगे श्रीकृष्ण के रुक्मिणी सहित द्वारिका लौटने, द्वारिका को सजावट और जनता द्वारा किये गये उनके स्वागत का चित्रण किया है—

गाजीया वाजत रन नगारा गडगडो।
चाह वीवाह वहू प्रज ओटे चडी॥
चव्रचे नव्रचे चाहीया चोहटा।
घूघटी अंवरे जाण बाराह घटा॥ १९६
कागरे-कांगरे मोर कगावीया।
पाट पाटवरें हाट पेहरावीया॥
मालीए मालीए हीर हाटक मणी।
जालीए जालीए नगररी जोपणी॥ १९७

तदुपरान्त कवि ने ज्योतिषियो द्वारा श्रीकृष्ण-रुक्मिणी के विवाह को लग्न-वेला निश्चित करने, श्रीकृष्ण के वस्त्राभूषणो द्वारा सज्जित होने और विधि-पूर्वक विवाह होने का वर्णन किया है (छन्द सं० २०३-२१४)। कवि ने विवाह-वर्णन के पश्चात् श्रीकृष्ण-रुक्मिणी की रति-क्रीडा के विषय में यही लिख कर मौन धारण कर लिया है—

रुक्मणी किसनरे रग पूगी रयण।
रग-रस कहत जो सेस देतो रसण॥ २१५

कवि ने काव्य को पूर्ण करते समय श्रीकृष्ण की राज्य-सभा का वर्णन करते हुए उनक महानता, उदारता, कलाप्रियता, न्याय-भावना और गुण-ग्राहकता की ओर भी सकेत किया है—

सूण हव हेक नारद मल सारदा।
नाव अहिलाद पेहलाद सो नारदा॥
गंधर्वा चारण भाट मोटा गुणी।
चोज रूपकरी राग री चाहणी॥ २१८

× × ×

तेथ भेला चरे सिंह सूरही तटा ।
सींह नें बाकरी मीनडी सूवटा ॥
तेथ वरणा वरण सरस वसूदेव तण ।
मांडीयो त्याग द्वारामती महमहण ॥ २२०

कवि ने मंगल-कामना करते हुए काव्य को पूर्ण किया है ।

'रुषमणी-हरण' का काव्य-रूप

भारतीय काव्य-शास्त्रीय परम्परा मे काव्य के श्रव्य और दृश्य नामक दो भेद किये गये हैं । इनमें से श्रव्य-काव्य के पद्य, गद्य और मिश्र नामक उपभेद हैं तथा पद्य के महाकाव्य, खण्डकाव्य और मुक्तक नामक तीन रूप हैं ।

आचार्य विश्वनाथ ने खण्डकाव्य की विशेषता प्रदर्शित करते हुए लिखा है—

खण्डकाव्य भवेत्काव्यस्यैकदेशानुसारि च ।

अर्थात् काव्य के एक अश का अनुसरण करने वाला खण्डकाव्य होता है ।[1]

'रुषमणी-हरण' में महाकाव्य के लक्षणो मे से केवल निम्नलिखित लक्षण मिलते हैं—

१. नायक श्रीकृष्ण पूर्णब्रह्म परमेश्वर हैं एव नायकोचित गुणो से सम्पन्न हैं ।
२. 'रुषमणी-हरण' में वीर-रस प्रमुख है । काव्य का मध्य भाग युद्ध-वर्णन से सम्बद्ध है । प्रारम्भ मे युद्ध की भूमिका और अन्त में युद्ध का परिणाम दिखाया गया है । शान्त एव शृङ्गारादि अन्य रसो का समावेश सहायक रूप मे हुआ है । इस काव्य की शैली अलकृत है ।
३. काव्य का नामकरण काव्यगत कथावस्तु एवं प्रधान घटना रुक्मिणी-हरण के आधार पर हुआ है ।
४. काव्य मे एक ही प्रकार के छन्द का प्राधान्य है ।
५ काव्य के प्रारम्भ में मङ्गलाचरण, वस्तुनिर्देश और आशीर्वचन हैं तथा काव्य में सज्जन-स्तुति और खलनिन्दा का भी समावेश हुआ है ।
६ काव्यवस्तु लोक-प्रसिद्ध और सज्जनाश्रित है ।
७. रुक्मिणी-हरण में मन्त्रणा, सन्देश, सेना, नगर, युद्ध, यात्रा, विवाह आदि का वर्णन है ।
८. रुक्मिणी-हरण धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष-प्राप्ति की दृष्टि से रचित है ।

महाकाव्यगत उक्त प्रकार की विशेषताए होते हुए भी हरण मे एक बडी कमी है कि यह सर्गबन्ध नही है और न इसमें महाकाव्य जैसा कथा-विस्तार ही

---

[1] साहित्य-दर्पण, षष्ठ परिच्छेद, श्लो० ३२९ ।

है। अतएव आचार्य विश्वनाथ के बताए हुए लक्षणों के अनुसार उस कृति को खण्डकाव्य कहना उचित होगा।

'रुक्मणी-हरण' का रस-निरूपण

हमारी काव्य-शास्त्रीय परम्परा मे रस-वादियों ने रस को काव्य की आत्मा कहा है—'वाक्य रसात्मक काव्य।'[1] रस की निष्पत्ति आचार्य भरत के मतानुसार विभाव, अनुभाव और सञ्चारी भावो के सयोग से होती है—'विभावानुभावसचारीसयोगाद्रसनिष्पत्ति।'[2] हरण मे वीर-रस का प्राधान्य है। इसके कर्ता एक चारण कवि थे जिससे काव्य में वीर-रस होना सर्वथा उचित है।

वीर-रस की निष्पत्ति युद्ध, दया, धर्म और दानादि कार्यों में अत्यधिक उत्साह होने पर मानी गई है। वीर-रस के आलम्बन नायक, शत्रु, याचक और दीन है, उद्दीपन विभाव शत्रु का प्रभाव, शक्ति, अहकार, याचक की दीन-दशादि; अनुभाव—स्थैर्य, रोमाञ्च, सत्कार आदि; सञ्चारी भाव—गर्व, धृति, तर्क, स्मृति, हर्ष, दया, आवेगादि और इसका स्थायी भाव उत्साह है।

'हरण' का वीर-रस वास्तव में युद्ध विषयक है जिसके आलम्बन शिशुपाल, रुक्मैया और जरासिन्धादि शत्रु; उद्दीपन इन शत्रुओ की शक्ति, अहंकार और ललकार; अनुभाव श्रीकृष्ण बलदेवादि की युद्ध मे स्थिरता और रोमाञ्चादि तथा सञ्चारी भाव युद्ध मे विभिन्न योद्धाओ का गर्व, धृति, तर्क और आवेग आदि है जिनका निरूपण काव्य मे यथास्थान सफलतापूर्वक हुआ है।

शान्त, शृगार और वीभत्सादि रसो का भी कतिपय स्थलो मे वर्णन हुआ है। 'हरण' के कर्ता एक सिद्ध महात्मा माने गये हैं जिनकी दास्य भक्ति का निरूपण मुख्यत काव्य के प्रारम्भ और अन्त में हुआ है। काव्य का मङ्गलाचरण, कृष्ण-चरित्र-निरूपण और उपसहार भक्ति एव शान्त रस के उत्तम उदाहरण हैं।

'हरण' काव्य में श्रीकृष्ण और रुक्मिणी के विवाह का वर्णन है इसलिये शृंगार-वर्णन का कवि के लिये पर्याप्त अवसर था किन्तु कवि ने रुक्मिणी के बालरूप वर्णन, वय सन्धिवर्णन, शृगार-वर्णन, सयोग, षट्ऋतु-वर्णन को छोड दिया है। सम्बन्धित कथानक में शृगार-रस के अनुकूल अनेक तत्व उपलब्ध हैं किन्तु कवि ने इनकी ओर आँख उठा कर भी नही देखा है। सयोग-शृगार के वर्णन मे कवि ने यही लिख कर सन्तोष प्रकट किया है—

---

[1] विश्वनाथ, साहित्यदर्पण, १–३।

[2] नाट्य-शास्त्र, ६–३२।

कवण कव सकत रसण हेकण कहे।
लेहणो गेहणो तास लषमी लहे॥
रुषमणी किसनरे रग पूगी रयण।
रग-रस कहत जो सेस देतो रसण॥[1]

महाकवि पृथ्वीराज राठौड ने इसी कथानक के आधार पर स्वरचित 'श्री किसन रुकमणी री वेलि' में मर्यादित शृङ्गार का कलात्मक और चमत्कारिक निरूपण किया है। वेलि मे रुक्मिणी के वालरूप, वयःसन्धि, सोलह शृगार तथा सुरतांत वर्णनो के साथ ही षट्ऋतु वर्णन और प्रद्युम्न-जन्म आदि का वर्णन काव्यकला को दृष्टि से पूर्ण रोचक है। इसके विपरीत युद्ध-वर्णन मे जैसी पूर्णता और विस्तार 'हरण' की है, उसका 'वेलि' मे अभाव है। वेलि मे शृगार, शान्त और वीर रसो की त्रिवेणी प्रवाहित हो रही है तो 'हरण' मे शान्त और वीर-रस का सफल समन्वय हुआ है।

शान्त रस के अन्तर्गत 'हरण' मे कवि का भक्ति-स्वरूप निराला ही है क्योकि इसमे दास्य-भक्तिजनित विनम्रता, वालरूप-चित्रण और माधुर्य के साथ ही कृष्ण की कटु आलोचना का भी समावेश हुआ है।

अलकार और छन्द

'रुषमणी-हरण' के कर्ता सायाजी मे कविजनोचित सस्कार मूलतः वर्तमान थे। परिणामस्वरूप काव्य का एक भी छन्द ऐसा नही जो किसी न किसी रूप मे अलंकृत नही हुआ हो। अनुप्रास, श्लेष, यमक और रूपकादि सामान्य प्रचलित अलकार तो इस काव्य मे यत्र-तत्र दृष्टिगोचर होते ही हैं किन्तु मध्यकालीन राजस्थानी काव्य मे प्रचलित 'वैणसगाई' अलकार का निर्वाह प्रायः समस्त छदो मे हुआ है। मध्यकालीन राजस्थानी कवियो की ऐसी मान्यता रही कि 'वैण-सगाई' का निर्वाह होने पर काव्य मे किसी प्रकार का दोष नही रहता—

आवै इण भाषा अमल, वैण सगाई वेस।
दग्घ अगरा वद दुगुणरो, लागै नहँ लवलेस॥

पारस्परिक वैर अथवा दोष मिटाने हेतु परिवारो मे विवाह-सम्बन्ध निश्चित कर लिये जाते थे अर्थात् वाग्दान सम्बन्ध स्थापित किया जाता था। 'वयण सगाई' का अर्थ वाग्दान-सम्बन्ध और वर्ण-सम्बन्ध दोनो से ही है। इस विषय मे लिखा गया है—

---

[1] छद स० २१५, पृ० स० ६५।

वयण-सगाई वेस, मिल्यां सांच दोपण मिटै
किरायक समैं कवेस, थपियो सगपण ऊथपैं ॥
खून किया जाणैं खलक, हाड वैर जो होय।
वैण-सगाई वैण तो, कळपत रहे न कोय ॥
—रघुनाथरूपक गीतां रो

इस प्रकार मध्यकालीन राजस्थानी काव्य मे वयण-सगाई अलकार का निर्वाह छन्द के प्रत्येक चरण मे अनिवार्य हो गया था। इसके अभाव मे प्रचुर मात्रा मे वहुत से काव्य-कला-पूर्ण छन्द भी स्वयं कर्ताओ द्वारा ही नष्ट कर दिये गये। सर्व प्रथम राजस्थानी भापा के समर्थ कवि महाकवि सूर्यमल ने 'वयण-सगाई' के वन्धनो को शिथिल करते हुए लिखा—

वैण-सगाई घाळियां, पेषीजै रस पोस।
वीर हुतासण वोल मे, दीखैं हेक न दास ॥
—वीर सतसई

सूर्यमल का मत था कि वयण-सगाई के प्रयोग से रस का पोपण देखा जाता है किन्तु वीररसपूर्ण काव्य मे कोई दोष नही होता।

वयण-सगाई तीन प्रकार की मानी गई है—

वरण-मित्त जू घरण विध, कवियण तीन कहंत।
आद अधिक समझघ अवर, न्यून अक सो अंत ॥

उत्तम, मध्यम और अधम तीन प्रकार मे उत्तम वैण-सगाई के तीन उप-भेद हैं जिनके उदाहरण रुक्मिणी-हरण में इस प्रकार हैं—

१ आदि मेल – चरण मे प्रथम शव्द के आदि वर्ण की आवृत्ति उसी चरण के अन्तिम शव्द के आदि में हो। यथा—

भल भला राय हर राय कुंअरी भली। २ २[1]
वात वीमाहरी सोछ कीजे वली। ५ ३

२ मध्य मेल – चरण मे प्रथम शव्द के आदि वर्ण की आवृत्ति उसी चरण के अन्तिम शव्द के मध्य मे हो—

वमल पत मात कुल छात जणावियो। १ २
चोहटे चाल च्यु कहू यें राचना। १२ ५

३ अन्त मेल – चरण मे प्रथम शव्द के आदि वर्ण की आवृत्ति उसी चरण के अन्तिम शव्द के अन्त में हो—

---

[1] प्रथम अङ्क छन्द-संख्या के और द्वितीय अङ्क पृष्ठ-संख्या के सूचक हैं।

दूसरा दुरसठ ततकास कीधा तद्दे। २५.६

तवें जरसंघ ससपाल रहें सावतो। १३६ ४३

मध्यम कोटि की वैण-सगाई असमान स्वरो, स्वर और य अथवा व का मेल होने पर कही जाती है जिसके कतिपय उदाहरण इस प्रकार है—

अवर अपरोग थया राजवस एतला। ४ ३

ऊपजे आहीज मत बुधपण आवए। ४.३

ओलपीआ चरण वावरण वेवसा ॥ ५६ १६

अधम कोटि की वैण-सगाई विभिन्न वर्गों जैसे 'ट' वर्ग और 'त' वर्ग अथवा अल्पप्राण और महाप्राण वर्णों का मेल होने पर मानी जाती है। यथा—

तात नें मात वीवाह धड भड टली। ८.४

चोकरा आय कुमेरारा छोडोया। १७ ७

'हरण' के अनेक छन्दो मे 'वैण-सगाई' का निर्वाह नही भी देखा जाता, जिसका कारण यही हो सकता है कि तब तक 'वैण-सगाई' की राजस्थानी काव्य मे विशेपता अवश्य हो गई थी किन्तु उसका निर्वाह अनिवार्य नही हो पाया था।

'हरण' की प्राप्त सभी प्रतियों मे काव्य मे प्रयुक्त प्रमुख छन्द का नाम 'झपताल' मिलता है। झपताल का प्रयोग ३ गाहा चोसर और १ दूहे के पश्चात् अन्त तक हुआ है। ख प्रति के अन्त मे २ कवित्त अधिक हैं। 'झपताल' नामक छन्द का विवरण सुप्रसिद्ध छन्दःशास्त्रीय ग्रन्थ 'छन्द प्रभाकर'[1] नामक ग्रन्थ मे उपलब्ध नही होता। चारण कवि किसनाजी आढा रचित 'रघुवरजस-प्रकास' नामक राजस्थानी काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ मे झंपताल के लक्षण उदाहरण सहित इस प्रकार दिये हैं—

छंद झंपताळ

गुर अत मत चवदह गिणै। भल झपताळी कवि भणै ॥

रघुनाथ जेण रिझावियो। पद उरध तै कवि पाइयो ॥ १८[2]

कवि हरराज कृत 'पिंगलसिरोमणी' नामक राजस्थानी काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ[3] में 'झंपताळ' के निम्नलिखित लक्षण वताये गये हैं—

रिस मेघ मत्त विसामय ताटक रिस फिर रसतय।

झपटाळ झफालिय इण दोय नांमा दाखिय ॥[3]

---

[1] कर्त्ता-श्री जगन्नाथप्रसाद 'भानु', प्रकाशक—भारत जीवन प्रेस, काशी।

[2] सम्पादक—श्री सीताराम लाळस, प्रकाशक—राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर।

[3] संपादक—श्री नारायणसिंह भाटी, प्रकाशक—राजस्थानी शोध सस्थान, चोपासनी, जोधपुर, पृ. ६३.

कालान्तर मे छन्द झपताल चरणान्त मे गुरु सहित १४ चौदह मात्राओं का ही प्रचलित हुआ जैसा कि कविया करणीदानजी कृत 'सूरजप्रकास' से प्रकट होता है—

छंद जात झपताळ

वारियाम चौंड वखांणियै ।
जगजीत भ्रद घर जांणियै ।
असुराण रण जुध अप्पियौ ।
लड़ि फेर मडोवर लियौ ॥ ६८

पह खांनजादा पाछटे ।
इळ नागपुर गढ़ धाछटे ।
जस धरम व्रद भुज छाजिया ।
दनि सात सांसण करि दिया ॥ ६९ ॥[1]

उक्त लक्षण 'हरण' मे प्रयुक्त 'झपताल' मे पूरे नही उतरते । साथ ही प्राचीन प्रतियो में छन्द सम्बन्धी एकरूपता भी नही है। पाठ-सम्पादन की वैज्ञानिक विधि के अनुसार प्राचीन पाठो को विना किसी परिवर्तन के—यथारूप ग्रहण किया गया है । ऐसी अवस्था मे यही सभावना प्रकट की जा सकती है कि 'हरण' में प्रयुक्त छन्द 'झपताल' प्रचलित 'झंपताल' का कोई भेद है अथवा लिपिकारो ने असावधानी रक्खी है । 'क' प्रति के लिपिकर्ता प० कीर्तिकुशल गणि को, जिनका पाठ प्रस्तुत सम्पादन मे मुख्य रूप मे ग्रहण किया गया है, उक्त दोष नही दिया जा सकता क्योकि इनकी लिपि स्पष्ट और कुशल हाथों से लिखित है ।

"रुषमणी-हरण" में संवाद और सूक्तियां

'हरण' मे सवादो और सूक्तियो की छटा अनेक प्रसङ्गो मे विशेष रुचिकर हो गई है । सवादो से सम्बन्धित पात्रो के चरित्र-चित्रण और प्रसङ्ग-निरूपण में चमत्कारपूर्ण स्वाभाविकता का समावेश हो जाता है। प्रस्तुत काव्य मे मुख्यत. निम्नलिखित सवाद दर्शनीय हैं—

१ भीष्मक और रुक्मैया सवाद, छन्द स ३-५१,
२ श्रीकृष्ण और विप्र (सदेशवाहक) सवाद, छन्द सं. ७०-७१,
३ जरासिंध और शिशुपाल सवाद, छन्द सं १३९-१४०, और
४ जरासिंध और बलदेव सवाद, छन्द स. १७६-१७९ ।

---

[1] सम्पादक–श्री सीताराम लाळस, प्रकाशक–राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, भाग १, पृ. २४४।

उक्त संवादो मे भीष्मक-रूक्मैया-सवाद सुविस्तृत है क्योंकि इसमे भीष्मक और रूक्मैया दोनो की दृष्टि से श्रीकृष्ण-चरित्र का विवेचन हुआ है । रुक्मैया कृष्ण को एक सामान्य ग्वाला बताता है और भीष्मक उन्हे पूर्णब्रह्म परमेश्वर मानते है । सुविस्तृत सवाद और विवेचन के उपरान्त भी दोनो व्यक्ति अपने-अपने पक्ष पर ही दृढ रहते हैं जिसके परिणाम स्वरूप काव्य में सघर्ष की नीव पड़ती है । रुक्मैया राजा की इच्छा के विपरीत शिशूपाल को लग्नपत्रिका भेज देता है और राजा अन्त तक श्रीकृष्ण के पक्ष में रहते हैं ।

काव्यगत दूसरा प्रमुख सवाद श्रीकृष्ण और सदेश वाहक विप्र का है (छन्द स ७०-७१) । दो छन्दो के छोटे सवाद मे हो श्रीकृष्ण ने विप्र की कुशल-क्षेम पूछते हुए उसका परिचय प्राप्त कर द्वारिका आने का कारण ज्ञात कर लिया । तोसरा मुख्य सवाद युद्ध-वर्णन के अन्तर्गत जरासघ और शिशुपाल का है (छन्द स १३९-१४०) । इस सवाद मे दोनो ही व्यक्ति एक दूसरे को तत्परतापूर्वक युद्ध करने के लिये कहते हैं । चौथे जरासघ और बलदेव के सवाद (छन्द स. १७६-१७९) में जरासघ की गर्वोक्तियो और बलदेव के तथ्यपूर्ण वचनो का समावेश है ।

काव्यगत अन्य गौण सवादो मे बलदेव-प्रतिहार सवाद (छन्द स ८१-८३) और लग्नवेला निश्चित करने के प्रसङ्ग में वसुदेव-देवकी तथा विप्र का सवाद (छन्द स. २०३-२०५) आदि हैं ।

सवाद-लेखन मे सायाजी पूर्ण कुशल हैं । अनेक बार एक ही छन्द में प्रश्न एव उत्तर का समावेश हुआ है । परिस्थिति और मनोवृत्तियो के अनुकूल सवादो की योजना में कवि को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है जिससे नाटकीय छटा की झलक अनायास ही मिल जाती है ।

काव्यगत अनेक सूक्तिया सम्वन्धित वातावरण के सर्वथा अनुकूल होती हुई पाठको का ध्यान आकर्पित करने मे सफल हुई हैं । ऐसी सूक्तियो से काव्यगत प्रसङ्ग प्रभावपूर्ण बन गये है । 'हरण' की कतिपय सूक्तिया निम्नलिखित हैं—

१. आगली आषता वाह एणे गली । ७-४
२. हेतरा जुगतसु जगत वैकुठ हुवे । ६७-२२
३. कन्या हेक नें वर दोय चडीया कडे । १०३-३२
४. हरि तणो जाणीयो सोइ आषर हुसे । १०४-३३
५. राषीये रतन जिम जतन कर रुषमणी । १०६-३३
६. चालतो कोट चोफेर लीधो चुणी । ११७-३७

७ कूद ग्या कायरा वाजती काहली । १५१-४७

८. किसन कारज वने पंथ इेकण कीया । १६४-५६ आदि ।

"रुषमणी-हरण" की भाषा-समीक्षा

कृति विशेष की भाषा-समीक्षा में मुख्यतः सम्वन्ध-वोधक कारक-विभक्तियां और क्रियापद सहायक होने हैं। 'हरण' मे मुख्यतः 'रा', 'री', 'रे', और 'रो' सम्वन्ध-वोधक राजस्थानी विभक्तियां प्रयुक्त हुई हैं। यथा—

आपरे (१ १), मातरे (४ ३), वीमाहरी (५.३), नदरे (११ ५), चीररो (११ ५), गालरी (११.५), नदरी (१२ ५), वसूदेवरा (१४.६), पंडरी (१५.६), कुमेररा (१७ ७), जमरावरो (१८.७), आपरो (१८८ ५८), वलदेवरी (१९२.५६), वलदेवरो (१९२.५६), किसनरो (१९२ ५६), लोकरो (२१०.६४), किसनरे (२१५ ६५), रभरा (२१७-६६), रूपकरी (२१८.६६), रागरी (२१८.६६) और लोहरे (२१९.६७) आदि।

कतिपय स्थानो मे राजस्थानी सम्वन्ध-वोधक विभक्तियाँ—तणा, तणी, तणे, तणो, तणौ (<तस्य स.) का भी व्यवहार हुआ है। जैसे—

तणो (३ १), (६.३), (३० १०); तणी (७.४), तणे (९ ४, १८ ७), तणा (९ ४, १० ५), तणौ (३१.११) आदि। साथ ही ची और चो विभक्तियो का भी व्यवहार हुआ है—

तातची (२३.९), सकलची (९२ २९), वलदेवची (९९'३१), लगनचो (१०३.३२), रेवतीचो (१७० ५२) और वदनचो (२१२ ६४), आदि।

चा, ची, चे, चौ आदि सम्वन्ध-वोधक विभक्तियो का व्यवहार मराठी भाषा मे भी होता है। इस विभक्ति का अनेक राजस्थानी काव्यो मे प्रयोग हुआ है। यथा—

वेलि क्रिसन रुक्मिणी री

रामा अवतार नाम ताइ रुषमणि, मान सरोवरि मेरुगिरी
वाळकति करि हंस चौ वाळक, कनकवेलि विहुँ पान किरि ॥ १२ ३

× × ×

हुई हरख घणै सिसुपाळ हालियो, ग्रथे गायौ जेणि गति।
कुण जाणै सँगि हुआ केतला, देस-देस चा देसपति ॥ ३७ ८

× × ×

कमनीय करे कुंकूं चौ निज करि, कलँक धूम काढे वे काट।
सम्प्रति कियौ आप मुख स्यामा, नेत्र तिलक हर तिलक निलाट ॥ ८७ १९

× × ×

सेत्रन्ति नवै प्रति नवा सवे सुख, जग चां मिसि वासी जगति ।
रुपमिणि रमण तणा जु सरद रितु, भुगति रासि निसि दिन भगति ।। २१५-४४[१]

हरिरस

पाप करतो मो मन पापी, ताहरै नाम जाय सह तापी ।
नारायण ! तो सम को नांही, चवदै भुवन हुकम चा माही ।। ११७.४६

× × ×

पहलो नांम प्रमेस रो, जिय जग मडियो जोय ।
तीन भवन चो रज्जियौ, सुफल करेसी सोय ।। १६६-८१[२]

सूरजप्रकाश

तारग मत्र आदेस तो, दिढ चा रग निस संधि दिव ।
सारग नयण उमया सुवर, सीस गग धारग सिव ।। ६-४

× × ×

वय घणस्याम नेत्र दुति वारज, कृत अवतार सुरां चे कारज ।
भ्रम नृप उग्र सनातन धारे, वेद म्रजाद धरम विसतारे ।। ३७.६४[३]

वीर-सतसई

देराणी द्रग गीध रा, जेठ श्रवण सै जोड ।
कोसा चा सुण ढोलडा, ऊठे नीद विछोड ।। ६३.३६
भागो कत लुकाय घण, ले खग आता धाड ।
पहर धणी चा पुंगरण, जीती खोल किंवाड ।। १०६ ५६
भाभी कुल खेती विचा, भय न हुवे धव भग ।
चीत खटक्कै मास चो, कुलटा सौक कुसग ।। १०८.६१
ओरा की फल जागिया, लडणो जाग लकाळ ।
गुडै धणी चा गाजणा, तौ माथै त्रबाळ ।। १२३ ६८[४]

---

[१] राठौड़ पृथ्वीराज (वि.स १६०६–१६४४) कृत, सम्पा० डॉ० आनन्दप्रकाशजी दीक्षित विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर, १६५३ ई० ।

[२] कर्ता–ईसरदासजी (वि सं. १५६५-१६७६) सम्पा० श्री बद्रीप्रसादजी साकरिया, सादूळ राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बीकानेर, १६६० ई० ।

[३] कर्ता–कविया करणीदानजी, भाग १, सम्पा० श्री सीतारामजी लाळस, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, १६६१ ।

[४] कर्ता–सूर्यमलजी मिश्रण, सम्पा० डॉ० कन्हैयालालजी सहल और ईश्वरदानजी आशिया, बगाल हिन्दी मण्डल, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता ।

'हरण' मे प्रयुक्त क्रियापदो के कतिपय उदाहरण इस प्रकार हैं—

जोडिस (२ १), गाइस (१ २), भाषीयो (३ ३), आविश्रो (५ ३), दोडीश्रो (३२ ११), वाचसे, सुणसे (३४.१२), सुणौ (३७.१३), आणी (४० १३), छो (४३ १४), करी (४४ १४), होस्ये (५०.१६), जाइस (६५ २१) छे, पुहचसा, (६६ २१), कहाडीयो (७१ २३), आवीयो (७८, ७९ २५), तेडीया (८४.२७), हूँती (९२ २९), परणज्यो (९३ ३०), दीजीये, लीजीयें (१०१ ३२), हुसे (१०३.३२), हुसे, दीनो (१०४ ३३), देसी (१०७ ३४), आण, हूई (१०८.३४), वांधिश्रा (१०९ ३४), नामीयो (११२.३५), आषोयो (११३ ३५), सचरी (११५.३६), हालियो (११६ ३६), लीधो (११७ ३७), हुओ (११९ ३७), चाल्या (१२२ ३८), रह्यौ (१२५ ३९), हुवै (१२६ ३९), निया (१३० ४०), वालता (१३४.४२), कूद ग्या (१५१ ४७), करसी (१८३ ५६), कहसी (१८४.५७) और पूगी (२१५ ६५)।

रुक्मिणी-हरण मे प्रयुक्त कतिपय सर्वनाम-शब्द निम्नलिखित है—

हूँ (मै, २ १), केम (३ १), मूझ (३.३), तुमे (तुमने, ३ ३), ए (यह, ७ ४), एणें (७ ४), एरां (१० ५), अठे (१२.५), मोनू (१४ ६), येरे (१५ ६) एण (१७.७), जेरे (१८ ७), जेण (१९ ७), एहीजरा (२० ८), तण (उस, २४ ९), जासरे (२८.१०) और थाहरी (३८.१३)।

हरण में प्रयुक्त कतिपय विशेषण शब्द इस प्रकार हैं—

भल (१ १), ऊजली (२.२), चवद (३ ३), घणे (६ ३), साच (६.४), सांमलो (१४ ६), हेक (१५.६), दोय (१९.७), सहि (२० ८), त्री (२१ ८), कोट (करोड, २२ ८), नेअडी (३२ ११), कूड (३३ ११), कोड (३३,११), नेडो (३४ १२), छानू (३७ १२), छेहलो (४१ १४), वेग (५२ १७), हेकला (७१ २३), दूजे (७६ २४) और तीजा (७६ २५)।

'हरण' की भाषा में इस प्रकार 'राजस्थानी' तत्त्वो का आधिक्य है किन्तु गुजराती तत्त्व भी लक्षित होते हैं। यथा—

जेणें (१ १), वत्रीस, तेत्रीसमो (७ ४), एहवो (१७ ७), दीकरा (१९ ७), मूकावीया (२७.१०), केम (३५.१२), थयो (३६.१२), आपीयो (५२.१७) आदि।

इस प्रकार ज्ञात होता है कि 'हरण' की भाषा राजस्थानी है जिसमे गुजराती के मूल रूप भी वर्तमान हैं। आधुनिक गुजराती और राजस्थानी दोनो ही भाषाओं का विकास-क्रम समझने मे 'हरण' की भाषा विशेष सहायक है।

"रुषमणी-हरण" की प्रतियों का परिचय

'रुषमणी-हरण' के सम्पादन मे तीन प्रतियो का प्रयोग हुआ है जिनको क्रमशः 'क', 'ख' और 'ग' नामक सङ्केतो से सम्बोधित किया गया है। इन प्रतियो का परिचय इस प्रकार है—

प्रति क. – राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान के केन्द्रीय जोधपुर-सग्रहालय की प्रति क्रमाङ्क ८७२। लिपिकर्ता प कीर्तिकुशल गणि। लिपि-स्थान–श्रीमानकूआ, कच्छ। लिपिकाल-सवत् १९०४, चैत्र शुक्ला १०, गुरुवार। पत्र सख्या–१२। प्रति पृष्ठ पक्ति सख्या १३। प्रति पक्ति अक्षर सख्या–४५-४८। आकार २३ ८×११ ५ सी एम.। यह प्रति सुवाच्य और सुन्दर लिपि मे एक परम कुशल लिपिकर्ता द्वारा लिखित है। हमारे यहा प्राचीन एव जीर्ण प्रतियो की प्रतिलिपि करने की सुदीर्घ परपरा रही है और यह प्रति भी इसी परपरा की द्योतक है। "यादृश दृष्ट्वा पुस्तक तादृशा मया लिपि कृता" लिखते हुए लिपिकर्ता ने कृति के मूलरूप को सुरक्षित रक्खा है। इस प्रकार यह प्रति सर्वथा विश्वसनीय है और इसको सम्पादन मे प्रमुख स्थान दिया गया है।

प्रति ख – ख प्रति की प्रतिलिपि सेठ श्री सूरजमल जालान पुस्तकालय, कलकत्ता के मत्री मान्यवर श्री रामकृष्णजी सरावगी के सौजन्य से प्राप्त की गई है। यह प्रतिलिपि ठा. भगवतीप्रसादसिंह वीसेन ने राजस्थानी रिसर्च सोसाइटी, कलकत्ता के लिये ता. १९ सितम्बर १९३५ ई० को रामासणी (जोधपुर) के राव हरिदानजी के सग्रह से की थी। इस प्रतिलिपि मे दो-दो चरणो का एक छन्द मानते हुए 'झपतालो' की सख्या ४३० दी गई है। क प्रति के दो-दो चरणो के अनुसार छन्दो की गणना की जावे तो छन्द सख्या ४४१ होती है। इस प्रकार ११ 'झपताल' ख प्रति मे कम है जिनका निर्देश पाठ-सम्पादन के समय यथा-स्थान किया गया है। ख प्रति के अन्त मे २ 'कबत' अधिक है जिन्हें यथा-स्थान प्रकाशित किया गया है। इस प्रतिलिपि मे प्रति का लखन-काल उपलब्ध नही है जिससे ज्ञात होता है कि मूल प्रति मे भी यह अप्राप्त है।

प्रति ग – ग प्रति की प्रतिलिपि मान्यवर श्री अगरचन्दजी नाहटा, अभय जैन ग्रन्थालय, वीकानेर के सौजन्य से प्राप्त हुई है। इस प्रति मे क के अनुसार चार-चार चरणो का एक 'छद झपताल' मानते हुए छन्द-सख्या दी गई है। इस प्रति की छन्द-सख्या २२३ है जिसमे प्रारभिक दूहादि भी सम्मिलित है। क. प्रति मे गाहा चोसर ३+दूहा १+झपताल २२० अर्थात् पूर्ण छद सख्या २२४ है। इस प्रकार ग प्रति मे छन्द कम हैं जिनका सम्पादन के समय यथा स्थान निर्देश कर दिया गया है। इस प्रति मे भी लिपिकाल उपलब्ध नही है।

प्रस्तुत सम्पादन मे उक्त प्रतियो के सम्पूर्ण पाठों और पाठान्तरो को विधिवत् अङ्कित किया गया है। अनेक सम्पादक अपनी इच्छानुसार प्राचीन पाठ में परिवर्तन करते हुए पाठान्तर अत्यल्प और नाम मात्र के लिये देते हैं। इस प्रकार प्राचीन पाठो का मूल रूप प्रकाशित नही हो पाता। प्रस्तुत सम्पादन मे हमने काव्य की उक्त तीनों ही प्रतियो के विभिन्न प्राचीन पाठों को विधिपूर्वक पूर्णरूपेण देते हुए उनके मूल रूप को सुरक्षित रखने का प्रयत्न किया है।

कवि के अपर काव्य 'नाग-दमण' की बीसो ही प्रतियाँ हमारे ग्रन्थ-भण्डारो मे प्राप्त हो जाती है किन्तु 'हरण' की उक्त प्रतियाँ ही प्राप्त हो सकी हैं। स्व. श्री मोहनलाल दलीचन्द देसाई ने अवश्य ही एक प्रति का परिचय *अज्ञात कर्तृक* बताते हुए दिया है।[1]

'हरण' के मूल पाठ का पाठान्तरो सहित सम्पादन और मुद्रण पूर्ण होने पर भी इसकी प्रतियो की प्राप्ति हेतु प्रयत्न होते रहे जिसके परिणाम-स्वरूप एक और प्रति (घ.) प्रतिष्ठान मे उपलब्ध हुई जिसका विवरण इस प्रकार है—

क्रमाङ्क—१९४३४।
लिपिकाल-संवत् १७८८ वर्षे वैसाष वदि ११ दिने बुधवारे।
आकार—२२ ७ × १० सी.एम.।
पत्रसख्या—८।
पक्तिसख्या, प्रति पृष्ठ—१५।
अक्षरसख्या प्रति पक्ति—५६-६०।
आदि—॥र्द०॥ श्रीजानकीवल्लभाय नम· ॥ अथ रुषमणीहरण लिख्यते।

आरजा

भल कवि वाहण भले गुण भरीया। उकति विसेष पार ऊतरिया।
काल्हाही वाल्हा जिण करीया। त्राये आप आपणे तरीया॥ १
सबद जिहाज वैण टकसाली। तरि तरि सुकवि गया तिण ताली।
महण ससार तरिण वनमाली। जोडिस हूई तूवाजाली॥ २
दरीआ ऊपरि पाथर डारै। ऊपरि प्रलव सेन उतारै।
सुवयण किसन तणो मति सारै। तूवै बैठां केम न तारै॥ ३

दूहा

हू गायस रुषमणि हरण। मंगलच्यारि मुकंद।
कुल जादव पूरण कला। प्रगटे परमाणद॥ ४

---

[1] जैन गुर्जर कविओ, भाग ३, पृ. स. २१९५-२१९६।

छद झंफताल

प्रगट थया किसन वेसदेव यादव पिता।
श्रीया रुषमणि हूई राव भीमक सुता।
विमल पित मात कुल छात जाणावीयो।
लार भरतार अवतार लिषमी लीयो ॥ ५

अन्त—

आव तेथें रहे सरस वरणा वरण।
माडीयो त्याग द्वारामती महमहण।
करण लीधो जिही तिमो छसों हठ करी।
साईयें राघीयो त्याग वृजसूदरी ॥ २३ [२२३]

इति रुषमणीहरणं। श्री.। संवत् १७८८ वर्षे वैसाष वदि ११ दिने बुधवारे लिखित प० षुस्यालचद वाचनार्थं। श्री काणाणा ग्रामे। श्रीरस्तु ॥

उक्त चारो ही प्रतियो में पाठ-भिन्नता के कतिपय उदाहरण इस प्रकार हैं—

क. ग घ. भल, ख. वड (१ १), क. वहण, ग घ. वैण, ख वयैण (२ १); क ग घ टकसाली, ख टकसाळी (२ १); क सकव गया, ग घ सुकवि गया, ख गया सुकव (२ १), क ख तण, ग घ तिरग (२ १); क. ग घ ससार. ख. सैसार (२ १); क. जोडिस हूँ एक, ग जोड़िस हूँ, घ जोडिस हूँई, ख जोड चहूँ पण (२ १), क ग घ दरीआ, ख दरिया (३ १), क ख ऊपर, ग उपरि, घ ऊपरि (३ १), क पत्थर, ख पथ्थर, ग प्रलव, घ पाथर (३ १), क समर क्रसन तणो, ग सुण पण किसन तणौ, घ सुवयण किसन तणौ (३ १), क तूवे वेठां, ग. तुबै बैठा, घ तूंवै बैठां, ख तूबै बैठ (३ १)।

इस प्रकार ज्ञात होता है कि क ग और घ प्रतियो मे समानताएं अधिक है एवं ये प्रतिया एक ही शाखा की हैं तथा ख प्रति किसी भिन्न शाखा की है।

पाठको की सुविधा हेतु परिशिष्ट १ मे शब्दार्थ और टिप्पणिया भी दी गई हैं। 'हरण' के अनेक शब्दार्थ प्रयत्न करने पर भी स्पष्ट नही हो सके हैं एव पाठको की जानकारी हेतु प्रस्ताव के रूप में ही प्रस्तुत किये गये हैं। शब्दार्थ और टिप्पणियो के लेखन में सम्पादक को आदरणीय श्रीमान् गोपालनारायणजी बहुरा, सीतारामजी लाळस, नारायणसिंहजो भाटो और लक्ष्मीनारायणजी गोस्वामी से महत्त्वपूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है तदर्थ सम्पादक इनका बहुत आभारी है।

उपसंहार

भक्त कवि सायांजी झूला का 'रुषमणी-हरण' राजस्थानी साहित्य का एक बहुमूल्य रत्न है जिसका प्रकाशन प्राप्य विभिन्न पाठान्तरो सहित 'राजस्थान

पुरातन ग्रन्थ-माला' मे किया जा रहा है। 'हरण' के प्रकाशन द्वारा सदियो मे प्रवाद रूप मे प्रचलित मुगल सम्राट अकबर की उक्ति के सत्यासत्य का निर्णय भी सुविज्ञ पाठक कर सकेंगे कि 'पृथ्वीराज ! तुम्हारी 'वेल' को चारण बावा का 'हरण' चर गया।'[1] 'हरण' का युद्ध-वर्णन वेलि से अधिक सजीव और सपूर्ण है किन्तु वेलि की अनुपम भाव-व्यजना, अनूठे उक्ति-वैचित्र्य और मौलिक कल्पनाओ की ऊचाई तक 'हरण' छलाग नही लगा सका है।

मै उक्त सभी महानुभावो को अपना हार्दिक धन्यवाद समर्पित करता हू जिन्होने 'हरण' की प्रतिया प्रेषित की अथवा शब्दार्थ-निर्धारण और टिप्पणी-लेखन मे अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है। श्रीमान् परम श्रद्धेय पद्मश्री मुनि-जिनविजयजी, पुरातत्त्वाचार्य और परम आदरणीय गोपालनारायणजी बहुरा ने इस महत्त्वपूर्ण काव्य को 'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' मे प्रकाशनार्थ स्वीकृत कर मेरा मार्ग-प्रदर्शन किया है, तदर्थ मैं आपका बहुत आभारी हूँ।

राजस्थान प्राच्य-विद्या प्रतिष्ठान,
रेजीडेन्सी रोड, जोधपुर
महाशिवरात्री, शक स. १८८५,
ता ११ फरवरी १९६४ ई०

पुरुषोत्तमलाल मेनारिया

---

[1] क. कृष्ण रुक्मिणी री वेलि, हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद, भूमिका, पृ. ४९।

ख. राजस्थानी भाषा और साहित्य, श्री मोतीलालजी मेनारिया, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद, पृ. १७६।

ग. राजस्थानी शब्द कोष, श्री सीतारामजी लाळस, राजस्थानी शोध-सस्थान, चोपासनी, जोधपुर, भूमिका, पृ १४४।

सायांजी भूला कृत

रुषमणी - हरण

चारण कवि सायांजी भूला कृत

रुषमणी - हरण

[1]॥दं०॥ अथ रुषमणीहरण लिख्यते ।[1]

[2]गाहा चोसर[2]

[मंगलाचरण]

भल[1] कव[2] वहण[3] भले[4] गुण भरया[5], उकत[6] विसेषे[7] पार उतरया[8] ।
काला[9] ई वाला[10] जेणे[11] करया[12], त्राये[13] आप आपरे[14] तरया[15] ॥ १

सबद-जयाज[1] वहण[2] टंकसाली[3], [4]तर तर[4] [5]सकव गया[5] तण[6] ताली[7]।
महण संसार[8] तरण वनमाली[9], [10]जोडिस हूं एक[10] तुंबा[11]-जाली[12]॥ २

दरीआ[1] ऊपर[2] पत्थर[3] डारे[4], ऊपर[5] पत्थर[6] सेन उतारे[7] ।
[8]समर क्रसन[8] तणो[9] मत सारे[10], [11]तुंवे बेठां[11] केम न तारे[12] ॥ ३

---

१ ख. अथ गुण रुषमणीहरण, ग अथ रुषमणीहरण लिख्यते । २ ख गाहा, ग आरजा । गाहा चोसर—

१ – १ ख वड । २ ग कवि । ३ ग. वाहण । ४ ख. भलै । ५ ख. भरिया, ग भरीया । ६ ग उक्ति । ७ ख वसेष, ग. विशेष । ८ ख उतरिया, ग ऊत-रीया । ९ ख काळा, ग काल्हा । १० ख. वाळा, ग वाल्हा । ११ ख. जण, ग जिण । १२ ख. करिया, ग करीया । १३ ख. ग त्रापे । १४ ख. आप ही, ग. आपणे । १५ ख. तरिया, ग. तरीया ।

२ – १ ख जैहैज, ग. जिहाज । २ ख. वयैण, ग वैण । ३ ख टकमाळी । ४ ग तरि तरि । ५ ख गया सुकव, ग सुकवि गया । ६ ग. तिण । ७ ख. ताळी । ८ ख सैसार । ९ ख. वनमाळी । १० ख जोड चहू पण, ग. जोडिस हू । ११ ख तूंबा, ग. तुवाड़ा । १२ ख. जाळी ।

३ – १ ख दरिया । २ ग उपरि । ३ ख पथ्थर, ग. पाथर ४ ख. ग. डारै । ५ ग. ऊपरि, ६ ख. पथ्थर, ग प्रलव । ७ ख ग उतारै । ८ ख. सो वचन केसव, ग सुण पण किसन । ९ ख. ग तणी । १० ख. ग सारै । ११ ख तूंवै वैठ, ग तुवै वैठां । १२ ख ग. तारै ।

दूहा

[काव्य-रचना का उद्देश्य]

हूं[1] गाइस[2] रुषमण[3]-हरण, मंगलचार[4] मुकंद ।
कुल[5] यादव[6] पूरण कुलां[7], प्रगट परमांणंद[8] ।। १[9]

(तो) छंद झपताल

प्रगटया[1] क्रसन[2] वसदेव[3] यादव[4] पिता[5] ।
[6]स्त्रीया रुषमण हुई[6] [7]राय भीमंक[7] सुता ।।
वमल[8] पत[9] मात कुल[10] छात[11] जणावियो[12] ।
लार भरतार अवतार लषमी[13] लियो[14] ।। १

[रुक्मिणी के वर के विषय में विचार]

[1]भल भला[1] राय-हर[2] राय-कुंअरी[3] भली ।
[4]रुषमणी रूप अवतार[4] [5]जग ऊजली[5] ।।
[6]पुत्र परिवार मिले मात बैठा पिता[6] ।
सोझीये[7] [8]सुवर वीवाह[8] कारण सुता[9] ।। २

दूहा—

१—१ ग. हु । २ ख गायेस, ग गायस । ३ ग. रुपमणि । ४ ग मगलच्यारि। ५ ख कुळ । ६ ख ग. जादव । ७ ख कळा, ग कला । ८ ख परम अणंद, ग परमाणद । ९ ख ग ४ । आगे 'छद झंपताल' मे ख प्रति मे दो-दो चरणो के अन्त में छंद-सख्या क्रमशः १ से ४३० तक और ग. प्रति मे चार-चार चरणों के अन्त मे छद सख्या क्रमश. ५ से १००, पुन १ से प्रारभ करते हुए २०० और आगे २३ (२२३) तक लिखित है ।

छद झपताल (ख जफताळ, ग झफताल)—

१—ख प्रगट था, ग प्रगट थया । २ ख कसन, ग किसन । ३ ख. वसुदेव । ४ ख जादव । ५ ख पता । ६ ख. श्री हुइ रुपमणी, ग. श्रीया रुषमणी हुई । ७ ख. राव भीमक, ग. राव भूमिक । ८ ख विमळ, ग. विमल । ९ ग. पित । १० ख कुळ । ११ ग. छात । १२ ख. जणावियो, ग जाणावियो । १३ ख. ग लिषमी । १४ ग लीयौ ।

२—१ ख भळ भळा । २ ख राज्हस । ३ राजकुवरी, ग. रायकुवरी । ४ ख. ग्रेह छै रुपमणी, ग. रुपमणी रूप अवतार । ५ ख. जुग ऊपळी ग जग उपली । ६ ख मात पत पूत परवार वैठा मतो, ग. पूत परवार मिलि मात वैठा पिता । ७ ख. सोझियो ग सोझीयै । ८ ख वाद वीवाह, ग सुवर वीमाह । ९ ख. सुतो ।

भाषीयो[1] भीसंक[2] [3]चवद जोतां भुवण[3] ।
कुंवरि[4] - वर [5]जोर वर[5] [6]मूझ सूझे कसन[6] ॥
रुकमीयो[7] जांग [8]कर जलण घृत रालयो[8] ।
भला भीसंक[9] [10]तुमे वर भालयो[10] ॥ ३

अवर [1]अपरोग थया[1] राजवंस[2] एतला[3] ।
सील कुल[4] सोझ[5] [6]भरुवाड पायां भला[6] ॥
[7]दोस मत कोई पित मातरे सर दए[7] ।
ऊपजे[8] [9]आहीज मत बुध पण आव ए[9] ॥ ४

[कृष्ण-चरित्र-वर्णन]

वात [1]वीमाहरी सोछ कीजे[1] वली[2] ।
गो[त][3] गुण पूछीये[4] वीस गुलणे[5] गली[6] ॥
[7]मूल तो आविओ प्रथम मू सालणे[7] ।
[8]पोढ नें साच रोउ नही पालणे[8] ॥ ५

[1]रुदर मासी तणो गलो ग्रह रेसीओ[1] ।
[2]साउलो मारउ घणे भाय घेसीओ[2] ॥

---

३ – १ ग भाषीयो । २ ख. भीम ग भीमक । ३ ख मुख जोय चवदेहे भवन, ग चवदह जोता भवण । ४ ख कुवर, ग. कुवर । ५ ख. मूझ वर, ग. जोग मुझ । ६ ख अेक सूझे कसन, ग आज सूझे किसन । ७ ख. रुपमियो, ग रुखमीयो । ८ ख प्रत आळणी राळियो, ग. करि जलण घृत रालियो । ९ ख भीमक, ग भीम । १० ख तुमे भळो वर भाळियो, ग कत कहे म्हे भलो वर भालीयो ।

४ – १ ख अपूज था, ग अपरो गया । २ ख र[रा]जहस । ३ ख अेतला । ४ ख. कुळ । ५ ख सोध, ग सूघ । ६ ख. भर वड पायै भळा, ग. भरुआड पाया भला । ७ ख. देसपत कुमर सै मात..... दियो, ग दोस मति कोय पित मातरे दियै । ८ ख. ग. उपजै । ९ ख अेहिज मत वुढापण आविये, ग. एहिज मति बूढापण आवियै ।

५–१ ख. वीवाहरी तोईज कीजै, ग वीमाहरी सोज कीजे । २ ख वळी । ३ ख. गूत । ४ ख पूछजै, ग. पूछीयै, ५ ख गलण, ग. गलणे । ६ ख. गळी । ७ ख प्रथम तो आवियो मूळ मू सालणो, ग मूल तो आवीयो प्रथम मो सालणे । ८ ख पोढियो साच रोय्यो नहीं पाळणै, ग. पौढीयो साच रोयौ नहीं पालणै ।

६–१ ख रुधर मासी तणो गलो जण रोसियो, ग. रुधिर मासी तणौ गल गलै रेसीयो । २ ख घणो भौथी मार नै ममलो घींसियो, ग माउलो मारीयो घणी भु

साच [३]मांनो नही[३] साप भर[४] सावता ।
पूतना[५] [६]काल कंस षाल[६] दापा[७] पता[८] ।। ६

लषण बत्रीस[१] तेत्रीसमो[२] ए[३] लषण ।
घरा[४] घर चोरउ[५] [६]पसू-नवेनत[६]* घण ।।
[७]प्रथम दही दूध मांषण तणी[७] पत गली ।
[८]आंगली आपतां वांह एणें गली[८] ।। ७

तात नें[१] मात वीवाह[२] षड भड[३] टली[४] ।
[५]मेलयां घणा घरवास आया सली[५] ।।
सांझ[६] सूर[७] उगमण[८] तात महतारीया[९] ।
[१०]पुत्र सोझचो मले घाट पणहारीया[१०] ।। ८

घाट जमुना[१] तणे दीह [२]घो[धो]ले घणा[२] ।
ताकतो[३] पांगरण[४] [५]नहण नारी[५] तणा[६] ।।
कदम [७]डाले चढी[७] चीर [८]झूंटे कसन[८] ।
[९]नीरमें कर्गरे नारि वैठी[९] नगन[१०] ।। ९

घेसीयो। ३ ख नह मंनो तो, ग. मानौ नहीं। ४ ख. घर। ५ ख. पौतना। ६ ख. ग षाल कंस षाल। ७ ख. दाषू, ग दापु। ८ ग. पिता।

७ – १ ख. वत्तीस। २ ख तेतीसमें, ग. तेत्रीसमौ। ३ ख श्रै, ग इण। ४ ख. घणा। ५ ख. चोरिया, ग. चोरीयौ। ६ ख पैस-नैविनत, ग पैस-नवनीत। ७ ख. घणो मषण दही दूधरी, ग. प्रथम दही दूध माषण तणी। ८ ख. आचरी वांह मुष आपता अगली, ग. बहिर इण आगुली आपता वाह गली।

८ – १ ख. ग नै। २ ग. वियाह। ३ ग खडभड। ४ ख. टळी। ५ ख मडायो घरण घरवास आपै मळी, ग मेलीया घणा घरवास आपह मिली। ६ ख सोझ। ७ ख सूघो। ८ ख गमण, ग ऊगमणि। ९ ख महियारिया, महितारीया। १० ख पात्र सोझै जदै घाट पणियारिया, ग. पूत सोझचौ जुडै घाट पणिहारीया।

९ – १ ख. जमना, ग. जमणा। २ ख. चाळो घणौ, ग घोलै घणां। ३ ग ताकतौ। ४ ख. पूगरण। ५ ख. नैहण हारी। ६ ख. तणौ, ग तणा। ७ ख डाळी चढे, ग डाली चढै। ८ ख. झाटै कसन, ग. झूठै किसन। ९ ख नीरसू करगरै नार ऊभी, ग नीरमै करगरै नारी वैठी। १० ग मिस।

---

*पत्र संख्या १ का ख भाग पूर्ण। क. भाग में 'पोथी ४० मी' मात्र लिखित है।

[1]वीठ लेंता पछो[1] [2]आव तरा[2] हीज वरस[4] ।
मांडीया[5] फंद महीयारीयां[6] दांग[7] मस[8] ।।
रोक महीयारीयां[9] सांझ[10] सूधा[11] रहै ।
लषरा [12]एरां तणा ओहीज वातां[12] लहै ।। १०

आंगणे[1] नंदरे[2] नित[3] ऊलांहणा[4] ।
[5]तोडीया दाषवे[5] बंध[6] चोली[7] तणा[8] ।।
संचरां[9] केथ[10] रोकें[11] गली[12] सांकडी[13] ।
[14]चीररो हाल जोय[14] गालरी चूनडी[15] ।। ११

नंदरी नारिसू[1] दाषवे नित्तरा[2] ।
अंक[3] पयोधरा[4] डंक[5] दीयो धरा[5] ।।
मात बैठी अठे[6] लाज आवे[7] मुनां[8] ।
[9]चोहटे चाल[9] ज्युं[10] [11]कहूं यें राचनां[11] ।। १२

रुकम[1] साची कही[2] [3]ढांकीया न रहे[3] धरम ।
करम संभलावसो[4] जेम[5] छूटे[6] करम ।।

---

१० – १ ख. कठलोता पाछै, ग वठलैंता पछो । २ ग. आवि तिण । ३ ख ग. ही । ४ ख वरस । ५ ख मडियो, ग. मांडीया । ६ ख महियारोय । ७ ख दरा, ग दाण । ८ ग मिस । ९ ख महियारिय, ग महीयारड़ी । १० ख सझ, ग सांझ । ११ ख. सूधो, ग सूधौ । १२ ख. अणरा तणी उहीज वात, ग. अेरां तणी एहिज वातां ।

११ – १ ख. अगणै, ग. आंगणै । २ ख ग नंदरै । ३ ख. नत । ४ ख ओलघणो, ग. ओलाहुण । ५ ख. तोढियो दाषवा, ग. त्रोडीया दाषवै । ६ ख. हार । ७ ख चोळी । ८ ख तणो । ९ ख साचरै, ग साचरां । १० ख तेथ । ११ ख ग रोकै । १२ ख. गळी । १३ ख संकड़ी, ग. साकडी । १४ ख चुचड़ी हाळ ज्यो, ग चीररै हाल त्यों । १५ ख ग चूनड़ी ।

१२ – १ ख. नारसूं, ग. नारिसौं । २ ख नत्तरो, ग नितरां । ३ ख अेक । ४ ख. पासैहड़ा, ग पयोहरां । ५ ख पै ऊधरो, ग. की अधरां । ६ ख ग अठै । ७ ख. ग. आवै । ८ ख मनै । ९ ख. चोहैटै चाल, ग चोहटै चालि । १० ख जू । ११ ख कहु अै राचनै, ग कहु अै राचिना ।

१३ – १ ख. कुयर । ग कुवरि । २ ख कहे । ३ ख. ढाकियो नह, ग ढांकीआं नह वै । ४ ख समुला घरै, ग सभलाविहुं । ५ ख जेंम । ६ ख. छूटै, ग छूटां ।

[7]कोड पुरु[7] पिता[8] चालनें[9] कोटडी[10] ।
[11]मांह मूडा[11] भरी [12]हेकमें मूंठडी[12] ।। १३

[1]कहरा केवा घरा[1] [2]काटवा किनरा[2] ।
नंदनंदन काय[3] जनक[4] वसूदेवरा[5] ।।
तात[6] त्रीजो[7] संदेह[8] [9]हेक मोनुं[9] तिको[10] ।
[11]सांमलो आप मा-वाप गोरा सको ।। १४

[1]भारज्यां पंडरी[1] हेक[2] [3]येंरे भुया[3] ।
जनमीया[4] पांच-पांचों[5] पिता[6] जूजुआ[7] ।।
वडोटी[8] षल[9] पांच[10] पांडवांरे[11] वली[12] ।
महेली[13] [14]परणीया हेक[14] [15]पांचो मली[15] ।। १५

आंणीयो[1] एहिज[2] वर [3]कंवर युं[3] उचरे[4] ।
मात पष[5] तात पष[6] नको[7] पांणी[8] भरे[9] ।।
[10]सुर असुर[10] पूछ[11] जोय[12] [13]नर नाग[13] सहे[14] ।
[15]राषीयो यजरो पूत[15] पांणी रहै ।। १६

---

१३ – ७ ख. को पुरी, ग कोड पूरा । ८ ख पोत नै । ९ ख चाळनी, ग चाल नै । १० ख ग कोटड़ी । ११ ख. मह मूंडे, ग माहि मूडा । १२ ख ऐक मै मूठड़ी, ग हेक मै मुठडी ।

१४ – १ ख. कैहैण हारी तणो । २ ख. काढम की जरो, ग काढवा कीं जरा । ३ ख दियो, ग थीयौ । ४ ख जनम । ५ ख. वसदेवरो, ग वसदेवरा । ६ ख. ताता । ७ ख जं । ८ ख सनै हो । ९ ख. मोहे मानो, ग मोनैं । १० ख तको, ग. तिको । ११ ख सम-[भ]ळो, ग. सामलो ।

१५ – १ ख भारज्या पडरो, ग भारजा पांडुरी । २ ख अेक । ३ ख अैरो भुया, ग अैरो भूआ । ४ ख जनमियो । ५ ख. पच पचै, ग पाच-पाचें । ६ ख पता । ७ ख जूजुया, ग जूजूआ । ८ ख वडोट ग वडोटी । ९ ग पल । १० ख ग पछै । ११ ख पडवरै, ग पाडवारी । १२ ख वले । १३ ख मैहळ । १४ ख एक परणिया । १५ ख पच पचू मळे, ग पाचे मिली ।

१६ – १ ख. अणजै, ग. आंणीयै । २ ख. तैहीज । ३ ख कुयर अेम, ग कुमर यौं । ४ ख ग. ऊचरै । ५ ग पाप । ६ ग पषि । ७ ख नकू । ८ ग पांणी । ९ ख ग मरै । १० ख सूर ओ । ११ ख पूछ नै, ग. पूछि नै । १२ ख प्पूछ, ग पूछि । १३ ख नाग । १४ ख. सव्है, ग. सहै । १५ ख. राखियो पुत्र अेहीजरो, ग. राषीयौ एहिजरौ पुत्र ।

बालपण[1] ऊषले[2] एण[3] बंधावीओ[4] ।
एहवो[5] सगो[6] कदे[7] आंपणे[8] आवीओ[9] ॥
मूंढ[10] हरण[11] ऊषले[12] [13]गूढ होय मोडीया[13] ।
चोकरा[14] आय[15] [16]कुमेरर छोडीया[16] ॥ १७

गढपती जांण[1] घर[2] [3]मांणतुं गारडी[3] ।
चोक[4] गोकले[5] तणे[6] साप[7] बैठो चडी[8] ॥*
गरडधुज[9] भुयंग [10]जमरावरो गारडी[10] ।
जहर[11] अभवासरी हाथ जेरें[12] जडी[13] ॥ १८

जलनिध[1] अंजली[2] अगथ विण कण थीयें[2] ।
नाग काली[3] कुणें[4] कांन[5] विण[6] नाथीयें[7] ॥
[8]एवडी वात[8] कांइ[9] भूल पाडे[10] असन ।
दीकरा जेण दोय[11] वार पीधो[12] दहन[13] ॥ १९

---

१७ – १ ग. वालपिण । २ ग ऊपलै । ३ ख जेण । ४ ख वंधावियो, ग वधावीयो । ५ ख अवेही, ग एहवौ । ६ ख सगा, ग सगौ । ७ ख. कद, ग कदि । ८ ख ग आपणै । ९ ख आवियो, ग आवीयौ । १० ख. मढि, ग मूढ । ११ ख जण । १२ ग ऊषलै । १३ ख गाढ मोडावियो, ग गुढ वे मोडीडा । १४ ख छूकरा । १५ ख साप, ग. साप । १६ ख कूमेर छोड़ावियो, ग कुवेरचा छोडीया ।

१८ – १ ख अण । २ ग. गर । ३ ख ग आंणमां गारडी । ४ ग चौक । ५ ख गोकळ, ग गोकल । ६ ख. ग तणै । ७ ख नाग । ८ ख ग चडी । ९ ख गोरडपत्र, ग. गुरुडधुज । १० ख जमरावलो गारडी, ग जमरावचौ गारुड़ी । ११ ख जैहर । १२ ख. अरें, ग जैरै । १३ ख. ग. जड़ी ।

१९ – १ ख नधवण । २ ख अगध वण आथियै, ग अगध विण किम थीयै । ३ ख काळी । ४ ख कवण, ग. कुणै । ५ ख कन । ६ ख वण । ७ ख नाथियै, ग नाथीयै । ८ ख अवेडो वा, ग. एवडी वात । ९ ख केम । १० ख पाड़ै, ग पाडै । ११ ख. दोयै । १२ ग. पीधौ । १३ ख ग दवन ।

---

*पत्र सख्या २ का क भाग पूर्ण ।

जांण[1] पण [2]घणो पित मातरो जांणीयें[2] ।
अधिपती[3] मेल[4] आहीर[5] घर आंणीये[6] ।।
अधिपती[7] [8]सूरपती कीट सहि एहीजरा[8] ।
जम जरा[9] [10]दास दह दास माया जरा[10] ।। २०

क्रीत[1] संकर करे[2] ध्यांन[3] व्रह्मा[4] धरे[5] ।
[6]नाथ कीजे नही[6] नाथ त्रीलोकरे[7] ।।
घर कती[8] लोवडी[9] [10]सूरह चारें[10] घणी ।
[11]तरे त्रीलोकरो[11] भाल[12] ठाकर[13] तणी ।। २१

[1]ठाकचा पूत्र छो छत्रवासे ठगां[1] ।
पनही बाहरो[2] वृज[3] गाहें[4] पगां[5] ।।
[6]कोट वृजसूंदरी[6] कोट[7] तीरथ करे[8] ।
भोम जणवास[9] वाधार[10] [11]पगलां भरे[11] ।। २२

वात कीजें[1] पडे[2] तात जेती[3] वरे[4] ।
वंस[5] वाधार[6] [7]सेंहार मुख वावरे[7] ।।

---

२० – १ ख जेण, ग जाण । २ ख मात-पतरो अही जांणीयो, ग घणों पित मातरो जांणीयै । ३ ख. ग अघपती । ४ ख छड, ग मेल्ह । ५ ख ग. अहीर । ६ ख आणियो, ग. आंणीयै । ७ ख ग. अघपती । ८ ख छत्रपती कछट ओहीजरा, ग. नरपती कीध छै एजंरा । ९ ख करो । १० ख वदि जमकायो जुरामींधरा ।

२१ – १ ख ग ध्यान । २ ख ग धरै । ३ ख ग क्रीत । ४ ख. व्रहैमा, ग व्रहमा । ५ ख ग करै । ६ ख तात नह कीजियै, ग तात सूझै नहीं । ७ ख त्रिलोकरै ग. त्रीलोकरै । ८ ख कत । ९ ख ग लोवड़ी । १० ख सुरे है धारी, ग. सुरह चारै । ११ ख तरहै तीन लोकरी, ग तरह त्रयी लोकरा । १२ ख देख । १३ ख ग ठाकुर ।

२२ – १ ख. ठाकरा पुत्र नै पुत्र वासी ठगा, ग ढाकचा पत्र चौ छत्र वासै ढगा । २ ख छाहैरो, ग. वाहिरो । ३ ख. ग व्रज । ४ ख चाहै, ग गाहै । ५ ख पगा । ६ ख. कतर व्रज वनरा, ग कुवर व्रजनदनी । ७ ख लोक । ८ ख. ग करै । ९ ख. तण वसव, ग जिणवस । १० ख. आधार । ११ ख. ग पगल भरै ।

२३ – १ ख ग. कीजै । २ ख. परै, ग. पड़ै । ३ ख. जैती । ४ ख ग वरै । ५ ख. वैसव । ६ ख आधार । ७ ख. सुगाल मुप वरै, ग. सीहार दुख वावरै ।

[८]मांनीयें तातची वात आगें सलें ।
देंवदेवाधसू जगरे बेठो डले[८] ।। २३
रही[१] भेंछक[२] रूकम मात संपेष सह[३] ।
दाषीया[४] भुवण[५] मुष मांझले[६] [७]चार दह[७] ।।
पुत्र[८] [९]जमुंना तणे पार परमोरथो[९] ।
थापीयें[१०] घाट [११]ब्रहमंड तरण दीहथी[११] ।। २४
हालीयो[१] हेर घर[२] घेर ब्रहमा[३] घणा[४] ।
आंण[५] सकीयो[६] नही[७] वाघरू[८] आपरगा[९] ।।
[१०]दूसरा दुरसठ[१०] ततकाल[११] कीधा[१२] तदे[१३] ।
रोम[१४] भूलो[१५] नही[१६] धेन धरी[१७]आ रदे[१७] ।। २५
हरिचरीत[१] देष[२] [३]दिगमूढ ब्रहंमा हूओ[३] ।
वालीया[४] वेद नें[५] [६]सोझीयो संषूओ[६] ।।
सरस जांणे[७] नही[८] वेद[९] मरजादरो[१०] ।
नीत[११]रहें[१२] मोहीऊ[१३] मोरली[१४]-नादरो[१५] ।। २६

---

२३ – ८ यह अंश ख और ग. प्रतियो में नहीं है ।

२४ – १ ख. रहे । २ ख. ग. भेंचक । ३ ख. मही, ग. मुह । ४ ख देषिया । ५ ख लोयण । ६ ख माजली, ग माहि ले । ७ ख च्यार ही, ग. च्यार दह । ८ ख पार । ९ ख. जमना तणे पुत्र परमारथ्यो, ग. जमुना तणै घाट परमारथ्यो । १० ख थापियो, ग थापियों । ११ ख. तण दीह ब्रहैमाडथ्यो, ग ब्रहमडतै दीहथ्यो ।

२५ – १ ख. हाळियो, ग. हालीयौ । २ ख. ग घण । ३ ख. ब्रहैमा । ४ ख घणो, ग घणा । ५ ख अंण । ६ ख सकियो, ग सकीयौं । ७ ख ग नही । ८ ख. वीछरु । ९ ख आपणो । आगे ख प्रति में यह अंश है—'तणियो जग रु तेण फेरया तधे । श्री कसन भजियो ब्रहम वाळो सिधे ।। ४९ ।।' १० ख दूसरे दीह, ग दूसरां दरसत । ११ ख तण ताळ । १२ ख. कीधो, ग. दीधा । १३ ग तदै । १४ ग रांम । १५ ग भूलो । १६ ख. नहीं । १७ ख. धरयं रदे, ग. धरीयां रदै ।

२६ – १ ख हरचरत, ग हरि चरिज[त्र अथवा त] । २ ग. देषि । ३ ख द्रगमूढ़ ब्रहिमा हुयो, ग. द्रिगमूढ ब्रहमा हूओ । ४ ख. वाळिया, ग वालीयौ । ५ ग प्रति में नहीं है । ६ ख सौंधियो सोधियो, ग. जिण साभ्रीयो साखू ओ । ७ ख ज(जा)णै, ग जाणै । ८ ख. नहीं । ९ ख. एह । १० ख. मिरजादरी, ग मरजादरौ । ११ ख नत, ग नित । १२ ख. ग रहै । १३ ख. मोहियौ, ग मोहीयौ । १४ ख मुरळी । १५ ख नादरी, ग. नादरौ ।

मोरली मुनीयां[1] ध्यांन मूंकावीया[2] ।
धेनूंआं[3] वाछरू रह्या वण[4] धावीया ।।
पुत्र पायो[5] सदा [6]कांन पि पांनरे[6] ।
ध्यांनरा कोट फल [7]वेडीया धांनरे[7] ।। २७

मोरली[1] नादरी[2] देव साधां[3] मरे[4] ।
कवर[5] भूषण तणा तज[6] दूषण करे[7] ।।
भलो[8] घर[9] [10]भलो वर घराडे[10] भूषण[11] भला ।
कंठ गुंजा[12] तणा[13] जासरे[14] कंठला ।। २८

वावीया[1] पुत्र मोती[2] [3]तो नां वीसरें[3] ।
भांमिनो[4] जांमनी[5] जांम[6] षोला[7] भरें[8] ।।
भेजीये[9] प्रथम [10]बांभणेनों बी[10] भणी ।
बीजीये[11] [12]वार गयो[12] जाचवा बंभणी[13] ।। २९

ले गई[1] बांभणी[2] पूरणावण[3] लीओ[4] ।
काल[5] बांभण[6] तणो[7] [8]जगिन जूठो कीओ[8] ।।

---

२७ — ख. प्रति में यह छन्द उपलब्ध नहीं है। १ ग. मूनियां। २ ग मूकावीया। ३ ग. घनेरा। ४ ग. अण। ५ ग पायो। ६ ग. कन पय पानड़े। ७ ग. वेड़ीया धानड़े।

२८ — १ ख. मुरली। २ ग नगरी। ३ ख. सादे, ग साधां। ४ ख ग. मरै। ५ ख. कुयर, ग. कुवर। ६ ख अेह, ग तुहीज। ७ ख. ग करै। ८ ग भलो। ९ ख. वर, ग पर। १० ख. भाल घर अन, ग भलो वर घणु। ११ ख. [भूष]ण। १२ ख गुज। १३ ग तणी। १४ ख जसरै, ग जासरै।

२९ — १ ख. वावियो। २ ख. मती। ३ ख तणो वीसरै, ग तु नां वीसरै। ४ ख भमणी, ग. भामनी। ५ ख. जमणी। ६ ख जेम, ग. जाम। ७ ख. षोळा। ८ ख ग भरै। ९ ख भेजियो, ग. भेजीयौ। १० ख. जद वामणना, ग वाभणेना। ११ ख वीजीरी, ग वीजीय। १२ ख. ग वार गो। १३ ख. बांमणी, ग. वाभणी।

३० — १ ख. गयो। २. ख. वामणी। ३ ख. पांणवणी, ग पूरणाविण। ४ ख लियो, ग. लीयों। ५ ख कलै है। ६ ख बमण। ७ ग तणै। ८ ख जगन झूठो कियो, ग जिगन झूठो कीयो।

---

*पत्र सख्या २ का ख भाग पूर्ण।

भूल ग्या[९] बापडा[१०] बंभ राजा भणे[११] ।
कीजीयें[१२] जगन[१३] [१४]सो अईजरे[१४] कांरणें[१५] ।। ३०

चंद[१] नांमो[२] कँवर[३] बांभणी चाढीयो[४] ।
जगन[५]-पुरष[६] ओलखे[७] हाथ जीमाडीयो[८] ।।
जमण-वेवार[९] जलपांन[१०] [११]न हुवे[११] जठै ।
तात सगपण[१२] तणौ[१३] [१४]कांय समधौ[१४] तठै ।। ३१

जूठ[१] कज दोडीओ[२] ऊठ[३] व्रंह्मा[४] जसो[५] ।
पुत्र[६] पायो[७] नही[८] [९]वाल जल ही[९] पुसो[१०] ।।
[११]पाडीओ वृषभ वाय[११]छांट[१२] मोटी पडी[१३] ।
नार [१४]आवे नही[१४] छोत[१५] [१६]गण नेंग्रडी[१६] ।। ३२

[१]वृषभ न हूंतो[१] रुकम दैत[२] हूंता वीओ[२] ।
कोड[३] हत्या[४] हरण कूड[५] राधा कीओ[६] ।।
[७]कोड कंन्या दीयो हेक[७] मोटो[८] कुंगुण[९] ।
[१०]वृजरी नारिसूं[१०] नही[११] छूटे[१२] वसन[१३] ।। ३३

---

९ ख भूल गा, ग. भूल ग्यौ। १० ख. ग वापडा। ११ ख ग भणै। १२ ख. कीजियो, ग कीजीयै। १३ ग जिग। १४ ख. तीहीजरै, तै एहजरै। १५ ख ग. कारणै।

३१ ख चद्र। २ ख. नमो, ग नामौ। ३ ख. कुयर, ग. कुअर। ४ ख ब्रहैमा चाड़ियो, ग वांभणी चाढीयौ। ५ ग. जिगन। ६ ख. प्रष, ग. पुरुष। ७ ख ओळपै। ८ ख जीमाडियो, ग जीमाडीयौ। ९ ख. जमन–वैहवार, ग. जमण–वहिवार। १० ख जळपात(न)। ११ ख. न हुयो, ग. न हवै। १२ ख. सनमध। १३ ख. तणी। १४ ख सनध कैहैता, ग. किसौं समदो।

३२ – १ ख ग झूठ। २ ख. दोडियो, ग. दौडीयौ। ३ ग ऊठि। ४ ख. ब्रहैमा, ग व्रहमा। ५ ग जिसौ। ६ ख ग. पूत्र। ७ ग. पायौ। ८ ख नहीं, ग. सही। ९ ख. बाल जहै। १० ख वसो, ग घसौ। ११ ख. पाडियो कलप व्रष, ग. पाडीयौ व्रिषभ तें। १२ ख. छट। १३ ख ग. पड़ी। १४ ख ग. आवै नहीं। १५ ग. चौत। १६ ख. तणनी पड़ी, ग गिण नैंग्रडी।

३३ – १ ख व्रष वव रहया, ग. व्रिषभ नह तौ। २ ख. होता वियो, ग हुंतौ बीयौ। ३ ख कोड, ग. कोट। ४ ख हतिया। ५ ख. कोड, ग कत। ६ ख कियो, ग. कीयौ। ७ ख कूड कनिया दियो ऐह, ग. कोड कन्या दियौ एक। ८ ग मोटी। ९ ख कसन, ग. कुगुण। १० ख. व्रजरी नारसू, ग. ब्रिजरी नारिसौ। ११ ख केम। १२ ग. छूटै। १३ ख विसन, ग विसन।

देव-पुड[1] [2]मांनव-पुड नाग नेडो दरो[2] ।
[3]वीठलरो वछ(च)न पोथीयें परवरचो[3] ।।
जे रुकम वांचसे[4] श्रवण[5] सुणसे[6] जिके[7] ।
तजे[8] ग्रभवास[9] [10]जम-त्रास कटसे[10] तिके[11] ।। ३४

आंण[1] गाडा[2] गमें[3] गूढ ऊतारीओ[5] ।
[6]एवडो अन पांन कांन आहारीओ[6] ।।
[7]जोई ने ईयरा[7] पेट[8] वाली[9] जुगत[10] ।
ताहरे[11] प्रीसणे[12] केम होसे[13] त्रिपत[14] ।। ३५

सुष थयो[1] पुत्र[2] अनकोट संभारीयो[3] ।
[4] एवडो इंद्रचो[4] मांण ऊतारीओ[5] ।।
एकण[6] हाथ परबत[7] ऊधारीओ[8] ।
[9]वृज उवारीओ[9] केम वीसारीओ[10] ।। ३६

राष[1] मांवड[2] दडा[3] कित छांनुं[4] रुकम ।
दीकरा[5] वांछतो[6] वाछ[7] पूरा[8] दसम ।।

---

३४ – १ ख देवपूर (देव-पूर), ग देव-पुड़ । ख म(मा)नवपुर सह छै है चरो, ग. नाग पुड मानव नैड़ो दरो । ३ ख. वीमण ठली तण किसन पोथियो परचरो, ग वीठलैरो किसन पोथीए परवरो । ४ ख. वाचती, ग वाचसै । ५ ख. रत(स्र)वण । ६ ख. सुण सुंण, ग. सुणसै । ७ ख जके । ८ ग तजै । ९ ख. ग्रभवास । १० ख. जेम पास कटसी, ग जमतास कटसै । ११ ख तके ।

३५ – १ ख अंण । २ ख ग गाडा । ३ ख गम, ग. गमे । ४ ख गाढ । ५. ख. ऊतारिया, ग उतारीयो । ६ ख. एवडा अनै पकवन आहारिया, ग एवडो अन पकवान आहारीयो । ७ ख जोयता सुणे रेप, ग जोउ मैआ एहरा । ८ ख पोट । ९. ख. वाळी । १० ग जुगति । ११ ख. ग ताहरै । १२ ख. जीमियै, ग प्रीसणै । १३ ख ग. होसी । १४ ख. त्रपत, ग. त्रिपति ।

३६ – १ ख होयो, ग थयो । २ ख. घणो । ३ ख. सधारियो, ग संभारीयो ४ ख. अेवडो अद्रचो, ग एवडो इन्द्रचो । ५ ख ऊतारियो, ग. उतारीयो । ६ ख. अेकणी, ग. एकणं । ७ ख पाहाड । ८ ख. आधारियो, ग. आधारीयो । ९ ख. व्रज ऊगारियो, ग. व्रिज उवारीयो । १० ख. वीसारियो, ग. वीसारीयो ।

३७ – १ ख. राषवो । २ ख मंवडो, ग. मांवड़ । ३ ख. वडो, ग. -घडा । ४ ख म छावो(नो), ग म छाना । ५ ख. दीकरो । ६ ख. वाचतो, ग. वाचतो । ७ ख. ग याच । ८ ख. पूरी ।

दसमरी[९] तात लीला[१०] सुणौ[११] दूसरी ।
संग हूंती जती[१२] वृजरी[१३] सूंदरी[१४] ।। ३७
ढूंढते[१] कूबड़ी[२] सकल[३] कीधो ढले[४] ।
पुत्री[५] थांहरी[६] पिता[७] [८]बांध इणरे पले[८] ।।
एवडा[९] लंपटनें[१०] [११]बेहन हूं[११] आपणी ।
[१२]राजकुंवरी न द्यु[१२] लाज भर रुषमणी ।। ३८
बंधवरा[१] बोल भेदे[२] नही[३] बीलषा[४] ।
[५]रुषमणी रादरा[५] वेण[६] जूसण[७] रषा[८] ।।
नेह[९] सो देणरो सूत थांरे[९] नथी ।
[१०]मेहलतो एहीज[१०] [११]इण लीध[११] साग्रर[१२]मथी ।। ३९
*हेकठा[१] [२]ते समे[२] देव दांणव हुंता[३] ।
सानीया[४] पूत[५] [६]इण हीज[६] लायक[७] सुता ।।
रोल[८] [९]गढ लंक इण[९] हीज[१०] आंणी[११] रमा ।
सीस रांमण[१२] तणा[१३] कीध आंगण[१३] समा ।। ४०

---

९ ख. दसमकी । १० ख लोळी । ११ ख सुणो, ग. सुणौ । १२ ख. तका, ग. जिनो । १३ ख व्रजकी, ग. व्रजरी । १६ ख ग सुंदरी ।

३८ – १ ख. ढूढतै, ग. ढुंढतै । २ ग. कूवडी । ३ ग सकल । ४ ख. ढळै, ग ढिलै । ५ ख. पूत । ६ ख ग. थारी । ७ ख. पता । ८ ख वध ऐंरै पळै, . वाधि इणरै पलै । ९ ख. अवहा (डा), ग एवडा । १० ख. लपटनै, ग लपटनै । ११ ख. वैहैन हु, ग. वहिन हु । १२ ख. राजकुवर न दुया, ग राजकुमरी न द्यौ ।

३९ – १ ग. वधव राव । २ ख भैदै, ग भेदै । ३ ख नहीं । ४ ख. वेळषा, वेलषा । ५ ख राव भीमक तणा । ६ ख बोल, ग. वैण । ७ ख जुसण, ग जोसण । ८ ख रुषा । ९ ख अणसगासूं तात कीजै, ग सो देणरी सूत थारै नथी । १० ख. मैहैल ता कारणै, ग. महिल तो दय । ११ ख जास, ग. जइण लीध । १२ ख. ग सागर ।

४० – १ ख हेक ते । २ ख ती समै, ग तै समै । ३ ख. दणव हुता । ४ ख सनिया, ग सांनीया । ५ ख. ग पुत्र । ६ ख ई हीज, ग. एहिज । ७ ख लायैं[क] । ८ ख. रोळ कर । ९ ख लकगढ ई । १० ग एज । ११ ख अणी । १२ ख. रंमण, ग. रामण । १३ ख. काट कीधा ।

---

*पत्र संख्या ३ का क भाग सपूर्ण ।

छेहलो[1] बोल[2] छे[3] पाथरां[4] छेहडे[5] ।
निरषजो[6] तीसरी वार[7] [8]जे नीमडे[8] ॥
[9]जांणीयो जोर जद[9][10] मेल गयौ[10] मधुपुरी[11] ।
वावस्यां(स्या)[12] वल[13] पण[14] तेग नह[15] वावरी ॥ ४१

[1]उठ से एकतालीसां[1] आगली[2] ।
कोट[3] जरासंधरी[4] पोहण[5] स्यो(श्यो)[6] कुसथली[7] ॥
गोडीयो[8] नेट सांमेट[9] बाजी गयो[10] ।
[°]कालजवनां[11] [12]तणो जु गुन जूठो कीयो[12] ॥ ४२

*[1]असुरचो अंतनें भगत छो अभीग्रहो[1] ।
आंणीयो[2] तेण तिण माट करि आग्रहो[3]* ॥
[4]पूर वें देवतारो वयण पालीओ[4] ।
जवन[5] [6]मचकंद नें जागवे जालीओ[6] ॥ ४३

मारीओ[1] नीद[2] उडाड[3] मचकंदरी[4] ।
[5]कुंवर कहे[5] तात सो[6] वांणीआ[7]-बुध करी ॥

---

४१ — १ ख छंहले, ग. छेहलो। २ ख वोळ। ३ ख. नै, ग. छै। ४ ख. पाथ्थलै। ५ ख. छेहडे, ग छेहडे। ६ ख. नरषज्यो। ७ ख वात, ग वार। ८ ख जमना वड़े, ग. जिम नीमडे। ९ ख मण जद जाणियो, ग. जाणीयो जोर जद। १० ख. मेळ गो, ग मेल गो। ११ ख मुदफुरी। १२ ख. वावर्‌य। १३ ख चलण। १४ ग. पिण। १५ ग नहि।

४२ — १ ख अवुठे सै एक एक ताळ सै सै, ग आठसै इकतालीसां। २ ख आगळी। ३ ख ग काट। ४ ख जुरासींघ। ५ ग क्षोण। ६ ख. गयो, ग. गो। ७ ख कुसथळी। *ख. प्रतिमे ८३ वें छन्द का दूसरा चरण है। °ख प्रतिमे ८३ वें छन्द का प्रथम चरण है। ८ ख. गोड़ियो, ग गोडीयौ। ९ ख. सभेट, ग. सामेट। १० ग. गयो। कालजवन। ११ ख वन। १२ ख मोहर पुलण छै मूहो कियो, ग मही पदन गमुहो कीयो।

४३ — *ख प्रतिमें यह अंश नहीं है। ग. असुरचौ अंत भगतचौ अनग्रहो। २ ग जाणीयौ। ३ आग्रहो। ४ ख. पूरवै देव तं...वचन पाळियो, ग पूरवा देव तात तणौ वैण पालीयो। ५ ख जगन। ६ ख मचकधनै जागवै जाळियो, ग मचकदनै जागवै जालीयौ।

४४ — १ ख मारिम्रो, ग. मारीयौ। २ ग. निद्र। ३ ख. ऊडाड़, ग. उड़ाद्र। ४ ख. मचकधरी। ५ ख कुयर कैहै, ग. कुंवर कहि। ६ ख के, ग. ए। ७ ग. वांणीया।

मरम इण[८] वातरो[९] कंवर[१०] न लहो[११] मुनें[१२] ।
ब्रह्मचो[१३] बीज [१४]पहिचांणीयो वांमने[१४] ।। ४४

असुर[१] परजालीयो[२] व्याध[३] वण[४] ओषधी[५] ।
अवनिचो[६] भार ऊतारीओ[७] ओचधी ।।
अवनछो[९] आपणें[१०] लाग भाग न लगें[११] ।
पगे[१२] नही[१३] पाट उग्रसेननां[१४] उलगें[१५] ।। ४५

[१]आहीरांरे अने भोजनें भारीओ[१] ।
नाथ[२] सोझवणो[३] [४]तेथ निरधारीओ[४] ।।
कुंवर[५] [६]त्रीलोक जे गंग[६] पावन करे[७] ।
नरबुदा[८] एहीजरा[९] [१०]चरणसूं नीसरे[१०] ।। ४६

सार षुगोल[१] भंगोल[२] ले[३] संचरे[४] ।
घरहरे[५] [६]धार जड धार उतमंग[६] धरे[७] ।।
नंदरी धेननें[८] [९]लेहतो नूंजणी[९] ।
दोहतो[१०] बेसतो[११] वीछले[१२] दोहणी ।। ४७

---

४४ – ८ ख घण । ९ ख वातरो, ग वातरौ । १० ख कुयर, ग कवर । ११ ख. लहे, ग लहो । १२ ख. ग मनें । १३ ख. ब्रहमरो, म व्रहमचौ । १४ ख. पछाणियौ वेमने ग. पहिचांणीयौ वामने ।

४५ – १ ख उसर । २ ख. प्रजाळियो, ग परजालीया । ३ ख व्रछणी, ग व्राध । ४ ग विण । ५ ख. ओषदी, ग. ओषधी । ६ ख अवनचो, ग. अवनचौ । ७ ख ऊतारियो, ग. ए कारयो । ८ ख. ऊसदी, ग ओचधी । ९ ख अवनसू, ग. अवनसौ । १० ख. आवणो, ग. आपणें । ११ ख अगें, ग लगें । १२ ख. ग. पग । १३ ग. नहीं । १४ ख. उग्रसेननें । १५ ख ओळगे, ग. उलगे ।

४६ – १ ख भोजनें अहीररै घणोई भारियो, ग. अहीरांरै अनै भोजने भारीयौ । २ ख तात । ३ ग. सोजवणौ । ४ ख न्यात नसतारियो, ग. तात निरधारीयौ । ५ ख कुयर, ग. कवरि । ६ ख वड गगतरी लोक, ग. त्रैलोक जै गग । ७ ख. ग करै । ८ ख. ग. नरवदा । ९ ख री(ऐ)हीजरां, ग. एयजरा । १० ख. पगसू नीझरै, ग. चल(र)णह्र नजिरै ।

४७ – १ ख. षागोळ, ग. षगोल । २ ख भोगोळ, ग भूगोल । ३ ख. मै । ४ ग सांचरै । ५ ख. धड़हडै, ग. धड़हड़े । ६ ख. नेत जळधार उतवग, ग. धार जड़ धार उतवग । ७ ख. ग घरै । ८ ख. ग धेननं । ९ ख. नदरी नूजणी, ग. नदरी नोजणी । १० ख दोहवा, ग. दोहतौ । ११ ख. वैसतो । १२ ख. कीच वच, ग. कीच ले ।

बांधतो[1] छोडतो[2] कुटंब[3] बोलावीओ[4] ।
आज[5] [6]नवलो हू द्वारके आवीओ[6] ।।
*रुकम[7] साची कहो[8] एण आरोडीआ[9] ।
छत्रपती बल जसा[10] बांधीआ[11] छोडीआ[12]* ।। ४८

[1]मांडनें मंडपें[1] ओछ्वां[2] आगता ।
[3]कर सगो[3] कोट[4] [5]ब्रह्मंड वालो[5] ऋता[6] ।।
मूझ[7] पित[8]-मातरो[9] [10]हेक हूं[10] दड[11] मतो[12] ।
छोड[13] दमघोष[14] नंदघोष[15] कीधो[16] छतो[17] ।। ४६

पात[1] न दीयें[2] पिता[3] कोई[4] थांरा[5] पगां[6] ।
सीस मूंडण[7] [8]होस्ये मांह[8] सोटा सगा[9] ।।
[10]अटपटो वित[10] [11]कोई करे वद एवडो[11] ।
घेर घण वेलनें[12] [13]चो लीयें छांबडो[13] ।। ५०

४८–१ ख. वधतो, ग वाघतौ । २ ख छोडतो, ग. छोडतौ । ३ ख. कूटमां । ४ ख. वीलावियो, ग वोलावीयौ । ५ ख अन । ६ ख वलज होअैं न द्वारक अ[ा वि]यो, ग नवलौ हूअौं द्वारिका आवीयौ । *ख प्रतिमें यह अश नहीं है । ७ ग. कवर । ८ ग कही । ९ ग आरोडीया । १० ग जेहा । ११ ग. बांधीया । १२ ग छोडीया ।

४९ – १ ख मंडणी मडपे, ग. मांडती मंडपे । २ ख ऊवप(छव), ग उछवे । ३ ख कर सु जोड । ख कर, ग कोड । ५ ख. व्रहैम वाली, ग. व्रहमंड वालौ । ६ ख किता । ७ ग मुझ । ८ ख पत । ९ ग मातरी । १० ख एह हो, ग हेक हो । ११ ख ग दड । १२ ग. मतौ । १३ ग छोड । १४ ग. दमगोप । १५ ग. नंद । १६ ख. कीजे. ग कीधी । १७ ग. छतौ ।

५० – १ ख. पते, ग. पांति । २ ख. दे, ग दियै । ३ ख. ओ पता । ४ ख. कोअ, ग. कोय । ५ ख. थारा, थारा । ६ ग. पगा । ७ ख. मडण, ग. मुडण । ८ ख. हुया माह, ग हुसी माहि । ९ ख. सगां । १० ख. अटपटी वात, ग अटपटौ वंत । ११ ख वैंहवो करैं ऐवडी, ग. कोई करैं एवडौ । १२ ख. फेरनें, ग. वेलनैं । १३ ख. चोळणे चवटी, ग. छोलणै चांमडो ।

---

*पद्य संख्या ३ का ख. भाग पूर्ण ।

मुझ[1] [2]सुत रुकम यहू वेर भूली[2] मता ।
पुत्र[3] पहलादनें[4] हरणाकसप[5] पिता[6] ।।
भूल[7] पित[8]- [9]मात ग्या[9] भांबलो[10] [11]सुत भणे[11] ।
[12]ओडवट प्रोहत[12] दसघोष सो[13] आंपणे[14] ।। ५१

[शिशुपालको लग्न-पत्रिका प्रेषित करना]

वात[1] [2]विरणसे नही[2] राजगुर[3] दोहषी[4] ।
लगन शशपालनें[5] वेग[6] [7]चलवो लषी[7] ।।
आव[8] शिशपालनां[9] तेण[10] उतांमले[11] ।
आपीयो[12] लगन ताय[13] लगन ले आंधले[14] ।। ५२

[शिशुपालका विवाहके लिए प्रस्थान करना और अपशकुन होना]

*[1]सांचरे मेल शिसपालनां सांमटा[1] ।
अपसकुन अनें[2] अवजोग [3]थया एकटा[3] ।।*
दशासूल[4] भद्रा वितीपात[5] [6]महूरत दीयो[6] ।
क्रमीयो[7] काल[8] चंद्र काल सनमुष कीयो[9] ।। ५३

---

५१ – १ ख. मूझ । २ ख. पत-मातनै रुकम भूलो, ग सुत रुकम वह वेर भुली । ३ ख. पूत । ४ ख. पैंहेलाद थ्या, ग पहिलादनै । ५ ख. हरकासप, ग. हिरणाकुस । ६ ख पता । ७ ख भोज, ग. भाज । ८ ख पत । ९ ख मातरो, ग मात गो । १० ख. पापल्यो । ११ ख. सुत भणै, ग. सभणै । १२ ख ऊकवट प्रोहेतो, ग उड-वट प्रोहित । १३ ख. सु., ग. सौ । १४ ख. आपणै, ग आपणै ।

५२ – १ ख. वात । २ ख वरणसी नहीं, ग. विणसै सही । ३ ग राजगुरु । ४ ख दैरषो, ग दोरषी । ५ ख. सिसपाळनै, ग. सिसपालना । ६ ख वेग । ७ ख चलव लषो, ग. चलवौ लिषी । ८ ग. आवि । ९ ख. सिसपाळने, ग. सिस-पालनै । १० ख वेहैम । ११ ख उतावलो, ग. उतामलै । १२ ख. आपियो, ग आपीयौं । १३ ख अेण, ग. पिण । १४ ख. आचलो, ग. आंधलै ।

५३ – *ग प्रतिमें यह अंश नहीं है । १ ख. सकड़ै मळै सिसपाळ मल समटा । २ ख. अनै । ३ ख थ्या अेकटा । ४ ख. दसासुल, ग. दिसासूल । ५ ख ग. वतीप्रात । ६ ख. मोहोरथ दियो, महोरत दीयैं । ७ ख चालते, ग क्रमीयो । ८ ख काळ । ९ ख. कियो, ग. कीयैं ।

बुद्ध[१] चोथो[२] [३]अने शनी ही बारमो[३] ।
अर्क[४] माठो[५] [६]अनें मंगल[६] आठमो[७] ।।
असुर[८] गुरदेव[९] [१०]गुर तणे तन[१०] आसरो[११] ।
राह[१२] करसें[१३] मूंआं[१४] पालटो[१५] रासरो[१६] ।। ५४

लंगरां[१] छोड[२] [३]अस आगलें ले आवीया[३] ।
टेगडें[४] तेहथी[५] कान टपरावीया[६] ।।
चढचौ[७] शिपाल[८] ते[९] [१०]कालरी चोघडी[१०] ।
पाघडे[११] पाउ[१२] देतां[१३] पडी[१४] सिर[१५] पाघडी[१६] ।। ५५

षुर पण[१] जीमणो[२] वार[३] थावर षरो[४] ।
रगता[५] तिथ[६] नें[७] मेह अणगालरो[८] ।।
घरांहूं[९] चालीयो[१०] जांन[११] मेले घणी ।
जीमणी देव नें[१२] सांमही[१३] जोगणी ।। ५६

५४—१ ख वुधे, ग वुध । २ ग. चौथो । ३ ख...... सनीसर वारमौ, ग शनी पिण वारमौ । ४ ख ग. अरक । ५ ग माठौ । ६ ख मंगल आवियो, ग. तिऊ मगल । ७ ग आठमी । ८ ख उसर । ९ ग गुरुदेव । १० ख नह गुर तणो नह, ग गुरु तणौ तिण । ११ ग आसरौ । १२ ख. रास । १३ ख करसी, ग करसै । १४ ख मुयी, ग मूआं । १५ ख पालटै, ग. पालटौ । १६ ग. रासरौ ।

५५—१ ख. लगरं । २ ख छोडिया, ग. छोडि । ३ ख. आगळी ल्यावियो, ग अस आगलै ल्यावियो । ४ ख. ग. टेघडै । ५ ख एक हीज, ग हेकणी । ६ ख टपरावियो । आगे ख. प्रतिमें निम्न अंश अधिक है—

'रघ सूकै मळै देव वैठी रही, तीतरो डाहैणो वोलियो त्रह त्रही ।। १०७

७ ख चड़ो, ग चढचो । ८ ख. ग. सिसपाल । ९ ख. जै, ग तै । १० ख. काळरी चोघडी, ग कालरी चौघडी । ११ ख. ग. पागडे । १२ ख. पाव । १३ ख. दैत । १४ ख पडी । १५ ख और ग प्रतियोंमें यह शब्द नहीं है । १६ ख. ग पाघड़ी ।

५६ ख हुयो, ग. पिण । २ ग. जीमणौ । ३ ख वार । ४ ग परौ । ५ ख रगता । ६ ख तेय । ७ ख ग नै । ८ ख अणगाळरो, ग. अणगालरौ । ९ ख. घरंहु, ग घराहुत । १० ख. चाळिया, ग चालीयौ । ११ ख. जंन । १२ ख ग नै । १३ ग. समही ।

चीबरी कलकले[१] वांम[२] बोले[३] छडो[४] ।
चमरूआ[५] तणे[६] सर[७] षडहडे[८] चांबडो[९] ।।
मीनडी[१०] ऊतरे[११] मले[१२] सांह्मो[१३] मडो[१४] ।
साप सूतार[१५] सोनार ने[१६] सूंबडो[१७] ।। ५७

समली[१] सांड[२] [३]सीआल नें[३] सारसां[४] ।
ए[५] थआ[६] दांहणे[७] अंग एकारसां[८] ।।
ऊतरी[९] बांब[१०] आडी जदि[११] जूजुई[१२] ।
नगर नीसार इक[१३] नार[१४] सांमी[१५] हुई[१६] ।। ५८

ओलषीआ[१] चरण[२] [३]वावरण वेवसा[३] ।
करकसा[४] रांड[५] नें[६] हांडले[७] कूकसा[८] ।।
[९]महीष भेंसो मले[९] जम्म[१०] रूपी[११] जसो[१२] ।
सबद फालू[१३] करे[१४] फरे[१५] आडो[१६] ससो[१७] ।। ५९

[१]हरण डावा दनो[१] हेक डावो[२] हणूं[३] ।
[४]घूघू ए[४] जीमणो[५] [६]कसूं कहीयें घणूं[६] ।।

---

५७ ख. कळकळे, ग. कलकलै । २ ख बम । ३ ख बोलै । ४ ख. चढी, ग चिडो । ५ ख चमरिया, ग. चमरूआं । ६ ख ग तणै । ७ ग. सिर । ८ ख पडषडै, ग पडषडै । ९ ख. चम्मडी, ग. चामडो । १० ग मीनडी । ११ ख पतरै, ग. ऊतरै । १२ ख मळै, ग. मिलै । १३ ख समो, ग. साह्मो । १४ ग मडो । १५ ग. सूथार । १६ ख. ग. नै । १७ ख सव्वडो, ग सूवडो ।

५८ – १ ख संमळी । २ ख. सढ, ग साड । ३ ख नैस्यालिया, ग सीयाल नै । ४ ख ग सारसा । ५ ख अै । ६ ख. हुया, ग. थया । ७ ख दाहैणा, ग. दाहिणै । ८ ख ग. एकारसा । ९ ख ऊतरै । १० ख. वाव । ११ ख. जका, ग जदा । १२ ख. जुजुई, ग. जूजई । १३ ख. एक । १४ ग. नारि । १५ ख सम्ही, ग. साम्ही । १६ ग. हूई ।

५९ – १ ख. ओळष्या, ग. उलषी । २ ग आचरण । ३ ख पण वागुरण छै इसा, ग वागरण सो वसा । ४ ख. क[रकसा], ग. करगसा । ५ ख. [रा]ट । ६ ख. ग. नै । ७ ख. हडलै, ग. हांढलै । ८ ख कुगसा, ग. कूकसा । ९ ख. एक भेंसो मळै, ग. मे(ए)क भेंसो मिलै । १० ख. ग. जम । ११ ख. रुपा । १२ ख अ[सो], ग जिसो । १३ ख. कालु । १४ ख. ग. करै । १५ ख. फरै, ग. फिरै । १६ ख. आडो । १७ ख सूसो, ग. सिसो ।

६० – १ ख हुयो डावो हरण, ग. हिरण टावा दनो । २ ग. डावो । ३ ख. हणू । ४ ख. घुघ यो । ५ ग. जीमणो । ६ ख. कसु अजरज तणू, ग. किसो कहीयै घणो । ७ ख. रेळयो, रेलीयो ।

रेलीयो[७] समूह[८] राजांनरा[९] रांणरो[१०] ।
माजनो[११] कोस[१२] पंचास[१३] मेलांणरो[१४] ॥ ६०

ऊपडे[१] षरच नित[२] एहश्रो[३] धांणरो[४] ।
[५]पडवडे चोपडो[५] षोहण[६] पंचाणरो[७] ॥
आवीश्रो[८] घणे[९] सि*सपाल[१०] अहवांनीए[११] ।
[१२]जरासंध दत बगतर सारीषे जांनीए[१२] ॥ ६१

त्रंबके[१] रोल[२] [३]अह कोड रोदां[३] तणी ।
काल[४] जवनां[५] तणो[६] [७]मांह केवां धणी[७] ॥
कुंदनपुर[८] गोरमें[९] आंण[१०] [११]डेरो कीश्रो[११] ।
[१२]छोडतां पाघडो साहमो छींकीश्रो[१२] ॥ ६२

[रुक्मिणी द्वारा चिन्तित होना और कृष्ण को सदेश प्रेषित करना]

[१]उछरंग नयर[१] [२]सोइ कुंवर[२] एक[३] अणमुणी[४] ।
[५]राषीयो जेहर भाईत भीर[५] रुषमणी[६] ॥

६०—७ ख रेळियो, ग रेलीयो । ८ ख. सवद, ग. ईदण । ९ ख. जद राव, ग राजानरा । १० ख रंणरै, ग. रांणरो । ११ ख. माजने, ग. माजणो । १२ ग. कोस । १३ ख. पचास । १४ ख. समेलणरै, ग मेलाणरो ।

६१—१ ख ग. ऊपड़ै । २ ख नत । ३ ख. अहेउ । ४ ख. धंणरै । ५ ख. पड़वचे चोपनै, ग पडवडै चोपडो । ६ ग क्षोण । ७ ख. पचणरै, ग. पचाणरो । ८ ख आक(व)यो, ग. आवीयो । ९ ख. घणो, ग घणै । १० ख. सिसपाळ । ११ ख अभमनियो, ग. अभिमानी ए । १२ ख. जुरासध वकत्र सारपा जंनियो, ग जरासीध देत विगत सारषे जांनीए ।

६२—१ ख. ग. त्रवकां । २ ख. रोड़ते । ३ ख. कोड़ रोद, ग त्रहिकाल रौद्रा । ४ ख. वळे । ५ ख. जवनं, ग. जवना । ६ ग तणो । ७ ख. माहे कैवा घणी, ग. माहि केवा घणी । ८ ख कुदणपुर, ग कुदणपुर । ९ ख गोयै, ग गोरमै । १० ख. राजायै, ग. आंणि । ११ ख. डेरा किया, डेरो कीयो । १२ ख. छंडतं पागडो छोकरो छीकिया, ग छोडतां पागडो सामुहो छीकीयो ।

६३—१ ख. मुणं उछरंग । २ ख नगर कुमर, . पिण कुअरि । ३ ख ऐक । ४ ख. उणमाणी, ग अणमणी । ५ ख राषियो जैहर तावीत भर, ग राखीयो जहर ताय भर । ६ ग रूपमणी ।

---

*पत्र संख्या ४ का क भाग सपूर्ण ।

विसासे[7] रुषमणी[8] रही इम[9] वासना ।
उद्दिम[10] केहो[11] करी[12] नही[13] हर[14] आसना ।। ६३

जल भरचा नेत्र[1] नें[2] सेत पेहरण[3], जुई[4] ।
हलाहल[5] छोडतां[6] छीक सनमुख हुई[7] ।।
बंभ [8]तिण दूसरो आंण बोलावीओ[8] ।
अंतरजांमी[9] तणौ[10] [11]जांणीयें आवीओ[11] ।। ६४

भणें[1] रुषमणी[2] रिख[3] भलां[4] आया[5] भई ।
[6]यादवां इंद्रनें आप[6] कागल[7] जई ।।
[8]जाइस हूं धूंधडे एम ब्राह्मण जपे ।
आप फुरमावीओ मूझसूं न थपे[8] ।। ६५

[1]विलंब इण वातरी कवर कहे मत व(क)रो[1] ।
तास आडो[2] लगन दिन[3] छे[4] तीसरो[5] ।।
पुहचसां[6] [7]काल केंह वयण[7] परमांणीओ[8] ।
[9]जो हूओ[9] जगतरा रावरो[10] जांणीओ[11] ।। ६६

६३–७ ख वमसै, ग विमासै । ८ ग रूपमिणी । ९ ख. एक । १० ख. ग उदम । ११ ग केहौं । १२ ख. कर, ग. करू । १३ ग. नहीं । १४ ग. हरि ।

६४–१ ख. नेत । २ ख हुई, ग. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । ३ ख. पैहरण, ग पहिरण । ४ ग जूई । ५ ख हळाहळ । ६ ख छोडत, ग छोडता । ७ ग. हूई । ८ ख तण तीसरै ताळ वोलावियो, ग तेण दूसरौ हेक वोलावीयौ । ९ ख अंतर-जमी, ग आतर जाणी । १० ख ग तणं । ११ ख. जंणियं आवियो, ग. जांणीयौ आवीयौ ।

६५–१ ख भावियो, ग भणै । २ ग. रुपमिणी । ३ ग रिषि, ख. प्रतिमे यह शब्द नहीं है । ख भल । ५ ख. आय्या । ६ ख. जादवानदनै दयो, ग. जादवा इद्रनै आपि । ७ ख कागद । ८ यह अश ख और ग. प्रतियोमे नहीं है ।

६६–१ ख कुयर कैहे वलव अंहैवा तणो मत करो, ग विलंब इण वातरौ कुंअरि कहे मत करौ । २ ग आडौ । ३ ख ग दीह । ४ ख. सै, ग छै । ५ ग. तीसरौ । ६ ख पोहोचसो पुहचिहु । ७ ख आज कर काल, ग कालिह कहि वचन । ८ ख. परमाणियो, ग. परमाणीयौ । ९ ख. जै हुयस, ग. जौ हुवै । १० ख. रायंरो, ग रावरौ । ११ ख. जणियो, ग. जाणीयौ ।

[सदेशवाहक विप्र का द्वारिका-आगमन]

जांमिनी[1] कुंदनपुर[2] नयर[3] सूतो[4] जिके[5] ।
द्वार[6] माहाराजरे[7] जागीओ[8] द्वारके[9] ।।
जागीयो[10] नगर [11]जांन वल[11] सोभी[12] जुवे[13] ।
[14]हेतरा जुगतसुं जगत[14] वैकुंठ हुवे[15] ।। ६७

आत[1] गरजें[2] कवरण[3] करे[4] छिलत[5] भरण ।
कहो[6] नगर [7]कूंण नें[7] नगर राजा कवण ।।
गडीयडे[8] समंद[9] [10]जल नदीस[10] गगोमती[11] ।
देव श्रीक्रसन[12] [13]नें नगर[13] द्वारामती ।। ६८

हरषीयो[1] रिष[2] मन[3] [4]मांह आणद हुओ[4] ।
जीव जांमरण[5] मरण कीध जोषम जुओ[6] ।।
देवनें[7] देव देवाधि[8] दरसण दीयो[9] ।
पेहल[10] परणांम[11] कर[12] कुशलपण[13] पूछीयो[14] ।। ६९

घर कदे मेलीया[1] [2]घरें कुशल छे[2] घणो ।
आपणो[3] वास कत[4] [5]क्यो हूओ[5] आवणो[6] ।।

---

६७ — १ ख. जमणी, ग जामिनी । २ ख. कुदणपुर । ३ ख नगर । ४ ग सूतौ । ५ ख जक । ६ ग द्वारि । ७ ख. ग महाराजरै । ८ ख. जागियो, ग. जागीयौ । ९ ग द्वारिकै । १० ख. जागियो, ग. जागीयौ । ११ ख पण नवळ । १२ ख ग सोभा । १३ ख जोयै, ग जूऐ । १४ ख होयै तो जगतरो जुगत, ग. जगतरा सुगतिसो हेत । १५ ख. होयै, ग हुवै ।

६८ — १ ग. आन्त । २ ख. ग. गरजै । ३ ख. कँवण, ग कमण । ४ ख ग करै । ५ ख. छळता, ग चिलता । ६ ख. कवण ओ, ग. कहौ । ७ ख. नगर नै, ग. कवण । ८ ख. गडीयडै, ग गड़ीअड़ै । ९ ग समद्र । १० ख. जळ नदी, ग. नदी । ११ ख आ गोमती, ग. आंगोमती । १२ ख तो श्रीकसन, ग. श्रीकिसन । १३ ख. नगर, ग नै नगर ।

६९ — १ ख हरषियो, ग हरषीयो । २ ख रष । ३ ग मनै । ४ ख -अधक अणद हुयो, ग. अधिक आणंद हुओ । ५ ख जमण । ६ ख जुयो, ग जूओ । ७ ख. ग. देवनै । ८ ख देवाध । ९ ख. दियो, ग. दीयौ । १० ख. ग. प्रथम । ११ ख परणाम । १२ ग करि । १३ ख. कुसल हर, ग. कुसल पिण । १४ ख. पूछीयौ ।

७० — १ ख. छडिया, ग. मेल्हीया । २ ख. कुसल छै घर, ग. घर कुसल छै । ३ ग. आपणौ । ४ ख. कथ, ग. कित । ५ ख. केम थ्यो, ग हूओ क्यो । ६ ग. आवणौ ।

पाट ताय[७] [८]भीमस वसूं कुंदणपुर[८] ।
को कीयो[९] [१०]राज दस नम्रण[१०] भरती कुंवर[११] ।। ७०

[१]ब्रह्म थें[१] हेकला[२] किने दूजो[४] वले[५] ।
कहाडीयो[६] मुष वयण[७] [८]कनां लष्यो[८] कागले[९] ।।
छोडीयो[१०] छाप बंध जास[११] हूंता[१२] जतन ।
काट[१३] थेली[१४] थकी[१५]* वांचे[१६] श्रीक्रसन[१७] ।। ७१

करन[१] उवारीश्रो[२] जेम करुणा[३]-करण ।
[४]सरण तिम राय तिम राष[४] असरण सरण ।।
थंभ प्रगट[५] [६]पाथ आसुरा सुर राषीओ[६] ।
राषीउ[७] जेम [८]पेहलाद पण राषीओ[८] ।। ७२

पांच[१] उवाराया[२] संत[३] जिम पांडवा[४] ।
[५]काट लाषागृह[५] मांहिथी[६] केसवा[७] ।। ७३

---

७० – ७ ख. तथ, ग तैं । ८ ख. भीमक नै वास कूंदणपुर, ग. भीषमक्र वसां कुदणपुर । ९ ख. को क्रियो । १० ख. राधका नैण, ग राज दिस नैण । ११ ख. कुवर, ग कुअर ।

७१ – १ ख ब्रम थे, ब्रहम थे । २ ख एकला । ३ ख ग कना । ४ ग. दूजा । ५ ख. वळे । ६ ख कहाय्या, ग कहावीयो । ७ ख. ग वचन । ८ ख काये वचियो, ग. लिष्यो की । ९ ख. कागळे । १० ख छोडियो, ग. छोडीयो । ११ ख. जके । १२ ख. हूता, ग हुती । १३ ख. काढ, ग. काढि । १४ ख, थेलिया । १५ ख थका । १६ ख. वचियो, ग वाचीयो । १७ ख. श्रीकसन, ग श्रीकिसन ।

७२ – १ ख ग करण । २ ख उगारियो, ग उवारीयो । ३ ख करणा, ग. करूणा । ४ ख राष जेम राष जैम सरण, ग सरण हिम राष राषि । ५ ग. परगट । ६ ख थिया सूर उसर साषियो, ग थीया सुर असुर साषीयो । ७ ख राष, ग. राषीयै । ८ ख रष पैहैलाद जेम राषियो, ग. पहिलाद पिण राषीयो ।

७३ – १ ख ग पच । २ ख. उगारिया, उवारीया । ३ ग. सैत । ४ ख. पडवं, ग. पंडवा । ७ ख. काढ लाषा जमर, ग काढि लाषाग्रहा । ६ ख माहैथी । ७ ख. केमव ।

---

* पत्र ४ का ख. भाग पूर्ण ।

उतरा[८] ग्रभ[९] छे[१०] संग[११] अवलोकणी[१२] ।
राषि[१३] इस[१४] राषि[१५] इम[१६] ऊचरे[१७] रुषमणी[१८] ।। ७३

कंत श्रीनारयण[१] [२]ते दन[२] लषमी[३] कही ।
राज[४] रघुनाथ[५] ते[६] सती सीता सही ।।
वेद न[७] [८]लहे परसूं[८] परस[९] नही[१०] पारणी ।
राज[११] [१२]श्रीकृसन तो[१२] [१३]आज हूं[१३] रुषमणी ।। ७४

दुलहणी[१] जांण[२] दमघोषरो[३] दीकरो[४] ।
[५]दल सबल[५] [६]माझीयां हूओ[६] दिन[८] दूसरो[८] ।।
वैर[९] वण[१०] वालीयें[११] राज तो[१२] क्युं[१३] रही ।
नेट[१४] सूरो[१५] हणे[१६] [१७]तो असुर आवे नही[१७] ।। ७५

सुसर[१] [२]वह्यो संकर[२] राज सोइ[३] सांभली[४] ।
माहेसना[५] [६]सती ताय[६] जनम [७]दूजें मली[७] ।।

७३—८ ख. ग उत्तरा। ९ ख. पथ। १० ख नै, ग. चो। ११ ख ग्रभ। १२ ख. अण लोकणी, ग. अवलोकणी। १३ ख. राष। १४ ख जेम, ग. इस। १५ ख राप। १६ ख जेम, ग इमं। १७ ख उच्चरै, ग. ऊचरै। १८ ग. रूपमिणी।

७४—१ ख श्रीनारियण, ग श्रीनारीयण। २ ख हुई ज, ग. त दन। ३ ग. लिषमी। ४ ग. राजि। ५ ख. ग रुघनाथ। ६ ख. हू, ग. तौ। ७ ख ना। ८ ख. लहू तो, ग. लहै वरसु। ९ ग पुरस। १० ख. मे, ग. लही। ११ ग राजि। १२ ख. श्रीकसनने, ग श्रीकिसन तौ। १३ ख. आज हू, ग आजि हु। १४ ग रूपमणी।

७५—१ ख. दुलैहणी। २ ख जंण, ग. जांणि। ३ ख. दमवा[घो]परो, ग दमघोपरो। ४ ग दीकरो। ५ ख दळ सवळ। ६ ख रचत हुयो, ग सभीयै हुओ। ७ ख वन। ८ ग दूसरो। ९ ख. वेरे। १० ग विण। ११ ख. वाळिय, ग वालीयां। १२ ख वण, ग तौ। १३ ख, कम। १४ ख नटे। १५ ग. सूरो। १६ ख. हण्या। १७ ख. सूर आवै नहीं, ग तोय सूर आवै नहीं।

७६—१ ग. सुसुर। २ ख सकर वर, ग वहीयो सकर। ३ ख नै, ग. सो। ४ ख. संभळी। ५ ख. महेसनै, ग. महेम। ६ ख. सतहु। ७ ख दूजै मळी, ग. बीजै मिली।

[8]दिवस तीजा तणे[8] पोहर[9] चोथे[10] दुणे[11] ।
अंबिका[12] [13]तणे मठ सेहट छें आपणे[13] ॥ ७६

निमषरो[1] विलंबरो[2] नाथ अवसर नथी ।
[3]श्री कृष्ण मांगीओ आंण[3] रथ सारथी[4] ॥
[5]श्रीकिसन ब्राह्मण[5] तीसरो[6] सारही[7] ।
विदर्भा[8] नगर ततकाल[9] [10]आया वही[10] ॥ ७७

[श्रीकृष्ण का कुंदनपुर आगमन]

आवीयो[1] नयर[2] [3]रथ हूंती क्र[ऋ]ष[3] ऊतरो[4] ।
कुंअरि[5] राजा तणी[6] जांण[7] वेहला[8] करो[9] ॥
वहें[10] दुजराज[11] गो[12] काज वधांमणी[13] ।
राज भींतर[14] [15]कुंअरि रहण[15] जित[16] रुषमणी ॥ ७८

सोज[1] दुज आवीयो[2] वाट जोती सीया[3] ।
आवीया[4] श्रीकिसन[5] सुध पष आवीया[6] ॥
[7]वेग लछमी अमी[7] पाय लायें[8] वही ।
[9]ऋष तणे[9] कवण[10] निध[11] [12]जाय पाछी[12] रही ॥ ७९

---

७६ – ८ ख. ग तीसरा दीहरै । ९ ख पोहोर, ग. पहुर । १० ख चोथै, ग, चौथे । ११ ख. पुणे, ग पुणो । १२ ख अंबका । १३ ख. तण मढ सेटसै आपणै, ग तण मढि सहीटसै आपणौ ।

७७ – १ ख नमषरा, ग निमिषरा । २ ख. वल[ल]बरो, ग. विलबरौ । ३ ख श्रीकसन मगियो अण, ग श्रीकिसन मागीयौ आणि । ४ ख. स्वारथी । ५ ख श्रीकसन ब्रहमण, ग श्रीक्रिसन ब्राह्मण । ६ ग तीसरा । ७ ख स्वारथी । ८ ख. वीद्रवा, ग वेदवा । ९ ख तथ षेड, ग. तत्काल । १० ख. आय्या वथी [ही] ।

७८ – १ ख. आविया, ग आवीयौ । २ ख. नगर । ३ ख. रथ हूत वप्र, ग रथ हुंती रिष । ४ ख ग ऊतरौ । ५ ख. कुयर । ६ ख. सरस । ७ ख. जंण । ८ ख. वेगो, ग वहिली । ९ ख. ग करौ । १० ख वहै, ग वहौ । ११ ख दुज । १२ ख. आवियो, ग गौ । १३ ख. वाधावणी, ग. वाधामणी । १४ ख. ग. भीतर । १५ ख, रहै कुयर, ग. कवर रहण । १६ ख जत, ग. जिथ ।

७९ – १. ख सोईज । २ ख आवियो, ग. आवीयौ । ३ ख ग श्रीया । ४ ग. आवीया । ५ ख कसन पण, ग श्रीक्रिसन । ६ ख आविया । ७ ख. वेघ लषमी लुळे, ग. वेग लिषमी अनै । ८ ख. ग. लागी । ९ ख. रष तणो, ग. रिषि तणै । १० ख कमण रे । ११ ख. धनका । १२ ख पाछळ, ग जास पाछी ।

[1]ओरीया मूंठ[1] भर मांह[2] मुष आपरा ।
[3]श्रीकृष्ण तंदलां जांण सदांमरा[3] ॥
[4]जगतपति आवीया[4] हर्ष[5] [6]आउ जुवो[6] ।
हरन्पते[7] बावनें[8] चंदन[9] प्रेमल[10] हुवो[11] ॥ ८०

[बलदेव का श्रीकृष्ण की सहायता के लिए आगमन]

आव[1] [2]प्रतीहारसो कहे[2] बलदेव इम[3] ।
[4]भणहर्णे भुवन कृसन न दीसे[4] किम[5] ॥
दुज हेक[6] आवीयो[7] राज दुरंतरी[8] ।
पूछीओ[9] कुशल[10] [11]हरि हाथ दीनी[11] पत्री ॥ ८१

[1]जोवीओ वांछ[1] पण[2] [3]कहें न जणावीओ[3]* ।
[4]आवरां गेहलतां[4] रथ आणावीओ[5] ॥
आंणीओ[6] रथ[7] [8]हथीयार ओधारीया[8] ।
दुज[9] दुआरका[10] श्रीनाथ साधारीया[11] ॥ ८२

८०—१ ख ओरिया मूठ, ग उरीया मुठि । २ ख. माह, ग माहि । ३ ख. श्रीकसन तदला जेण सूदम्मरा, ग श्रीक्रिसन तदुला जाणि सुदामारा । ४ ख जगतपत आवियो, ग. जगपती आवीयै । ५ ख ग हरष । ६ ख हुय जूजुयो, ग आयौ जूओ । ७ ख हरनै, ग. हरन नै । ८ ख ग वावनै । ९ ख. चदण । १० ख. परमळ । ११ ख हुयो, ग हूओ ।

८१—१ ग आवि । २ ख पत्यियारसूं कही, ग प्रतिहारसौं कहै । ३ ख. अेम । ४ ख. भणहण्या भोयैण नै कसन अय नही, ग. भणहणै भुवण क्रिसन न दीसै । ५ ख. केम । ६ ख एक । ७ ख आवियो, ग आवीयौ । ८ ख. दुरत्तरी । ९ ख. पूछियो, ग पूछीयो । १० ख ग कुसल । ११ ख नै हाथ दीधी ।

८२—१ ख जणायो वांच, ग जोयो ते वाच । २ ग. पिण । ३ ख. कहै न जणावियो, ग. कहे न जणावीयो । ४ ख. आप[ष]रे गहलतै, ग. आपरे गहलते । ५ ख आणावियो, ग आणावीयो । ६ ख आणियो, ग आणीयो । ७ ख रथ्थ । ८ ख. हथियार अधारिया, ग. हथीआर ओधारीया । ९ ख दूज । १० ख ग. दारक । ११ ख साधारिया, ग. सिर धारिया ।

---

*पद्य स० ५ का क भाग पूर्ण ।

दूसरी[1] नांलहूं[2] पंथ [3]दक्षिणा धरें[3] ।
काहकां[4] भाग [5]अणभाग[5] काहां[6] करें[7] ।।
पवन [8]वेग नें[8] पांणी[9] [10]पंथा पषरे[10] ।
सांहणी[11] मन वेगि[12] तिके[13] सज करे[14] ।। ८३

सूरमे[1] सूर यादव[2] [3]साव षरां[3] ।
तेडीया[4] रांम जे[5] कांम परतीतरा ।।
जरद जोसण[6] कडी[7] टोप हाथल[8] जडी[9] ।
जोपती[10] रागमें[11] लोहमी[12] मोजड़ी ।। ८४

झूसणा[1] जांण[2] जमात नव नाथरी ।
छापीया[3] षाग[4] छत्रीस[5] सूधा[6] छरी[7] ।।
[8]लाय लगांण[8] पलांण[9] सपष्षरी[10] ।
तांणीया[11] तंग उत्तंग[12] आया[13] तुरी ।। ८५

वेगमें[1] षोहणी हेक[2] वीणारीया[3] ।
पाषरां[4] [5]घाल हरि[5] लार पाधारीया[6] ।।

८३–१ ख दून । २ ख लियं चालियो, ग. लहु । ३ ख. दषणा घरैं, ग दषिणा घिरै । ४ ख क्यूहीक, ग कहां इक । ५ ख. अभाग । ६ ख. क्यूंही, ग कहां । ७ ख. ग. करैं । ८ ख. वेगी, ग. वेग ने । ९ ग. पाणी । १० ख. पथ ले पाषरा, ग पथा पाषरे । ११ ख. सहणी । १२ ख. वेगी, ग. वेगी । १३ ख तका । १४ ख. सज करा, ग. सझ करे ।

८४–१ ख सूरमे, ग. सूरमै । २ ख. ग. जादव । ३ ख. ग. सवा षरा । ४ ख. तेड़िया, ग तेड़ीया । ५ ख. जै । ६ ख. जूसंण, ग. जूसण । ७ ख कसण, ग. कड़ी । ८ ख हाथळ । ९ ख. ग जडी । १० ख. जोपत । ११ ख. रागसू, ग रागमै । १२ ख. सारमै ।

८५–१ ख. जुसण्या, ग. जूसणां । २ ख. जण । ३ ख संगिय, ग चापीया । ४ ख. सग । ५ ख छत्तीस । ६ ख. आवध । ७ ख ग. छुरी । ८ ख. पलणे भायै, ग. लाई लगांम । ९ ख लगाम । १० ख. सू पाषरी, ग. सै पाषरी । ११ ख तणिया । १२ ख. ऊतंग, ग. उतग । १३ ख वाळा, ग. आणे ।

८६–१ ख. वेगमै, ग. वेग । २ ग. एक । ३ ख. वनारिया । ४ ख. पाषरे । ५ ख परहरे, ग. घाति हर । ६ ख. पधारिया ।

कुंत[7] रागां[8] समां[9] रोपीया[10] कंधली[11] ।
[12]ढलकती मेलीयां[12] षेंग[13] वागां[14] ढली[15] ।। ८६

[1]आपडो षडो[1] अकरूर आषे[2] इहीं[3] ।
नाथ आहीरीयां[4] सारषो[5] पण[6] नही ।।
[7]तारव्या जादवें साट सेढां[7] तणी ।
[8]धांमण वृष[8] अंतरीप ओषा[9] धणी ।। ८७

वेलीये[1] रथ रथां[2] समा वेडीया[3] ।
षाग वाहे[4] [5]भडे अंतरीषें षेडीया[5] ।।
वीच[6] [7]राषे नही[7] [8]पंथ वेढीमणा[8] ।
तेजीयां थ्रोडीयां[9] कांन[10] [11]सोरां तणा[11] ।। ८८

जांण[1] अवसांण गिर निमष[2] न रहे[3] जुआ[4] ।
हलधरे[5] गिरधरे[6] आंण[7] [8]भेला हुआ[8] ।।
*अणषीयो[9] साथ श्रीनाथ सो[10] आपणो ।
आकरो दीध वलदेव ओलांहणो[11]* ।। ८९

८६—७ ख कूत । ८ ख. राग । ९ ख ग. समा । १० ख. रुपीया । ११ ख कंघले, ग. काधले । १२ ख. ढलवळा मेळिया, ग ढलकतो मेलीयो । १३ ख. पाग । १४ ख वाग । १५ ख. ग ढले ।

८७—१ ख. आपडे षड़े, ग. आपणो पडो । २ ख आपें । ३ ख अही, ग. इही । ४ ख आहीरीअं, ग. आरीयां । ५ ग. सारिषो । ६ ख. पण, ग. पिण । ७. ख. तोरवे जादवं सेड़ साट, ग. तोरया जादवे साट सेढ़ा । ८ ख ध्रमणे बीष, ग. धांमणा व्रिष । ९ ख. पाषे, ग पापा ।

८८—१ ख वेलिये, ग वेलीए । २ ख रथ । ३ ख. वेड़िया, ग वेसाड़ीया । ४ ख. वाह । ५ ख. भड अंतरप पेडिया, ग. भडे अंतरिप पेडीया । ६ ख. वीच । ७ ख ग. रापै नहीं । ८ ख. माहे वेंढमणा । ९ ख दौड़िया, ग. थ्रोडीयां । १० ग. काहू । ११ ख सूरं तणा, ग सोरा तणा ।

८९—१ ग जाण । २ ख नमष । ३ ख ग. रहै । ४ ख जुया, ग. जूआ । ५ ख हलघर, ग हलधरा । ६ ख गिरधरां । ७ ख अंग, ग. आवि । ८ ख. भेळा हुआ । *—* अंश ग प्रतिमें नहीं है । ९ ख अणदियो । १० ख सू । ११ ओल्लहणो ।

षेंग[1] [2]पेंने घणो[2] षेह भीने[3] षत्रे[4] ।
नंदरो ओपीयो[5] [6]जांण [चंद्र] नाषत्रे[6] ॥
[7]श्रीकृसन संकरषण[7] आवीया[8] सांभली[9] ।
राव भीमंक[10] तणे[11] जांण[12] पूगी रली[13] ॥ ९०

[श्रीकृष्ण का कुदनपुर में स्वागत]

विसनु[1] आईयो[2] मंगल [3]घरा घर वरतीया[3] ।
[4]रुकमीया हेक[4] वण[5] सहू[6] [7]रलियात थीया[7] ॥
दीनबंधू तणा सेन दरसावीया[8] ।
चोसरी[9] प्रज मेडे[10] [11]चडे चाहीया[11] ॥ ९१

मन तणी कलपना[1] हूंती[2] जो[3] जास मन ।
[4]दुरस त्यां तेहडा आपीया[4] अंग[5] दहन ॥
*[6]जोसती सकलची पेष जनार्जन[6] ।
मोरीया मन [7]कंधु वसंते[7] अंबवन* ॥ ९२

[1]परस साधु तणा पेष[1] मुर [2]भुवणपत[2] ।
विक*सीया[3] वदन [4]राजीव जिम[4] सरद रत[5] ॥

---

९० – १ ख. ग. षंग । २ ख पैला अनै, ग. पैनै घणै । ३ ख भीना । ४ ख षत्री । ५ ख. ओपियो, ग उपीयो । ६ ख चद्र जम नाषत्री, ग चद्र जिम नाषत्रे । ७ ख. सकरषण श्रीकसन, ग. श्री किसन सकरषण । ८ ख आविया । ९ ख संभळी, ग सभली । १० ख ग भीमक । ११ ग तणै । १२ ख मने ग. राज । १३ ख रळी ।

९१ – १ ख. ग. विसन । २ ख. आआ, ग. आयै । ३ ख घरो घर वरतिया । ४ ख रुषमीआ अेक, ग. रुषमीया एक । ५ ग विण । ६ ख सको । ७ ख रळीआतिया, ग. रूलीयातीयां । ८ ख दरसाविया, ग. दरसाहीया । ९ ख चोथरी । १० ख मैडचा, ग. मेड़े । ११ ख चडै चाहिया ।

९२ – १ ग कल्पण । २ ख हती, ग हुती । ३ ख. जोओ । ४ ख हेतसू सकले अंछया, ग. दरस त्यां तेहडा आपीया । ५ ख अनालेहे । *—* अश ख. प्रतिमें नहीं है । ६ ग जोति सकलचा पेषि जनारजन । ७ ग. किधों वंसते ।

९३ – १ ख. पेष सावू तणा तणी । २ ख. भोयण परत, ग भवरापति । ३ ख. ……साया । ४ ख. कायै कीमल्याए । ५ ग रिति ।

---

*पत्र स० ५ का ख भाग पूर्ण ।

[६]ग्ररपीयें उदकसुं सुक्रत[६] [७]ग्राप ग्रापणो[७] ।
परणज्यो[८] रुषमणी[९] किसन[१०] वर दल[११] पणो[१२] ॥ ९३

जांनरे[१] [२]कांन प्रत सांभल्यो[२] जू जुवो[३] ।
हेक तो[४] लगन विच[५] विघन[६] [७]मोटो हुवो[७] ॥
[८]गांमरा गूढ[८] संपेष डेरे[९] गया ।
थाहरे थाहरे जांण वाणा[१०] थया[११] ॥ ९४

[१]ग्रावीया किसन[१] बलदेव ग्रण कोकीया[२] ।
सुहड[३] सिसपाल भूपाल[४] भेंभीतया[५] ॥
सबल[६] माया प्रबल[७] ताहरी सांमला[८] ।
ग्रोलषे[९] प्रसुण[१०] पण[११] [१२]तजे न न ग्रांमला[१२] ॥ ९५

षाग धूणे[१] षत्री[२] कुंत[३] [४]कोजें कीयें[४] ।
मूंछ [५]ताणे मुहें[५] होड[६] कूंदें[७] हीयें[८] ॥
[९]गाजते वाजते[९] राव सांमा[१०] गया ।
ग्रंगसो[११] ग्रंग श्रीरंग ग्रालंगया[१२] ॥ ९६

---

९३ – ६ ख. ग्ररपियो सुक्रतसां उदक, ग. ग्ररपीयो उदकसु सुक्रित । ७ ग ग्रापा पणो । ८ ग. परणजो । ९ ग रूखमिणी । १० ख. कसन । ११ ख दळ । १२ ख. पुणो, ग. पणो ।

९४ – १ ख जंनरै । २ ख. सांभळ्यो कांन प्रत, ग कान पति सांभल्यो । ३ ख जुयो ग जूग्रो । ४ ग. तो । ५ ख. वच । ६ ख. बघन । ७ ख. सबलो हुयो, ग मोटो हूग्रो । ८ ख. जनिया साभ्र । ९ ख. डेर । १० ख यह शब्द नहीं है, ग. बांणा । ११ ग थीया ।

९५ – १ ख. ग्राविया कसन । २ ख. चीतिया, ग कोकीयो । ३ ख. सहत, ग. सहड़ । ४ ख भूपाळ । ५ ख. सह चेतिया, ग. भेंभीतीया । ६ ख. सबळ । ७ ख. प्रबळ । ८ ख. सामळा । ९ ख ग ग्रोलषै । १० ख. प्रसण, ग. पिसण । ११ ग पिण । १२ ख. तजै नह ग्रांमळा, ग. तजै ग्रांमला ।

९६ – १ ख धूणै, ग. धूणे । २ ग. षित्री । ३ ख कूत । ४ ख. कोळा कियै, ग कोलू कीयै । ५ ख तंणै मूष, ग ताणे मुहे । ६ ख ग होड । ७ ख. कूदै । ८ ख हियै, ग. हीयै । ९ ख. गाजता बाजता । १० ख. संभ्का, ग. सांम्हा । ११ ख. ग. ग्रंग सु । १२ ख ग्रोलगिया, ग. ग्रालंगीया ।

सबेन[1] सतापरा[2] पाप[3] जाता[4] समी ।
आठ[5] अंग ऊपरा[6] जांण[7] ढलीयो[8] अमी ॥
महमहणरा व बलदेवनां[9] मेलीया[10] ।
ओद्रमी[11] [12]वाट पट पाट[12] उषेलीया[13] ॥ ९७

आव[1] तर[2] कलप वृष[3] छांह[4] [5]जांण आंगणे[5] ।
[6]केहल कसतूरीयां[6] [7]महल मांणक[7] करणें[8] ॥
षंभ[9] [10]परवालीया मालीया[10] सात षण ।
देव डेरा दीया[11] तेथ कालीदमण ॥ ९८

किसन[1] बलदेवची[2] भगति[3] भीमक करे[4] ।
पाय[5] पाषलि[6] [7]धर वरण मुष[7] वावरे[8] ॥
लंगरू सहित[9] परवार[10] सारे[11] लीयो[12] ।
कुटंब[13] सह[14] आपणो[15] प्रथम पावन कीयो[16] ॥ ९९

देत[1] [2]हरदा तणो[2] हेत[3] कंन्या[4] दने ।
समझीया[5] सकल [6]कना न[म]दन मोहन[6] मने ॥

---

९७ – १ ख सुवैनी, ग. सवैन । २ ख सपचतै, ग. सतापरी । ३ ख ग ताप । ४ ख जोता । ५ ख ओठ । ६ ख. ऊपरै । ७ ग जाणि । ८ ख ढळियो, ग. ढलीयौ । ९ ख. बलदेवसू, ग बलदेवनै । १० ख मेळिया । ११ ख. ऊघमे, ग. ओद्रमी । १२ ग पट पाट । १३ ख ऊषेलिया, ग ऊखेलीया ।

९८ – १ ख. आंणिया, ग आवि । २ ख. प्रतिमें यह शब्द नहीं है । ३ ख ग्रष, ग. व्रिष । ४ ख छंह । ५ ख तण अगणं, ग. तिण आगणै । ६ ख कहल कसतूरिय, ग कलह कसतूरीया । ७ ख. मैहल मणक । ८ ख. ग कणै । ९ ख ˙ ˙, ग खस । १० ख. परवालिय मालिय । ११ ख. दिया, ग हूआ ।

९९ – १ ख. कसन । २ ख ग. बलदेवरी । ३ ख. भुगत, ग भगत । ४ ख. ग करै । ५ ख ग. पाव । ६ ख. पषाळनै, ग पाषाल । ७ ख चरण मुष । ८ ख. वावरै, ग वापरै । ९ ख. लार । १० ख. ग. परिवार । ११ ख सारो । १२ ख. लियौ । १३ ख कुटम । १४ ख. सोहो, ग सहि । १५ ख आंपणौ । १६ ख. कियो, ग, कीयौ ।

१०० – १ ख हेत । २ ग. हिरदा तणौ । ३ ख देत । ४ ख. ग. कन्या । ५ ख. समझिया । ६ ख. पै वेह हेत मोहण, ग. कन मदनमोहण ।

वात राजा तणे[७] चित चोकस[८] वसी[९] ।
[१०]काल जांणे कवण[१०] कडण[११] वैसो[१२] कसी[१३] ॥ १००

दायजो[१] आज आसीस [२]मस दीजीयें[२] ।
लाग दापो[३] [४]करें धूपणो लीजीयें[४] ।
धूपणा आरती आंण आगें[५] धरी ।
उर वडा[६] माचवा[७] प्रथम आसीसरी ॥ १०१

राव राजांण[१] जगदीसरा जण रहे[२] ।
[३]गार मृग[३] मादलो[४] [५]छीर ठाढा[५] ग्रहे[६] ॥
*[७]मृदनें मंजनें[७] भाव भोजन भलें[८] ।
[९]वेग वर मालीयादि वसद राउलें[९]* ॥ १०२

आज पीउ[१] देष[२] दिन[३] [४]लगनचो उभरें[४] ।
[५]घरण जंपें[५] कटक बिहां[६] नोबत[७] घुरें[८] ॥
[९]किम हुसे[९] कंत[१०] ए जरद पाषर जडे[११]* ।
[१२]कंन्या हेक[१२] नें[१३] वर दोय [१४] चडीया कडे[१४] ॥ १०३

१००—७ ख तण, ग. तणे । ८ ग चोकस । ९ ख. वसो । १० ख. कालह जणे कमरण, ग कालिह जाणे कवणि । ११ ख वात । १२ ख ग वैसे । १३ ग. किसी ।

१०१—१ ख डायँचो, ग डाइजो । २ ख मझ दीजिये, ग मिसी दीजीयै । ३ ख. ग दापा । ४ ख. करे साय सोहो लीजिये, ग करै धूपणा लीजियै । ५ ख आगल, ग आगलि । ६ ख वड, ग वड़ि । ७ ख ग माचवी ।

१०२—१ ख. राजन, ग राजण । २ ख रहै । ३ ख भोम तणे । ४ ख बदले, ग. मदलो । ५ ग्रघ थाढा, ग. वार गाढ़ा । ६ ख. ग्रहै । *—* दोनो पक्तियां ग. प्रतिमे नहीं हैं । ७ ख. मरदने भोजने । ८ ख भला । ९ ख. वालिया देव नसदेवरा बाघला ।

१०३—१ ख श्री ग. प्री । २ ख देषती । ३ ख. प्रतिमें नहीं है । ४ ख लगनरै आसरै, ग. लगनचो ऊभरै । ५ ख घोर पड, ग घरणि जपै । ६ ख. वहु दसा, ग विहुं । ७ ग नोबति । ८ ख ग. घुरै । ९ ख जको होसी, ग. किमं हुसै । १० ख कसु । ११ ख. जुडै । १२ ख कनिया एक । १३ ख. प्रतिमे नहीं है, ग नै । १४ ख. चढिया कडै, ग. चढीया कड़े ।

करो[1] [2]कांमण पसा[2] केण[3] कारण कसे[4] ।
हरि[5] तणो[6] [7]जांणीयो सोइ[7] आषर हुसे[8] ॥
देवरी जातनां[9] पित[10] मात [11]दीनो दूओ[11] ।
[12]हेरती वाट तिथ माग[12] मुगतो[13] हूओ[14] ॥ १०४

[श्रीरुक्मिणी का अंबिका पूजन के लिए प्रस्थान और सुरक्षा का प्रयत्न]

अंबिका[1] जावनो[2] रुषमणी[3] आदरे[4] ।
[5]कुंवर सिसपालनें जांण[5] [6]षण षण[6] करे[7] ॥
मनें[8] सिसपाल[9] जरसिंध[10] [11]बेठा मतें[11] ।
जालवण[12] कीजीये[13] अंबिका[14] जोहरते[15] ॥ १०५

[1]षोहण पंचांणसें[1] हेक[2] षोहणी[3] ।
आवसे[4] नहीं[5] [6]चोगांन बांधे[6] अणी ॥
जंपे[7] जरसिंध[8] ए[9] घात जो सेंघणी[10]
राषीयें[11] रतन जिम[12] जतन कर[13] रुषमणी[14] ॥ १०६

---

१०४ – १ ख कहै, ग करौ। २ ख नर पैत। ३ ख चीत, ग तेण। ४ ख कसे, ग कसै। ५ ख ग हर। ६ ग तणौ। ७ ख चीतियो सोईज, ग जाणीयो सोज। ८ ख होसे, ग हुसै। ९ ख. जात। १० ख पत, ग पिण। ११ ख दीधो दूयो, ग दीनौ दूओ। १२ ख हरती गाढ पण माढ। १३ ग मुगती। १४ ख हुयो, ग हूऔ।

१०५ – १ ख ग अवका। २ ख जात ने, ग जाय ना। ३ ग रूषमिणी। ४ ख ग आदरै। ५ ख कुयर सिसपाल सुजण, ग. कुअर ससिपालाना जाणि। ६ ग षिण षिण। ७ ख ग. करै। ८ ख. मळे, ग मने। ९ ख सिसपाळ। १० ख हुरपाळ, ग. जरासिंध। ११ ख. ग वैठा मते। १२ ख वैण। १३ ख कीजिये, ग कीजीये। १४ ख ग अबका। १५ ख जोयैतै, ग जुहारतै।

१०६ – १ ख. षोहणी पचणुसु, ग क्षोहण पचाणसौ। २ ख ग हेकणी ३ ग. क्षोहणी। ४ ख आवसे, ग आविसै। ५ ख केम। ६ ख मैदन वधिया, ग मैदान वाधै। १७ ख ग जपै। ८ ख जुरासींध, ग जरासींध। ९ ख ते। १० ख लाधी घणी, ग सैघणी। ११ ख. राष जु, ग राषियै। १२ ग जिम। १३ ग करि। १४ ग रूषमणी।

पाटवी कंवर[1] वण[2] सेंहर[3] सहू[4] पारको[5] ।
मूंसलेह[6] लें[7] वलदेव पण[8] मारको[9] ।।
ओलख्यो[10] पालख्यो[11] एह[12] छे[13] कुवको[14] ।
धीरता [15]को मतां[15] अवस देसी[16] धको[17] ।। १०७

सांहणी[1] आंण[2] पलांण[3] पलांण सह[4] ।
वांकडां[5] भडां[6] कज पवंग[7] ताता[8] वलह[9] ।।
सावता[10] ठाकुरे[11] [12]चढो पेहरो सलह[12] ।
कुंवर[13] घरे[14] अजुं[15] कटक हूई[16] त्रुहकह[17] ।। १०८

साकतें[1] जिण[2] [3]ओलांण सावख्खरां[3] ।
पूठ[4] [5]कोडी धजां घातजें पख्खरां[5] ।।
[6]नागारां बांधिआं आंमो सांमा नाडीयां[6] ।
[7]ऊपरें ढाल सिंदूर अंबाडीयां[7] ।। १०९

भूप [1]वहु रूपत[1] सरूप[2] लीधें[3] भया ।
[4]जांण रांजिंद्र जोगिंद्र मर्नें रया[4] ।।

१०७—१ ख कुयर, ग. कवर । २ ग विण । ३ ख ग नगर । ४ ख. सुहो ग सहि । ५ ग पारको । ६ ख. ग मूसलेह । ७ ख ग ले । ८ ख. सं, ग पिण । ९ ग मारको । १० ख ऊलख्या, ग. उलख्यो । ११ ग पालिख्यो । १२ ख अेह । १३ ख ग छै । १४ ख. ऊचको, ग उचको । १५ ख रपे कोई. ग. मना कोय । १६ ग. देसै । १७ ग. धको ।

१०८—१ ख सहणी । २ ग आणि । ३ ख लगंण । ४ ख सहै, ग. सहि । ५ ख वकडां, ग. वकड़ा । ६ ख. भड, ग भड़ां । ७ ख. वडग । ८ ख तेगा । ९ ख वेहै, ग वलहि । १० ख सीवता, ग सावता । ११ ग. ठाकुरो । १२ ख. चडो पैहैरो सलैह, ग चढौ पहिरो सिलह । १३ ख. कय·· [र], ग. कुअरि । १४ ख. प्रतिमें नहीं है । १५ ख अजहयर । १६ ख वहै, ग थई । १७ ख करह कह. ग कह कह ।

१०९—१ ख सकती, ग सागती । २ ख ग जीण । ३ ख. झगम सावाखरा, ग उलाण साव पग । ४ ग पूठि । ५ ख करनै धज घातजै पाखरा, ग कोडी वजा घातजै पाखरा । ६ ख अगर वध आमो समांन नीधिया, ग नागरां वाधि आम्हो साम्ही नाडीयां । ७ ख ऊपरी ढाळ सद्रूष आछैपिया, ग. ऊपरा ढालि सीधूर अवाड़ीया ।

११०—१ ख. वोहो रूपत्र, ग बहुत रूपत्रि । २ ख रूप । ३ ख. ग. लीधं । ४ ख. जण जमात नव नाय जोगद्रिया, ग जाणि राजेंद्र जोगेंद्र मनोरया ।

जोपती[५] भावती[६] जीण - साला[७] जडे[८] ।
[९]भालडे बांधीये[९] नेत[१०] [११]झूल भडे[११] ।। ११०

परठ[१] [२]ओडण पटा[२] षाज [ग][३] नाजा[४] षंजर ।
गुरज[५] गुपती गदा सांग[६] सींगण[७] सूपर[८] ।।
कमरबंध[९] [१०]भी आंकडे[१०] जमदढ कसे[११] ।
वाजीआ[१२] वीरवर[१३] [१४]तीर भर[१४] तरकसे[१५] ।। १११

[१]आव षटतीस[१] वंस राजहंस उतरे[२] ।
नांमीयो[३] कंध[४] सिसपाल [५]आगल नरे[५] ।।
मुणे[६] सिसपाल[७] एक जात वण[८] माहरी[९] ।
सकल दल[१०] साबता[११] षडो[१२] संग[१३] सुंदरी ।। ११२

[१]परधांने आषीयो[१] राज [२]तोचा पडे[२] ।
जदप[३] मेलांण[४] [५]घर आव जादव जुडे[५] ।।
सरग डांडा[६] जही[७] वांट[८] दल[९] सारिषो[१०] ।
राषीयो[११] आधनें [१२]आध रुषमण[१३] रुषो[१४] ।। ११३

---

११० – ५ ग जोवती । ६ ख. भावरी । ७ ग साली । ८ ख जडी, ग जडे । ९ ख भालड़ा वधिया ग भालडे बाधीअ । १० ग नेत्र । ११ ख झाळे भडी, ग. झूलै भड़े ।

१११ – १ ख परठिया । २ ख डाणष पया[टा], ग उडण पटा । ३ ख षडग, ग षाग । ४ ख ग नेजा । ५ ग गाज । ६ ख सग । ७ ख सगण, ग सीगण । ८ ख सपर । ९ ग कुवर वध । १० ख. वधिया कोड़, ग भीडीया कड़े । ११ ख. कसी । १२ ख काज जुध, ग. वोजीया । १३ ख. बीर वीरध । १४ ख तरगस । १५ ख कसी, ग तरगसे ।

११२ – १ ग आवि षद[ट] त्रीस । २ ख. ऊबरै, ग. उमरे । ३ ख नमिया, ग नमीयौ । ४ ख सीस । ५ ख. वाळे नरे, ग आगलि नरे । ६ ख मुणं, ग मुणे । ७ ख. सिसपाल । ८ ग विण । ९ ख मांहरी । १० ख दळ । ११ ख समग । १२ ख षडो, ग. षडौ । १३ ख. जुय ।

११३ – १ ख. परध[ा]न कही, ग. परधाने आषीयौ । २ ख. छोछा पडै, ग तोछा पुडे । ३ ख जव दन, ग. जदपि । ४ ख आयै मैदान । ५ ख. जादव जुडै, ग परि आवि जादव जुड़े । ६ ख. डडा । ७ ग जिही । ८ ख राष । ९ ख दळ । १० ख. सारषा, ग. सारिषौ । ११ ग. राषीयौ । १२ ख आ , ग आधनै । १३ ग. रुषमणि । १४ ख रषा, ग. रषौ ।

भीष [1]भांगा कीया[1] [2]करण कथ[2] भारथी ।
[3]सारषा अथरता माहा रथ[3] सारथी[4] ।।
अंग सिणगार[5] [6]दह च्यार[6] दो[7] आवरी[8] ।
[9]कुंअर इछाहसो कोड आयत[9] करी[10] ।। ११४

श्रीकृसन[1] भेटवा[2] [3]देवल दिस[3] संचरी ।
[4]पाषती पूजरे साज बहु[4] परवरी ।।
[5]सेघमाला जही सोमरथ[5] सारषी[6] ।
पीजरे[7] अंबरे[8] गरदरी[9] पालषी[10] ।। ११५

दुलहणी पाषथी[1] हालियो[2] हेम दल[3] ।
[4]सयंक षडीया[4] [5]मले जांण[5] तारा-मँडल[6] ।।
आव[7] उभा[8] समा[9] काज[10] संकेतरा[11] ।
देहली [12]ओलंगी भींतरे[12] देहरा ।। ११६

वीट य[1] आव[2] चक्र वेध[3] चहूए[4] वले[5] ।
देहरा सहित[6] सिसपाल[7] वाले दले[8] ।।

---

११४ – १ ख भागै केई, ग भागा कीया । २ ख. भडण जहु । ३ ख अघरथ। महारथी स्वारथी, ग सारिखा अथिरत महारह । ४ ख. अतरथी । ५ ख सगार, ग सिणगार । ६ ख कर खट । ७ ख दँह, ग दोय । ८ ख. आदरै । ९ ख. कुयर ऊछाहसू कोड़ आरत, ग कवर इछाहसौ कोड आयर । १० ख करै ।

११५ – १ ख श्रीकसन, ग श्रीक्रिसन । २ ग भेटिवा । ३ ख दवाले, ग देव दला । ४ ख पाषळी साथ सु पूजती, ग. पालखी 'पुजरै वह हुइ । ५ ख मेघमाळा जसी सामरथ । ६ ग सारिखी । ७ ख. पजरै । ८ ख हैमारै, ग अमरे । ९ ख. गरदकी । १० ख पाळषी ।

११६ – १ ख हाल कायै, ग पासली । २ ख ह्राळियो, ग हालीयौ । ३ ख. दळ । ४ ख मैकम लिया । ५ ख पड़ै जेम । ६ ख मडळ, ग. मडल । ७ ख. अण, ग आवि । ८ ख उभी, ग. ऊभा । ९ ग. सांम्हा । १० ख कज, ग काजि । ११ ग सकोतरा । १२ ख ऊलवे घसती, ग उलघी भीतरै ।

११७ – प्रस्तुत छद के प्रथम और द्वितीय चरण ख. और ग प्रतियोमें क्रमशः द्वितीय और प्रथम हैं । १ ख वींटिया, ग वीटीयौ । २ ख जेम आवि । ३ ख जेम । ४ ख चहुयै, ग चिहुए । ५ ख वळा । ६ ख सैहत । ७ ख सिसपाळ । ८ ख दळा ।

गैदलां[9] [10]पैदलां हैदलां[10] गूंथरगी[11] ।
चालंतो[12] कोट[13] चौफेर[14] लीधो[15] चुगी ।। ११७

अंबिका[1] परसती[2] पंथ[3] अवलोकती ।
चार[4] [5]वर मालती[5] च्यार[6] दिस[7] चाहती[8] ।।
मोह बांग[9] समा[10] [11]ओह मुरछावीया[11] ।
[12]गत भागी भडां अंत मे अबीया[12] ।। ११८

[श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी का हरण करना]

[1]भेटतां अंबिका[1] हुओ[2] मन-भावीयो[3] ।
[4]अंतरीष षेडि[4] [5]रथ महमहण[5] आवीयो[6] ।।
दुलहणी [7]झालि बैसारतो देषीयो[7] ।
[8]एवडो सेन[8] पण[9] [10]चित्र आलेषीयो[10] ।। ११९

छत्रपति [1]वड-वडा[1] लछण[2] छेतरण[3] ।
[4]हालीयो जुगतसुं[4] करे रुषमण[5] हरण ।।
संषधर[6] [7]पूरीयो संषसे [7]नाद सुंण[8] ।
भयौं जैकार तिण[9] वार त्रेवी[10] भुवण[11] ।। १२०

११७–९ ख गेदळ। १० ख हैदलं पैदल। ११ ख गुत्यणि, ग गुथणी। १२ ख चोळतो, ग. चालतो। १३ ग चोय। १४ ख चहु फेर। १५ ग लीधौ।

११८–१ ख ग. अवका। २ ख. पूजती, ग फरसती। ३ ग. पथ। ४ ख. चहूं, ग वार। ५ ख. दस चाहती। ६ ख वर। ७ ख वर, ग दिसि। ८ ख. सालती। ९ ख. वाण, ग. वाणा। १० ग समाए। ११ ख सेन मोरच्छिया, ग. मूरछावीया। १२ ख गात भागा समा मात माग छिमा, ग गति भागां भडा अति मांगावीया।

११९–१ ख ग भेटती अवका। २ ख हुयो, ग हुओ। ३ ग भावीयौ। ४ ख. अत रथ षेड़नै, ग अतरिष सेड। ५ ख. मैहै मौहैण। ६ ख. आवियो, ग आवीयौ। ७ ख जळ वैसाडतो देषियो, ग झालि वैसारतो देषीयौ। ८ ख ऐवड़ो सैन। ९ ग पिण। १० ख चत्र औलष्यियो, ग. चीत्र आलेषीयौ।

१२०–१ ग पड वडा। २ ख. ग छलण नै। ३ ख छैतरण। ४ ख. हाळियो जुगत सु, ग हालीयौ जुगतिसुं। ५ ग रुषमिणी। ६ ख सषधुन। ७ ख. पूरिया सषरी, ग पूरीयौ सषरौ। ८ ख. ग. सुण। ९ ख तै। १० ख त्रेवौ, ग त्रिवे। ११ ख ग. भवण।

नव[1] नवी[2] दइत[3] [4]सो वर कीधो[4] नवे ।
यादवां[5] इंद्र[6] [7]भलो थीयो[7] यादवे[8] ।।
वार झाझी [9]घणी तेथ[9] वर वालीया[10] ।
सूरमें[11] [12]तठें जंग[12] मातंग[13] सांभलीया[14] ।। १२१

[1]तार सारथी ए रथ[1] चाल्या[2] तुरी ।
कांहकें[3] जूपीआ[4] सार फेरा[5] करी ।।
[6]भुज भारी[6] कीया[7] जीनसाला[8] भरी[9] ।
[10]साबुधे जोबुधे[10] जूसणां[11] सांचरी[12] ।। १२२

[युद्ध-वर्णन]

नाल गोलां[1] तणो[2] साज कीधो[3] नरे ।
साथ दारू[4] भरे[5] नगारां सिंधुरे[5] ।।
[6]ढाल नेजा[6] धजा[7] पूंठ[8] धंधेकरी[9] ।
फरहरे[10] अंबरे रथरा[11] फरहरी[12] ।। १२३

घरहरे[1] पाषरां[2] [3]घोर वाजा[3] घुरे[4] ।
[5]पैदलां हैदलां[5] [6]गैदला पस्सरे[6] ।।

१२१—१ ख नव । २ ख. ग नवा । ३ ख दगवं, ग दहत । ४ ख. वैर कीधा, ग. सो वैर कीधी । ५ ख. जादवो, ग जदवी । ६ ख. ईद । ७ ख. भेळो हुयो, ग. भोलौ हुउ । ८ ख. ग. जादवे । ९ ख. घड़ी जेथ । १० ख. मालिया, ग. मालीया । ११ ख. ग सूरमे । १२ ख. ग जग । १३ ख. मैतग । १४ ख. सभाळिया, ग. सभालीया ।

१२२—१ ख. त्यार स्वारथी पारथी । २ ख ग. वाला । ३ ख काहीक, ग कांइके । ४ ख जोतिया । ५ ख फेरे । ६ ख भारजै कारीय । ७ ग कीया । ८ ख. जीणसाल, ग जीणसाला । ९ ख भरे । १० ख सावता जावता, ग सावधे जोवधे । ११ ख जूसणं । १२ ख संचरे, ग. संचरी ।

१२३—१ ख गोलं । २ ख. तणा, ग तणो । ३ ख. कीधा, ग कीधौ । ४ ख दुरू । ५ ख नागरे सिद्धरे, ग नागरा सीधुरे । ६ ख ढाल नेज । ७ ख. गज । ८ ख ग पूठ । ९ ख वेवोंगरे, ग घेघकरा । १० ग फरहरै । ११ ख. रत्यरा । १२ ख फरहरे ग. फरहरा ।

१२४—१ ख. घरहर, ग. घरहरै । २ ख अवरे । ३ ख राळ बाजत्र । ४ ख ग. घुरै । ५ ख पैदलं हैदल । ६ ख गैदल पाषरै, ग. गयदला पसरै ।

[7]हैवरां आपरां[7] सेन [8]आगै हूआ[8] ।
तीर[9] नांष[10] तोपची कोहोकबांण[12]* कीया[13] ।। १२४

बाजूए[1] रावीया[2] जोध[3] वांणावली[4] ।
बांणरा[5] हूंगरा[6] तांण माहा[7] बली[8] ।।
बंध सूधा[9] षडे[10] पंथ[11] बे बंधवा[12] ।
सूर षांचे रहचौ[13] वाग[14] उचीश्रवा*[15] ।। १२५

थाट[1] [2]आछटीया षेंग नेडे[2] थहे[3] ।
वांहरां[4] थाट[5] हुवै[6] वाट[7] जोला[8] वहे[9] ।।
[10]पालतू आवीयो पडी पोकारपण[10] ।
कंथला[11] ऊठ सिसपाल[12] साका[13] करण ।। १२६

[1]रायगुर ऊठीयो सेल[1] भुंज रोलीयें[2] ।
[3]ध डहड्यौ जांणकें[3] [4]धोम घृत[4] ढोलीयें[5] ।।

---

१२४ – ७ ख वह वहै आपरा, ग षरा हैवरा अपरा । ८ ख आगळ विया, ग आगल वीया । ९ ख कोक । १० ख. नर, ग नष । ११ ख. तोबची । १२ ख त्यार आगळ, ग कोपवांणी । १३ ख किया ।

१२५ – १ ख. बाजुयं, ग आजू ए । २ ख. राविया । ३ ख जाय । ४ ख वणावळा, ग. वांणावली । ५ ख. वणरह । ६ ग डुगरी । ७ ग. महा । ८ ख वळा, पूर्व के शब्द ख. प्रतिमें छोड दिये गये हैं । ९ ख. सुध । १० ख षडै, ग षडे । ११ ख वै, ग प्रतिमें यह शब्द नहीं है । १२ ग वेधवा । १३ ख रह्यो १४ ख वाग । १५ ख ऊचासवा, ग उचैश्रवा ।

१२६ – १ ख षाटिया । २ ख. झाटिया षेंग षेड़े, ग. आझाटीयै षेंग नैडे ३ ख नहीं । ४ ख वाहरा, ग वाहरां । ५ ख. वाटि । ६ ख. है, ग. हुई ७ ख थाट । ८ ख जोतं, ग. जूता । ९ ख वही । १० ख पाळती आविय पड़े पूकारवण, ग. पालतू आवियो पडी पोकारवण । ११ ख कथळा, ग कावला १२ ख सिसपाळ, ग सीसपाल । १३ ख. साको ।

१२७ – १ ख रायंगुर ऊठिया कूत, ग रायगुरू ऊठीयौ सेल्ह । २ ख रोळिया ग रोलीयं । ३ ख षडहड़े जण, ग धडहड़्यो जाणि कर । ४ ख पावक गरत ५ ख ढोळिया, ग ढोलीयौ ।

---

* पत्र सं० ७ का क. भाग पूर्ण ।

* "उचीश्रवा" शब्द पर मूल प्रति में "घोडा" लिखित है ।

[6]ओह मूंछां भडे रोड वाजँत्र रडे[6] ।
चडे[7] सिसपाल[8] चतुरंग[9] सेना[10] चडे[11] ।। १२७

ऊपडी[1] वाग[2] [3]रज अंबरें ऊपडी[3] ।
दाट[4] वाराह[5] डिग[5] [7]कोम कंध कडकडी[7] ।।
दलां[8] [9]सिसपालरां तणो दोडारव वण[9] ।
[10]षेहण राजे रही सीस भालां षवण[10] ।। १२८

जाकवा[1] चाकवे[2] [3]पीलवांणा जुआ[3] ।
हाथीया[4] जाण[5] पाहाड[6] पांषे[7] हूआ[8] ।।
धमीयो[9] धनुष[10] [11]धर कहर[11] पाग्रल[12] धषी[13] ।
दीह[14] पण[15] डंबरी[16] सर्वरी[17] सारषी ।। १२९

[1]चक्कवे-चक्कवी[1] पूर[2] [3]रयणी चिया[3] ।
[4]गेहणी छोड[4] भरथार[5] दूरें[6] गिया[7] ।।

---

१२७ – ६ ख. ओह मूछ भळी रोळ बाजत्र रूडे, ग. मूय मूचा भिडे रोल वाजित्र रुडे। ७ ख चडे, ग चढे। ८ ख सिसपाळ। ९ ख. चुतरग, ग चुतरग। १० ख फोज। ११ ख. ग. वड़े।

१२८ – १ ख ग. ऊपड़ी। २ ख. वागना। ३ ख. रज्ज अंबर अड़े, ग रजी अंबरे ऊपडी। ४ ख. कध, ग दाढ़। ५ ख. फोरंभ। ६ ख वाराह, ग ढिग। ७ ख. दढ कड़फड़े, ग. कोम कंधड कडी। ८ ख. दळ। ९ ख सिसपाळरो तणा दोड़रावण, ग. सिसपालरा तणो दोडारवण। १० ख षोहणी मच्चरी सेस वाळी षवण, ग षोहिण राचे रही सेस वाला षविण।

१२९ – १ ख आरषे। २ ख. पारषे, ग. छाकवे। ३ ख सारषे अवुयं, ग पीलवाणे जूआ। ४ ख हाथियं। ५ ख जण, ग. जांण। ६ ख. ग परवत। ७ ख पंष, ग. पाषे। ८ ख हुयं। ९ ख पम्मिया। १० ख धनष। ११ ख पुयकार। १२ ख ग. पायल। १३ ख. धुषी, ग धुषा। १४ ख दूह, ग दीह। १५ ग पिण। १६ ख. डम्मरी, ग. डमरी। १७ ख. ग सरवरी।

१३० – १ ख चवकवा-चक्कवी, ग. चकवा-चकवी। २ ख थाय। ३ ख. रैंण थया, ग रैणी थया। ४ ख ग्रहुंण मेळ, ग गेंहणी छाडि। ५ ख. ग. भरतार। ६ ख मेर, ग दूरे। ७ ग. गया।

[८]मेंण पुड ऊपडी[८] षेह [९]षेहां मली[९] ।
आपरां[१०] [११]बछांने नां उलषें[११] अनली[१२] ॥ १३०

[१]मैगले चंचले[१] मेंण[२] वेह[३] तेमथी[४] ।
सूर सूझे[५] [६]नकुं सूरनें[६] सारथी[७] ॥
लावीओ[८] सूरमे[९] सेड[१०] सूधी[११] लुली[१२] ।
कुंदीया[१३] टार छोटार[१४] [१५]वाली कली[१५] ॥ १३१

[१]मांकडां डाण ओडाण[१] भरतां मरू[२] ।
षेड़ीया[३] मारगें[४] [५]नां वहे षींगरू[५] ॥
वहें[६] सिसपालरा[७] [८]वीदणी वाहरे[८] ।
[९]नांषता वाह झोका[९] लोया[१०] नाहरे[११] ॥ १३२

जांनमां[१] आपरी जात[२] जगातीया[३] ।
घरण[४] मोटां[५] तणी हाथ ते[६] घातीया[७] ॥

---

१३० – ८ ख मयेंण पण ऊपडी, ग. मेंण पुड़ उलषी । ९ ख पेह म्मळी, ग. पेहां मिली । १० ख ग आपरा । ११ ख बचा नह ओळषै, ग वचनां नो लषै । १२ ख. अन्नली ।

१३१ – १ ख मगल चचल । २ ख. ग मेण । ३ ख. वहै, ग वहि । ४ ख. तामथी । ५ ग. सूझै । ६ ख. नको सूर रथ, ग नक्यु सूर नै । ७ ख. स्वारथी । ८ ख लाईया, ग. लाईग्र । ९ ग. सुरमे । १० ख. सेड । ११ ख. ग सूधा । १२ ख लुळी । १३ ख. ग. कूदीया । १४ ख बहार, ग. बोटा[हा]र । १५ ख. वाळी कळी ।

१३२ – १ ख मकड डर ••• [उडा]ण, ग. मांकडा डाण उडाण । २ ग मिरू । ३ ख पेड़िया, ग. टेवीया । ४ ख. ग. माग । ५ ख. आवै नकू षैगरू, ग आवै नहीं षैगरू । ६ ख सुहड, ग वहै । ७ ख सिसपाळ । ८ ख वादणार वाहरू, ग वीदणी वाहैरं । ९. ख नष तीजा कछे, ग नाषतो छौक भोकं । १० ख काळवा । ११ ख नीसरै, ग नाहरै ।

ख. प्रति में आगे यह अश अधिक है—
" दवा लिया काली मरवटा, पुळ अेम आगळी केथ जाईस यारा ॥"

१३३ – १ ख जणवी, ग. जाणिमा । २ ग जाति । ३ ख जगतिया । ४ ग घरिण । ५ ख मोटे । ६ ख ग हाथ तै । ७ ख घातिया ।

ढके[८] महीयारीयां[९] माटला ढोलीया[१०] ।
कंवर[११] दीठा नही[१२] कूंत[१३] कंकोलीया[१४] ॥ १३३

पालरो[१] तत षरी[२] एह[३] पूरे[४] पषे[५] ।
[६]रासभा ताल छे तणा गणतो[६] रषे ॥
[७]वालता मूंछ वल वेदसी ना[७] वही ।
नंदरा [८]कंसरा धोवटा ए[८] नही[९] ॥ १३४

[१]बरबर जांण कें[१] ज्यागरा[२] बोकडा[३] ।
पांमसे[४] आज[५] हर हाथ[६] परलोकडा[७] ॥
वहे[८] जरासंधरा[९] जोध सूवा[१०] वगां[११] ।
सांमरी[१२] [१३]चाडनें* वेर[१३] [१४]चाले सगां[१४] ॥ १३५

[१]भूचरां षेचरां[१] हूग्रो[२] मन भावीग्रो[३] ।
[४]आंपणे भाय[४] अढारमो आवीग्रो[५] ॥
*वल भरण [६]गात धाडीत[६] वाहरवटी ।
मोहरला[७] वांसलां तेथ [८]वेरे मटी[८]* ॥ १३६

---

१३३ – ८ ख. ग. ढूक । ९ ख महो · [या] रीत । १० ख ढालिया । ११ ख. कुयर, ग कवर । १२ ख ग नहीं । १३ ख कुत, ग कूत । १४ ख ककलिया ।

१३४ – १ ख पाळरो । २ ख ग परो । ३ ख आव । ४ ख ग पूरो । ५ ख पपै । ६ ख रासवा तारवा अमेया या, ग. रासवां ताड वण तण गिणतो । ७ ख. वोलता मूछ वळ वेगची ना, ग वालता मुछ वल वेदची ना । ८ ख. केसरा येह छोटा, ग. कसरो घोवटों ए । ९ ख ग नहीं ।

१३५ – १ ख वरवरे जाण कर, ग. बरवरे जाणि करि । २ ग. जागरा । ३ ख वोकडा, ग बोकड़ी । ४ ख पमसे, ग पामिसे । ५ ग हाथ । ६ ग. आज । ७ ख. ग परलोकडा । ८ ख. ग वहै । ९ ख जुरासीधरा, ग. जरासीधरा । १० ग सूधी । ११ ख. वडो । १२ ख. सामरी । १३ ख ग चाडनै वैर । १४ ख. सालै सगा, ग. चालै सगा ।

१३६ – १ ख भूचरा पेचरा । २ ख हुया, ग हूओ । ३ ख. भाविया, ग. भावीयो । ४ ख आंवणे वोह, ग आपणै छोह । ५ ख आविया, ग आवीयो ।*—* अश ख. प्रति में नहीं है । ६ ग गात घाड़ीत । ७ ग मुहरलां । ८ ग वेरी मिटी ।

---

*पत्र स० ७ का ख भाग पूर्ण ।

*षाडूए[1] षालूए षेंग[2] षेहारवे ।
जंगमा [3]तांण मुह[3] फेरीया जादवे* ॥
ओडीया[4] जादवे[5] [6]आंण चोडें[6] अणी ।
साव धोहे[7] भडे[8] लडेवा[9] कथणी[10] ॥ १३७

ऊपडी[1] [2]वाग ने आवली[2] आंहची[3] ।
रावते[4] माहुते[5] फेर फोजां[6] रची ॥
दीठ दमघोषरे[7] [8]घरण संग[8] [9]स्यांम-धण[9] ।
कोप सिसपालरे[10] टोप तूटी[11] कसण ॥ १३८

[1]तवें जरसंध ससपाल रहें सावतो[1] ।
मेंक[2] [3]दल मेलीयां[3] पूछ[4] [5]मोनें मतो[5] ॥
आंगमें[6] पृथवी[7] बलदेव वालो[8] अणी ।
[9]वढस काय जेण[9] [10]दस घडा सह वेधणी[10] ॥ १३९

---

१३७ – १ ग षाडूए । २ ग षेंग । ३ ग. तणा मुह । ४ ख जोडिया, ग. ऊडीयो । ५ ख जादमा । ६ ख आव चडिया, ग आवि चोडे । ७ ख होडं ग घोहे । ८ ख भडं । ९ ख. वाग के, ग लड़ेवा । १० ख सू तणी, ग कसणी । इसके पश्चात् ख. प्रति में छन्द के प्रथम दो चरण ★—★इस प्रकार लिखित हैं—

पाटिया षालुये अने षेहारवे ।
जगम तणा मुह फेरिया जादवे ॥

१३८ – १ ख. ग ऊपडी । २ ख. वागरा गया नह, ग वाग नै आवीया । ३ ख अहची, ग आंहची । ४ ख. रावत । ५ ख मुहत, ग माहुते । ६ ख फोजं, ग मोजा । ७ ख. दळघोषरो. ग दमघोषरै । ८ ख वरण । ९ ख सामा घणा, ग साम घण । १० ख सिसपाळरे, ग सिसपालरै । ११ ख तूटै ग त्रूटै ।

१३९ – १ ख. जपै जुरासिंघ सिसपाळ होयै सामतो, ग तवै जरासीध सिसपाल हु सावतो । २ ख मैयक, ग. मेक । ३ ख जुध मोळियो । ४ ग पूछि । ५ ख. मोने, ग. मोनै मतौ । ६ ख. अगमसै, ग आंगमै । ७ ख. ग प्रथम । ८ ख. वाळो, ग. वालो । ९ ख. वीढिस कायै तेण । १० ख. रथ विसन ने वींदणी, ग दिस घड़ा बहु वीदणी ।

[1]जुड़ो जरासंध[1] थे वेग[2] जांणो[3] जठी[4] ।
कांपीयें[5] [6]जेठ जिम[6] [7]कांन जायें[7] कठी[8] ॥
हालीयो[9] सेन [10]ससपालरो हलधरें[10] ।
धूंम्रर[11] आसाढरी[12] [13]जांण धोलागरें[13] ॥ १४०

देत[1] [2]देवां समा[2] घात कर[3] दाटीए[4] ।
करकरा[5] बोलीया[6] [7]लोहडे काटीए[7] ॥
[8]मांड पग[8] [9]माह वाह रण कीधे[9] मजा ।
तन[10] पडें[11] [12]जीतवा सेंह[12] वाला[13] तजा[14] ॥ १४१

[1]सोहड ससपालरा सांमहो सात्वकी[1] ।
[2]बहुसनें बोलीयो[2] हेक [3]वायक बकी[3] ॥
[4]हुओ सो देषीओ देषसो जो[4] हुसी[5] ।
लोहे[6] लांमा[7] भलां[8] [9]आतरो लाभसी[9] ॥ १४२

उछजे[1] सेल[2] [3]सालव आर्षे इसो[3] ।
हेदले[4] आजके[5] लूंण[6] [7]आटो हुसो[7] ॥

---

१४० – १ ख. जपे जुरासध, ग. जुडो जरासींघ । २ ख. वेघ । ३ ख जणो. ग. जाणो । ४ ख जठा । ५ ख. जीपजे, ग कापीया । ६ ख. जठे जम । ७ ख कणस[सण] जासो, ग कान्ह जासे । ८ ख कठा । ९ ख हाळिया, ग हालीयो । १० ख सिमपाळरा हळधरे, ग. सिसपालरो हलधरे । ११ ख धुटार, ग धुम्रर । १२ ख असाढरी । १३ ख जण धोलागरे, ग जाणि धोलागिरे ।

१४१ – १ ग. देत । २ ख दवा सामा, ग देवा साम्हा । ३ ग करि । ४ ख. दाटिया, ग दाटिये । ५ ख कडकड़ा । ६ ख बोळिया । ७ ख. लोहडा काढिया, ग लोहडे काढीये । ८ ख मडप माहे । ९ ख. वहे रण कीध, ग माहवा हर कीधं । १० ख. तेन । ११ ख पडे, ग पडें । १२ ख ग. जीवता सीह । १३ ख. वाळी, ग वाली । १४ ख तुजा ।

१४२ – १ ख. सोहड सिसपाळरा समहा सत के, ग. सहड सिसपालरा सामहो सातकी । २ ख वेहस वण वोलिया, ग. वहिसतां वोलीयो । ३ ख वायेक वके । ४ ख होये से देषिया देषसी ता, ग हूओ ते देषीयो देषसो जे । ५ ख. हसे । ६ ख. लोह । ७ ख. लमो, ग. लावा । ८ ख भलं । ९ ख. अतरा लाभसे, ग. आतरो लाजसी ।

१४३ – १ ख ऊससे, ग उचजे । २ ग सल । ३ ख सेलवा आषे असे, ग सोलव आहषे इसो । ४ ख हेदल, ग हैंदले । ५ ग. आजकं । ६ ख. जंण, ग. लूण । ७ ख आटो हुसे, ग आटे हुसो ।

घार जल[८] [९]मोहरें महरांण आडो[९] घरो[१०] ।
[११]पूंठ सांहणि समंद[११] सेन[१२] ससपालरो[१३] ॥ १४३

ढाल[१] [२]ससपाल दाषवां टूकडो[२] ।
घण[३] तणो[४] घूट[५] बलदेवरो[६] बोकडो[७] ॥
*पेट तो[८] जनम मा [९]बापरे पावीया[९] ।
[१०]ऊतरे एं न आकासतें आवीया[१०]* ॥ १४४

साच[१] [२]कहें सालबा बीधु[२] [३]तो बे[३] जणा ।
तो जसा[४] [५]केतला मीत[५] उर्घे[६] तणा ॥
[७]एतले दुंदुभी वाजीया[७] अंबरे[८] ।
पूरीया[९] संषरा नाद पाटोधरें[१०] ॥ १४५

[१]द्वारिका वासीयां[१] अने[२] डाहूल[३] दलां[४] ।
[५]सांफलो माचीयो[५] [६]माझीयां साबलां[६] ॥

---

१४३ – ८ ख जळ । ९ ख. मुहर मैंहैराण आरो, ग मुहरै महिराण आडो । १० ग घरो । ११ ख पीठ संहण समद, ग पूठ साहण समुद्र । १२ ख. देष । १३ ख सिसपाळरो, ग सिसपालरो ।

१४४ – १ ख ढाळ । २ ख सिसपाळ वलदेव कुटकुडो, ग. सिसपाल वाल दाषवा ढूकड़ो । ३ ख घण । ४ ख नामीरी, ग तणो । ५ ख घूट । ६ ग वलदेवरो । ७ ख. बुकडो, ग. वोकडो ।*—*अंश ख प्रति मे नहीं है । ८ ग तो । ९ ग बापरै पाईया । १० ग. ऊतरी एण आकासथी आईया ।

१४५ – १ ख साव । २ ख कै साळवा जन, ग कहि सालवा बंधु । ३ ख माहै । ४ ग. जिसा । ५ ख केतरा मात । ६ ख उधो, ग उर्घ । ७ ख अेतरे ददभी वाजिया, ग एतलै दुदभी वाजीयां । ८ ख. ऊवरै ।। ९ ख पूरिया । १० ख पायो-घरे, ग पाटोघरे ।

१४६ – ख दुयारकं वासिय । २ ग अनै । ३ ख. डाहळ, ग. डाहल । ४ ख वळा । ५ ख सैफलो माची, ग सैफलो माचीयो । ६ ख माझियं सावळां ।

कोड[७]* तेतीस सुर[८] हिमें[९] आदर कीयो[१०] ।
ईस जगदीस[११] जुध[१२] [१३]जोग्रवा आवीयो[१३] ॥ १४६

[१]रथ आधो[१] फरे[२] अछरे[३] रछीया[४] ।
[५]इंद्र आहेचीया[५] नारद[६] नचीया[७] ॥
[८]प[प]लचरां षेचरां भूचरां[८] पंषणी ।
गहकीया[९] [१०]भूतडा प्रेतडा ग्रीधणी[११] ॥ १४७

वीर[१] [२]वेताल षेंगालरी[२] षोहणी ।
[३]आवीया आंहचे[३] [४]चाड आप आपणी[४] ॥
अंबका[५] उलका[६] [७]कालका जळपणी[७] ।
[८]जंबुका मीनका कालका[८] जोगणी ॥ १४८

[१]साकणी डाकणी[१] [२]डायणी समली[२] ।
[३]कार भेरूं तणी हडमंतरी कलकली[३] ॥
दहू[४] दल[५] [६]दडवडे वंकडे दागीओ[६] ।
जाजरे[७] गयण[८] पाताल[९] पुड[१०] जागीओ[११] ॥ १४९

---

१४६ – ७ ख ग कोड़ । ८ ख सू । ९ ख व्रह्म, ग हुमें । १० ख कियें ग कीयौ ११ ख. जगदीश । १२ ख. प्रति में शब्द अस्पष्ट है । १३ ख '' वजी । वाइयें, ग जोयवा आवीयौ ।

१४७ – १ ख. रत्थ आघो । २ ग फरै । ३ ख अच्छरे । ४ ख रच्चिया, ग रचीया । ५ ख. अद्र आर्हचिया, ग इद आहाचीया । ६ ख ग. नारदा । ७ ख नच्चिया, ग नचीया । ८ ख पळचरा षेचरा भूचरा । ९ ख. गहकिया । १० ख भूतड़ा प्रेतडा ग्रिवणी ।

१४८ – १ ख वीर । २ ख वैताल षैंगाल नै, ग वैताल षैंगाळरी । ३ ख आविया अहचे । ४ ख, आप आपै अपणी, ग. चाड आपां पणी । ५ ग अ [अ]बिका । ६ ख ऊळका । ७ ख जाळपा जोपणी, ग जालका जपणी । ८ ख जंबका काळका मंनका, ग जविका मीनका कालिका ।

१४९ – १ ग. साकिणी डाकिणी । २ ख डयणी संमळी । ३ ख काळ भैरव हणमत नै कलगळी, ग कार भैरवरी हणमंतरी किलगली । ४ ख दहु, ग दुह । ५ ख. दळ । ६ ख. दडवड़ी वांकडी डांगियैं, ग दड़वड़े वांकडे डागीयो । ७ ख जाजरचो ८ ख आंणवा, ग. गेण । ९ ख. ताळ । १० ख ग पुड । ११ ख. जागियैं, ग. जागीयौ ।

---

*पत्र सं० ८ का क. भाग पूर्ण ।

तड[1] डम्बर[2] घुतणा[3] रणतूर[4] भेरूं त्रहे[5] ।
साल[6] लेर वदां[7] [8]पांच सबदां वहे[8] ॥
*ढोलरी नीध्रसण ढीकलीरा ढोग्रा ।
साल कीया सबद सुंण थाट ग्रांगण सोहा* ॥ १५०

[1]गाज त्रंबाल पड रोल गेंणाइयां[1] ।
[2]सालुले सिंधुयें[2] राग[3] सरणाइयां[4] ॥
[5]कूद ग्या कायरां[5] [6]वाजती काहली[6] ।
वीर [7]ग्राकासमां सूरमां वलकुली[7] ॥ १५१

[1]मारकां फारकां[1] [2]द्रीठ मुठी मली[2] ।
नाल[3] गोला[4] वहे[5] बांण[6] छूटें[7] नली[8] ॥
*नालरा [9]चोक नरघोष[9] नीसांणरा ।
धमजगर [10]माचीयो कहर[10] ऊपर धरा* ॥ १५२

---

१५० – १ ख ग. तड । २ ख. डबर, ग डवर । ३ ख घू ग्रनै । ४ ख. ग तूर । ५ ख भेर त्रहैं, ग. भेरी त्रहि । ६ ख सालो । ७ ख वद । ८ ख पचै सदीं सहै, ग पच सदा सहि । *ग्रागे ग. प्रति में यह पाठ है—

नालिरा घाक निरघोष नीसाणरा ।
धमजगर माचीयो कहर ऊपरि धरा ॥

यह पाठ क प्रति के छन्द सख्या १५२ के ग्रन्तिम दो चरणो से मिलता हैं ।

१५१ – १ ख नाद नीसांण नीसाण सेहनाइया, ग नाव [द] नीसाणरे गाज गेणाईया । २ ख. सालुळै सिंधुयो ग. सालले सींधूग्रो । ३ ख. माद । ४ ख. सेरईया, ग सुरणाईयां । ग्रागे ख. ग्रौर ग. प्रतियो में यह पाठ है—

ख. ढोलरो नीघसण ढोकलीरा ढहा ।
सटकिया सुबदें है वा ग्रांगण सुहा ॥
ग ढोलरी नीव्रसण ढीकलीरा ढोम्रा ।
सलकीया सबद है थाट ग्रगण सोग्रा ॥

५ ख. कूदिया कायर, ग. कूद गा कायरा । ६ ख. वाजतं काहोली । ७ ख. हाकं समा सम वलीकुळो, ग. ग्रागासमां सूरमां सूरमा विलकुली ।

१५२ – १ ख. मारकं फारक । २ ख मूठ दे गम्मळी, ग. द्रेठ मुछां मिली । ३ ग. नालि । ४ ख. गोलै । ५ ख. वैंहै, ग. वहै । ६ ख. वण । ७ ख. छूटा ग छूटं । ८ ख. नळी *—*ग प्रति में यह ग्रंश क. प्रति के छन्द सख्या १५० के ग्रन्तिम दो चरणो के ग्रन्तर्गत प्राप्त हुग्रा है । ९ ख. छेक नेट वेड । १० ख. माचिया ग्रर ।

कोहोक[1] [2]हाकां समो[2] लोक नर[3] कांपीयो[4] ।
हूवके[5] जंत्र पातल[6] है कंपीयो[7] ॥
नाग[8] निंदालूया[9] घरण[10] [11]दये ढोलड़ो[11] ।
पडहुडयो[12] जांण[13] [14]आकासरो पोलड़ो[14] ॥ १५३

घरण[1] पुड[2] ऊपड़ी[3] देय[4] मातो[5] घमस ।
आतस[6] [7]वाजीयां माझीयां[7] उकरस[8] ॥
वहे[9] जत्रवांण[10] चद्रवांण छूटे[11] वला[12] ।
काट[13] [14]भूडंड कोडंड कर[14] तंडला[15] ॥ १५४

[1]ऊकटे काट हुवे[1] थाट[2] आंमो[3] समा[4] ।
गाजीया [5]घनुष पोंकार वेवे[5] गमां[6] ॥
गाज[7] चंदेरीएं[8] चाप[9] कीघो[10] गुणे[11] ।
[12]तीर छो माझीओ[12] [13]मेह ओपां तणे[13] ॥ १५५

१५३–१ ख ग. कोक । २ ख. हाक समा, ग होकां समो । ३ ग मेह । ४ ख कंपिया, ग कपीयो । ५ ख हुवके । ६ ग. पाताल । ७ ख. कंपिया, ग कपीयो । ८ ख नाद । ९ ख नीदालुया, ग नीदालूया । १० ख घरण । ११ ख. दै ढोलडो, ग दे ढोलडो । १२ ख पडहडे, ग पडहुडयो । १३ ख जाणि । १४ ख पातालरो पोलडो, ग. आकासरो पोलडो ।

१५४–१ ग घरड । २ ख. ग. पुड । ३ ख. ऊपडै, ग. ऊपडी । ४ ख कहर । ५ ग मातो । ६ ख आतस, ग आतसा । ७ ख वाजिय माझिय । ८ ख ग ऊकरस । ९ ख वजै, ग वहै । १० ख जत्र वण । ११ ख चहुये वळो, ग छूटे । १२ ख. वळो । १३ ग काटि । १४ ख कोमड भर हाकिया, ग भोडंड कोमड करि । १५ ख कुडळो ।

१५५–१ ख ऊकटै काटवै, ग. ऊगटे काटवे । २ ग घाट । ३ ख. ग्रमो, ग. आमो । ४ ग समा । ५ ख. घनक घुकर वैवै ग धनष घोकार वैवै । ६ ख ग गमा । ७ ख. चाप । ८ ख चगेरिया, ग चदेरीए । ९ ख घेर । १० ग कीघो । ११ ख. घणा । १२ ख मेहणी मेह जु तीर, ग. तीरचो माझीए । १३ ख गोला तणा, ग. मेह ऊपा तणा ।

सम समा धनुषधर[1] मोष छूटे[2] सरां।
कुंजरां[3] क्रीह हि[4] सार वण हैमरां[5]॥
जोर दारू जलें[6] राग[7] मारू जमी।
आज को सूरमे [7]जांण पीधो[7] अमी॥ १५६

*घूघटी बे घडा[1] घोर [2]मातो घणो[2]।
मेहणी मेह ज्युं तीर गोली तणो[3]॥*
छेह[4] [5]षापां करे पाघडां[5] छांडीया[6]।
[7]मैंण वासंगरी ऊपरां[7] मांडीया[8]॥ १५७

कांधले[1] [2]समसमा कुंत कालासीआ[2]।
बगतरे [3]षलकते तुरस[3] छांह[4] वांसीआ[5]॥
हूह[6] [7]माती नरां हेमरां[7] हाथरू।
वाजीया[8] लोह धाडीत[9] नें[10] वाहरु॥ १५८

बे [1]दले बें हथां[1] षेगं[2] आया[3] षरा[4]।
[5]साल ले[5] [6]पुरबी एक सोरठरा[6]॥
श्रीकृसन[7] तणा [8]भड अनें[8] ससपालरा[9]।
षाग झड[10] [11]उझडे बाजीया रण षरा[11]॥ १५९

---

१५६ – ख. प्रति में यह छद नहीं है। १ ग धनष धर। २ ग छूटे। ३ ग कूजरा। ४ ग है। ५ ग हैमरा। ६ ग जलै। ७ ग. जाणि पीधौ।

१५७ – *—*ख प्रतिमें यह अश नहीं है। १ ख घटी। २ ग मातौ घणौं। ३ ग. तणौ। ४ ख छिद्रया। ५ ख. षाप कर पागड़ां, ग. षापां करै पागडा। ६ ख छडिया। ७ ख मेंयण पुड़ ऊपळी ऊपरै, ग मेण वासगरी ऊपरा। ८ ख. मडिया।

१५८ – १ ख कधलै, ग कधले। २ ख सम सामा कुल कोलासिया। ३ ख. षळकते तूरसा। ४ ख प्रतिमें यह शब्द छूट गया है। ५ ख. बासिया, ग वासीया। ६ ग दूह। ७ ख मानी नर हैमर। ८ ख बाजिया। ९ ख ग. धाडीत। १० ख नें, ग नै।

१५९ – १ ख. दळे वै हथा। २ ख षाग, ग षेग। ३ ख बागा। ४ ग षरा। ५ ख. सासुळे। ६ ख. पूरबे जण सूर वरा, ग पूरवी हेठ सोरठरा। ७ ख श्री-कसन, ग श्रीकिसन। ८ ख ग भड अनें। ९ ख सिसपाळरा, ग सिसपालरा। १० ख ग. झड। ११ ख ऊझड़ वाजिया तल षरा, ग ऊझड़ा षाजीया रिण षरा।

पत्र स० ८ का ख. भाग पूर्ण।

[1]पेलां भडां छकडां[1] सूसरा ।
फुरल[2] पेटालजा कालजा[3] फेफरा[4] ।।
[5]आढ दोटे[5] अणीता[6] करणी[7] [8]तीनी ए[8] ।
अंग [9]आवे वढे सांग[9] उछीनीए[10] ।। १६०

[1]उभी ए[1] [2]सेल ताय[2] आवता [3]आडी ए[3] ।
त्रूटतां कंध[4] [5]समा तरपवे ताडी ए[5] ।।
आयुधे[6] एक [7]एका समा[7] आहुडे[8] ।
भीच [9]भाद्रवरा जांण[9] भैंसा[10] भडे[11] ।। १६१

फाचरा[1] [2]ऊतरें चांचरा[2] फरसीए[3] ।
[4]सिधुरां आवटे[4] झाट [5]पाडां सीए[5] ।।
[6]धूबके धार जोधार धारू जलां[6] ।
सूंड[7] [8]लेती पडे साथ दंतूसलां[8] ।। १६२

गजमोती [1]गरें हसी[1] वाजे[2] गदा ।
[3]जांणजें दाडमी[3] वीज कीजें[4] जुदा ।।
[5]वाजीया वीर[5] [6]वीराध वाराधीए[6] ।
रोहीया[7] जांण[8] [9]वाराह पाराधीए[9] ।। १६३

---

१६० – १ ख डल भड छकड, ग पेलं भडा छकडा । २ ख फुरळ । ३ ख काळजा । ४ ख ग फेफरा । ५ ख आड दग, ग आढ़ दौढं । ६ ग. अणींता । ७ ख. कडा, ग कती । ८ ख तीनिया । ९ ख आवो वढे घा, ग. आवं पिढे सांगि । १० ख ओछीनिया ।

१६१ – १ ख ऊभिया, ग अभी ए । २ ख. ग सेलता । ३ ख. आड ये । ४ ख. नुटाता कधग । ५ ख. त्रीपना डिया, ग त्रप वै तताडीए । ६ ख आवध, ग आउधे । ७ ख ऐका समा । ८ ख अंहुडे ग आहुडे । ९ ख भादवरा जेण । १० ख ग भैसा । ११ ख भडे, ग भिडे ।

१६२ – १ ख फाचर । २ ख. चाचर ऊतरे, ग ऊचरं चाचरा । ३ ख फरसिया । ४ ज य आदटे ग सीवुरा आवटं । ५ ख पाडा सिया, ग. पाडू छीए । ६ ख. जोध वै मोचिया . । ७ ख सीधनी, ग सूड । ८ ख. ऊपला ।

१६३ – १ ख जुरासिध, ग. गिरं इमी । २ ख वाहे, ग वाजं । ३ ख. जणज्यो दामणी, ग जाणिजं दामिनी । ४ ख ग कीजं । ५ ख वाजिया वार । ६ ख वाराध वीराधिये, ग वीराधि वीराधीए । ७ ख. रोहिया । ८ ख जण, ग जाणिजं । ९ ख वाराह पाराधिये, ग दामिनी वीज कीजं जुदा ।

[1]धीर धीरां समा आवीया[1] धजवडे[2] ।
[3]पाग लागी[3] भडां[4] आगलां[5] वेधडे[6] ॥
गहके[7] गोफणी[8] हूंत[9] [10]छूटें गडा[10] ।
तेवडा[11] टोप [12]भाजें किता तुंवडा[12] ॥ १६४

[1]दापीयो जादवें ओथ[1] केवी दले[2] ।
करवतें[3] काट[4] के[5] वाट[6] वीजू जले[7] ॥
पंजरे[8] ऊतरे[9] दंत[10] दोरे[11] षरा ।
[12]रीण ऊभी मुडे[12] भाग जरासिंधरा[13] ॥ १६५

दांणवां[1] जादवां[2] अरण [3]जंपे दहू[3] ।
करण दीठो[4] [5]न जुध[5] आज पाछो[6] कहू[7] ॥
[8]पडे धडउ क[8] रस[9] चढे[10] गंग[11] पारीयां[12] ।
धार[13] वहें[14] एक [15]वाही संषो-धारीयां[15] ॥ १६६

पाग साथे[1] पलां[2] आछटे[3] उनगां[4] ।
आजका डोलवें[5] ढोल[6] [7]धारा अंगा[7] ॥

---

१६४ – १ ख वीर वीरं समा भीर । २ ख थाटा भिडे, ग धजवडे । ३ ख गज्ज पायो । ४ ख गदा, ग भडा । ५ ख गज बाधी । ६ ख गुडे, ग वेखडे । ७ ख गरजगे, ग गहके । ८ ख. गोफणे । ९ ख हूत, ग हुत । १० ख ग छूटै गड़ा । ११ ख टोवळी, ग त्रेवडा । १२ ख. भाजो कना तूवडा, ग भाजें किता त्रेवडा ।

१६५ – १ ख. दापया जादव हाथ, ग दापीयौ जादवे उथ । २ ख दळ । ३ ख करवत । ४ ग काढि । ५ ख. केइ, ग. काय । ६ ख. ग वाढ । ७ ख जल । ८ ख पजर, ग पाजरे । ९ ख ऊतरे वाढ, ग ऊतरै । १० ख दत्त । ११ ख दोर । १२ ख जराज्यो भीमडे, ग रिणी उभी मुडै । १३ ख. जुरासिधरा, ग जरसींधरा ।

१६६ – १ ख. दाणव, ग दाणवा । २ ख जादव । ३ ख मातो दहु, ग जपै हुहुं । ४ ख. जुध, ग. दीठौ । ५ ख पूछियो, ग न जुद्ध । ६ ग. पाछौ । ७ ख कहु, ग कहु । ८ ख पड़े धड उकरड, ग. पडै धडऊक । ९ ख. प्रतिमें नहीं है । १० ख ग. चडे । ११ ग. प्रतिमें नहीं है । १२ ख पीरिया । १३ ख घर । १४ ख. वहै, ग. वहि । १५ ख वाहे सप-धारियां ।

१६७ – १ ग मार्थ । २ ख पलं । ३ ख. आवटे, ग आघटै । ४ ख. ऊनगा । ५ ख डुकुमवा, ग डोलवें । ६ ख ढोळ । ७ ख वाळी अगा, ग धारा अगा ।

[8]कुस[8]न वाषांणीया[8] जोध वेढीमरणा[9] ।
आज बलदेव थोडि[10] घरणा आपणा ॥ १६७

कोट कोटां[1] समा जुद्ध[2] जोधा करे[3] ।
अग्रज [4]ऊपर कीयां[4] [5]आपरा उच्चरे[5] ॥
राड[6] [7]रातंबरी राम रातंषीयो[7] ।
दांणवे[8] काल [9]कलपंतरो दाषीयो[9] ॥ १६८

*आवटे[1] थाट [2]बलदेवरे आयुधें[2] ।
ऊतरे[3] अंग नरलंग[4] आधो अधें[5] ॥*
[6]लडथडे पडे धड वीछुडे[6] लोहडे[7] ।
पाईओ[8] हलधरे[9] पांणगो[10] पांनडे[11] ॥ १६९

रोहणी[1] [2]रतन ग्रभ रेवतीचो [र]मरण[2] ।
पीड[3] [4]पीडा न सुध[4] वाट [5]पांणी पीयरण[5] ॥

१६७—८ ख विमन वाषाणिया, ग. किसन वाषाणीया । ९ ग वेढ़ीमणा । १० ख थोडो, ग थीडं ।

१६८—१ ख कोटा । २ ख. जोध ग. जुध । ३ ख ग करै । ४ ख. ऊपरा कियो, ग ऊपर कीया । ५ ख आपणो सवारै, ग आपा ऊवरै । ६ ख ग राड । ७ ख रातिवरी एम रातपिया, ग. रातवरी रोम रोताषीयौ । ८ ख. दणवे । ९ ख. ग कले पसरा दाषिया, ग कलपतरौ दाषीयौ ।

१६९—*—*अश ख प्रतिमें नहीं है । १ ग आवटं । २ ग वलदेवरं आयुधे । ३ ग ऊतरं । ४ ग निरलंग । ५ ग अघे । ६ ख. लडथडे पड़े भड ··, ग लड़यडं पडं भड़ वीछडं । ७ ख लोहडो । ८ ख पाचिया, ग. पाईयो । ९ ग. हलधरं । १० ख पणागा, ग पाणगौ । ११ ख पानडो ।

१७०—१ ग रोहिणी । २ ख ग्रभ·· · रवण, ग तन ग्रभ रेवतीचौ रमण । आगे ख और ग प्रतियोंमें यह पाठ है—ख. फोज (ग फौज) सिसपालरी झुविया (ग झूवीयौ) सेंहसफण । ख मीळ महेरणा पण वण वण भमियण, ग मैंण मैं राति प्रीछानकौ पीलवण । ३ ग पीडा । ४ ख पाटो न कु, ग पीडा पाटा मृसु । ५ ख. पणी पियण ।

---

*पत्र स० ९ का क भाग पूर्ण ।

जंत्र नन[6] मंत्र आराध[7] अंजण[8] जडी[9] ।
गद[10] ओषद[11] उपचार[12] [13]नन गारडी[13] ॥ १७०

पूरवा पापती बेल[1] [बल]देवरी[2] ।
[3]हैदलां मैगलां[3] सत्र[4] सांमो[5] हरी ॥
संष सारंग [6]ते चक्र लीधो[6] गदा[7] ।
राव[8] [9]राणा घणा[9] [10]कंप छूटी[10] रदा[11] ॥ १७१

वाधयो[1] वल छण[2] जेम कल वाधती[3] ।
दांणवां[4] वण[5] करण[6] संपत[7] देषावती[8] ॥
परदले[9] नहसीयो[10] [11]गरव छो[11] पाहरू[12] ।
भोम[13] [14]उतारसे भार वालो[14] भरू ॥ १७२

मोपीया[1] वांण संधाण[2] मधुसूदने[3] ।
विसनर धडहड्यौ[4] [5]जांण पडे वने[5] ॥
झाझा[6] नांमी[7] चकर[8] सीस[9] लागा झडण ।
पतर[10] भर जोगणी रगत[11] लागी पीयण[12] ॥ १७३

---

१७० – ६ ख. ने, ग तन । ७ ख आरध, ग. आराध । ८ ख अजण । ९ ख जुडी, ग जडी । १० ख गदा सु । ११ ख ओपदे, ग उषध । १२ ख. उपगार । १३ ख नह गाडडी, ग तन गारडी ।

१७१ – १ ग वैल । २ ख वलदेवरी । ३ ख हैवर गैमर । ४ ख ग सत्रा । ५ ख सामो, ग. साम्हौ । ६ ख गो चक्र लीधं, ग कर चक्र लीधां । ७ ख. सदा । ८ ग. राउ । ९ ख रण घण, ग राणा घणा । १० ख. कंप छूटै । ११ ग. रिदा ।

१७२ – १ ख वाधियो, ग वाधीयौ । २ ख छलण, ग चलण । ३ ख वाधती । ४ ख. दणव । ५ ख जेम, ग विण । ६ ख कर । ७ ख सपत, ग सपत । ८ ख ग दीयावती । ९ ख परदळे । १० ख. निहसियो, ग निहसीयौ । ११ ख परब भो, ग ग्रभचो । १२ ख पाहरू । १३ ग. भार । १४ ख ऊतारवा जेण लीधो, ग. ऊतारसं भोम वालो ।

१७३ – १ ख मोपिया, ग मेषीया । २ ख सधण । ३ ख मदसूदनो, ग मदसूदने । ४ ख. ग. धडहडे । ५ ख. जण षडी वने, ग जांणि षडावने । ६ ख जभ्क, ग. भ्कांभ्क । ७ ख नम, ग नामी । ८ ख चिकर, ग चक्र । ९ ग सिसपाल । १० ख. पत्र । ११ ख. रत्त, ग. रत । १२ ख. पियण ।

[1]डहडहे डाक होय हाक होकारवण[1] ।
घाय[2] घूमें[3] [4]घुलें भडे[4] भाजण घडण[5] ॥
[6]विसनरा चक्र[6] पडे सर वेरीयां[7] ।
[8]दडदडे झाल[8] [9]पष कोरणे[9] कोरीयां[10] ॥ १७४

तूं बलो रोल[1] [2]अंतोल त्रूटे[2] तलां[3] ।
[4]भालवा पाल[4] जर्रासिध[5] जूटें[6] भलां[7] ॥
*संकरषण नारयिण सारषा[8] साझीयां ।
वेढ[9] आवे वणी[10] माझीयां वाझीयां[11]* ॥ १७५

[1]कहे जरसंध तुं[1] जोर[2] मोसूं[3] करी[4] ।
हरी ससपालरी[5] वरी जाय सें[6] हरी ॥
भरमीयो[7] केम [8]जरसंध तूं[8] बल[9] भणे[10] ।
ए[11] वडो[12] मलण[13] [14]मथुरा तणो आपणे[14] ॥ १७६

[1]तेहीज तुं[1] पारकी छठी जागी[2] तही[3] ।
नेट[4] तो[5] लूंकडी[6] वाघ[7] जणसे[8] नही ॥

---

१७४ – १ ख डाक दह भाक हुकार हुकारवण । २ ख घाये । ३ ख. ग घूमें । ४ ख घुळे भडे, ग घुलें भिडे । ५ ख. घडण । ६ ख. वीसन वाळो चकर । ७ ख पडे वर वैरिया, ग पडे सिर वैरीया । ८ ख. दडदडे पडै, ग दड़वड़े डाल । ९ ख. डाळह पकी । १० ख कैरिया, ग, कैरीया ।

१७५ – १ ख रोळ । २ ख ग अवरोल तूटें । ३ ख तळा, ग तला । ४ ख भादवा पाळ, ग भाद्रवा पलै । ५ ख जुरासिंध । ६ ख जूटो, ग जूटे । ७ ख ग. भला । *—*अंश ख. प्रतिमें नहीं है । ८ ग सारिषा । ९ ग. वेढ़ । १० ग वणी ११ ग मांझीयां ।

१७६ – १ ख कैहे जुरासिंध मोह, ग कहै जरसीध तू । २ ख जोड़ । ३ ख मोसू, ग मोसु । ४ ख करो । ५ ख. ग सिसपालरी । ६ ख. जासो, ग जासो । ७ ख. भरमियो, ग भरमीयो । ८ ख. जुरासिंध, ग जर्रासिंधव । ९ ख. वलभद्र, ग. वलभद्रव । १० ख ग. भणे । ११ ख. अे । १२ ग. वडो । १३ ग मिलण । १४ ख. मुथरा त ···पणे, ग मथुरा तणो आंपणे ।

१७७ – १ ख. तुहीज तु, ग तेहिज तू । २ ख जागे, ग. लागी । ३ ख तेही । ४ ख. नेठ । ५ ग तो । ६ ख. लूपडी । ७ ख. वाज । ८ ख. जेणसी, ग. जिणसै ।

माल बे[९] वाजीया[१०] आव[११] [१२]उपर मुदा[१२] ।
मुंसलां[१३] मार[१४] गुंजार[१५] मातो[१६] गंदा ॥ १७७

जोध जरसिंध[१] बलदेव[२] [३]बे बे जुडे[३] ।
थंभ[४] धूज[५] धरा[६] गरवरा[७] षडहडे[८] ॥
चोसरा[९] षंड[१०] ब्रहमंड [११]भड छाइया[११] ।
घाय[१२] तरा[१३] [१४]सपत पाताल[१४] पुड[१५] घाइया[१६] ॥ १७८

*मरगड़ां धडां[१] बलदेवरे मुंसले[२] ।
गया [३]जरसंधरा सिधवा[३] धा गले ॥*
[४]हरवयो रुकमरणी[४] [५]हरण दिन[५] हलधरे[६] ।
जेम सो[७] तेम पंचास[८] जरसिंधरे[९] ॥ १७९

*[१]जुडण दहकंध बल बंध[१] कीधो[२] जसा[३] ।
ताल[४] ससपाल[५] गोपाल [६]माता वसा[६] ॥*

---

१७७ – ९ ख नै। १० ख ... [वाजो] या। ११ ग आवि। १२ ख. ग ऊपर मदा १३ ख मूसल, ग मूसला। १४ ग मारि। १५ ख ग गूजार। १६ ग. मातो।

१७८ – १ ख जुरासघ, ग जरसीघ। २ ख. चक्रपाण। ४ ख वं वं जुडं, ग वंवे जुडे। ४ ग थंड। ५ ख ग धूजै। ६ ख घरा। ७ ग गिरवरा। ८ ख. पडहडै, ग पडहडे। ९ ख भोमरा, ग चौसरा। १० ख षभ। ११ ख. भडा वाइया ग भड षाईया। १२ ख. घाव, ग घाइ। १३ ग तिण। १४ ख हेक पाताळ। १५ ख. ग पुड। १६ ख गाहियां, ग. घाईया।

१७९ –*—*ख प्रतिमें यह अंश नहीं है। १ ग. धडा। २ ग मूसले। ३ ग. जरासींधरा सधवा। ४ ख हरविया रुषमणी, ग. हरवीयो रुषमिणी। ५ ख हणी दन। ६ ख हलधने ग. हलधरं। ७ ख. जेम थ्यो, ग. जेम सौ। ८ ख. कीधो। ९ ख जणी [री] सधने, ग जरसीधरै।

१८० –*—*ख प्रतिमें प्रस्तुत छन्दका प्रथम चरण द्वितीय चरणके रूपमें तथा द्वितीय चरण प्रथम चरणके रूपमें लिखित है। १ ख जुडण वलवध दैहै कध। २ ग. कीधौ। ३ ख जसो, ग जिसौ। ४ ख. वाळ। ५ ख ग. सिसपाल। ६ ख मातो तसो, ग मातौ तिसौ।

---

[१]पत्र स० ९ का ख भाग पूर्ण।

परठीयो[7] जुध ससपाल[8] चक्रपांणसो[9] ।
वांणसो[10] वाण[11] [12]वेधांण वेधांण सो[12] ।। १८०

बाथसो[1] बाथ [2]हथीयार हथा हथी[2] ।
रालीयो[3] धरण[4] [5]ससपालरो असथी[5] ।।
गाल[6] ससपाल[7] गोपाल [8]वाली गणी[8] ।
[9]घाये वहीया पसूण[9] धाक वागी[10] घणी ।। १८१

सार झड[1] [2]ऊझडे जलंतो सोहीओ[2] ।
रुकमणी[3] वीर [4]बलवीर गो[4] रोहीओ[5] ।।
सांधीआ[6] [7]रुकम जे[7] [8]श्रीकृसन सामुहा[8] ।
महमहण छेदीआ[9] [10]वांण नांणा[10] मुहा ।। १८२

[रुक्मिणी द्वारा अपने भाईकी रक्षाके लिये प्रार्थना]

भई[1] भगवांनरे[2] वात[3] मनभावती[4] ।
[5]जोवीयो श्रीकिसन सांमुहो[5] जूवती[6] ।।
ताप [7]छोडो प्रभू[7] वीर[8] वहीवा[9] तणो[10] ।
घरा घर लोक [11]उपहास करसो[11] घणो[12] ।। १८३

---

१८० – ७ ख परठियो, ग परठीयो । ८ ख ग. सिसपाल । ९ ख चक्रपाणसू, ग चक्रपाणसों । १० ख वाणसूं, ग वाणसों । ११ ख वाण । १२ ख वदण वदणसूं, ग वेदांण वेदाणसों ।

१८१ – १ ख वायसू, ग बायसों । २ ख. हथिहार हथिग्गारसू, ग हथीयार हथीयारथी । ३ ख काळ, ग. रोलीयो । ४ ख सिसपाल । ५ ख. पण कंम करतारसू, ग सिसपालनो अंतरथी । आगे ख प्रतिमें यह पाठ है– 'श्रीकसन कधी सतषड रथ स्वारथी, रोलिया धरण सिसपाळ सो अतरथी । ६ ख गाळ । ७ ख सिसपाळ, ग. सिसपाल । ८ ख दीधी घणी । ९ ख घाव वहीय तणी, ग. घाह वायो प्रसण । १० ख वाक, ग. वागी ।

१८२ – १ ख. झड । २ ख. ओझड वाहतो सोहिय , ग उझडां झिलतो सोहीयो । ३ ख ग रुषमणी । ४ ख वलवीर गी । ५ ख रोहियो, ग रोहीयो । ६ ख संघिया, ग साघीया । ७ ख जेम रुकम । ८ ख. श्री कसन समहा, ग. श्रीकिसन सामुहा । ९ ख छेदिया, ग छेदीया । १० ख ग वाण वांण ।

१८३ – १ ग भाई । २ ख भगवतरै, ग भगवानरै । ३ ग बात । ४ ख च वदो भती । ५ ख. जोहयो श्रीकसन समहो, ग जोईयो श्रीक्रिसन सामुहो । ६ ख ग जोवती । ७ ख थो [ड़ो प्र] भ, ग थोड़ो प्रभु । ८ ख. तीर । ९ ख. वहिया, ग वहीया । १० ग तणो । ११ ख. उपायैस क [रसी] । १२ ग घणो ।

[1]तिका आ रुकमणी एम कहसी[1] त्रीया[2] ।
काल[3] कूल[4] बंध[5] मारावतो[6] छाकीया[7] ।।
पंथ[8] पत-मात[9] पीहर तणो[10] पालसी ।
सासरे[11] [12]मेंहणा सोकरा[12] सालसी ।। १८४

महमहण आज जो[1] मूझ[2] बंधव मरे[3] ।
एह[4] षांपण[5] [6]अमां सीसथी न ऊतरे[6] ।।
मतो[7] इण[8] मारवा[9] तणो[10] केसव कीयो[11] ।
लावडो[12] जांण[13] [14]सींचाण झडपें लीओ[14] ।। १८५

[रुक्म को दंड दे कर मुक्त करना]

[1]मूंछ आधी रुकम[1] सीस[2] मूंडावीओ[3] ।
किसन[4] साला[5] तणो [6]बोल साबूत[6] कीओ[7] ।।
सांघणो[8] बोल[9] आ वाहतो साहीओ[10] ।
[11]वडो झूझारपण[11] रथ [12]तलें वाहीओ[12] ।। १८६

भणे[1] वलरांम[2] ए कांम[3] कीधो[4] भलो[5] ।
[6]धणी द्वारामती हमें कीजें टलो[6] ।।

---

१८४ – १ ख. तनहा रुपमणी कहै पीहर, ग. तनहा रुपमिणी एम कहिसे । २ ख तीयो । ३ ख. कलह । ४ ख आए, ग जिण । ५ ख. वधव । ६ ख माराव । ७ ख घर वध कियो । ८ ख. पथ । ९ ख प्रत-मात, ग पित-मात । १० ख तणी, ग तणो । ११ ख ग सासरे । १२ ख. सोकरो मैहेणो, ग मेहणा सोकरा ।

१८५ – १ ख जै । २ ग मुझ । ३ ग. मरै । ४ ख श्रेह । ६ ख षालड । ६ ख नही कि सीसथी ऊतरै, ग अम्हा सासथी न ऊतरै । ७ ग मतो । ८ ख ग अण । ९ ख मारिया, ग माईवा । १० ग तणो । ११ ख. कियो, ग कीयो । १२ ख लावडो, ग लावडो । १३ ख. जण । १४ ख सीचंण झड़िपै लियो, ग सिचाण झडफे लीयो ।

१८६ – १ ख मूछ आधा रकम । २ ख सीसि । ३ ख. मूडाडियो, ग मूडावीयो । ४ ख कसन, ग क्रिसन । ५ ख साळा । ६ ख कथन सांचो । ७ ख कियो, ग. कीयो । ८ ख. सांघण, ग सांघणो । ९ ख घाव । १० ख साहियो, ग साहीयो । ११ ख. वडो जूझारपण, ग वडो झूझारपिण । १२ ख. तळै वाहियो, ग तलै वाहीयो ।

१८७ – १ ख. ग भणै । २ ग. वलराम । ३ ख. काम । ४ ग कीधो । ५ ग भलो । ६ ख सामटा जांणत तो कोण कहतो सलो, ग धणी द्वारामती हिवै की कीजै टलो ।

सांमठो[7] साथ [8]ससपाल आंण्यो[8] सही।
कपट रहीत[9] पण[10]* बाल लीला कही[11] ॥ १८७

*किसन मूंक्यो[1] रुकम आपरो[2] भगत कर[3]।
अवगुण तोई [4]अनंत गुण मांन ऊपर[4] ॥*
फरे[5] जरासिंध[6] ससपाल[7] [8]वण फावीओ[8]।
मलग्यो[9] वींदणी[10] साथ मारावीओ[11] ॥ १८८

हार हथीयार[1] हैं[2] [3]हरण्य हीरां[3] हसत।
[4]बड बडे[4] लीध उग्रसेन[5] वाले[6] वसत॥
[7]वड वडाइ रस लेसीस वीणारीआ[7]।
[8]अनंतचा चक्रवे षाग ऊतारीआ[8] ॥ १८९

*अनंत पूरे[1] अनंत [2]पलछरां ईछीया[2]।
[3]वेर वारंगना मन्नरा वांछीआ[3] ॥*
सिंधुरां[4] हैवरां[5] [6]सहित पडीया[6] सदी।
नीर रातंबरी[7] पूर चाली[8] नदी ॥ १९०

---

१८७ – ७ ख सांमहै, ग. सामठो। ८ ख वलराम आयो, ग. सिसपाल आणो। ९ ख रोहेत, ग रहित। १० ग पिण। ११ ख किही।

१८८ –*—*ख रुकमू आपुणी जुगत नव नव करी। अवगूण अनत पण तूझ मन ऊगरी ॥१ ग मुक्यो। २ ग आपणों। ३ ग करि। ४ ग गुण अनत माने उपर। ५ ख. फेर, ग फिरे। ६ ख जुरासिंघ। ७ ख सिसपाल, ग प्रतिमें यह शव्द नहीं है। ८ ख आ फावियो, ग. विण फाबीयो। ९ ख मेल्य गा, ग मेल गो। १० ख ग. वींदणी। ११ ख माराणवियो, ग मारावीयो।

१८९ – १ ख हथियार। २ ख. ग. है। ३ ख हरन हींरा, ग हरण हीरा। ४ ख. वड वडी, ग. वड वड़े। ५ ख अग्रसेन। ६ ख. सारी। ७ ख वड वडा सीस लइ[स] वणाइया, ग वड़ वडों सीस लेईस वीणारीया। ८ ख. अनत कीधी प्रभो वंदिणो वाछिया, ग अनन्तचा चक्र ले षाग उतारीया।

१९० –*—*ख. प्रतिमे यह अर्थ नहीं है। १ ग. पूरी। २ ग पलचरा ईचीया। ३ ग. वरे वारगण मनरा वछीया। ४ ख. सिंघरे, ग. सींधरा। ५ ख हैमर। ६ ख. [सहित पडी] या। ७ ख रातवरे, ग. रावबरी। ८ ख चाळी, ग चाली।

---

*पत्र स० १० का क भाग पूर्ण।

पीये[1] पल[2] प्रघल[3] कंठ [4]बहू य[प]लछरां[4] ।
[5]भाद्रवो माछीओ[5] [6]षेचरां भूचरां[6] ॥
चसलके[7] ग्रीधणी[8] चंच भर चलूवले[9] ।
[10]काय तांणी[10] पीये[11] बूढते[12] कंबले[13] ॥ १९१

मुंसले[1] हले[2] बलदेवरी मंडली[3] ।
[4]कदली वनसो नांषीया[4] कंदली ॥
[6]मार अर[6] मुंसले[7] हले[8] [9]लीधा[9] मले[10] ।
[11]षेत बलदेवरो दीठ[11] सेलो[12] षले ॥ १९२

*साथ [1]सह सावतो पसुंण पडीया सवे[1] ।
जांणीओ[2] महातम [3]किसनरो यादवे[3] ॥*
भाज ग्यो[4] हेम[5] [6]दल* किसन वलीया[6] भई ।
षोलीए[7] षेत[8] पण[9] लुंट[10] कांबे[11] लई ॥ १९३

नरदले[1] असपती गजपती नरपती ।
दुलहणी लावीओ[2] जीप[3] धारामती[4] ॥
किसन[5] कारज बने[6] पंथ हेकण कीया[7] ।
सेसचो[8] भार [9]उतार आंणी[9] सीया[10] ॥ १९४

---

१९१ – १ ख ग पीयें । २ ख. पळ, ग प्रल । ३ ख ग प्रघला । ४ ख बोहु प्रघलरा, ग. बिहु पलचरां । ५ ख भादवो माचियो, ग. भाद्रवो माचीयो । ६ ख षेचरे भूचरा । ७ ख चसभैकं, ग. चसलकं । ८ ग. गीधणी । ९ ख. चलुयळे, ग. चलीयणे । १० ख. कायं त्योणी । ११ ख. पियें, ग. पाये । १२ ख. बूढतै । १३ ख काबले, ग कमले ।

१९२ – १ ख ग, मूसले । २ ख हले । ३ ख मडळी । ४ ख कदळीवन्न सा नांषिया, ग. कदलीवनसों नाषीयो । ५ ख. कदळी । ६ ग. मारि अरि । ७ ख. ग. मूसले । ८ ख अनै । ९ ख सिघल । १० ख. हुले, ग मिले । ११ ग. षेत्र बलदेवरो दीठ । १२ ख ग सैलो ।

१९३ – *—*ख प्रतिमें यह अश नहीं है । १ ग सहि सावतो पिसण पडीया सवे । २ ग. जाणीयो । ३ ग. किसनरो जादवे । ४ ख. ग, गो । ५ ग. हिमं । ६ ख. दळ कसन वोलिया । ७ ख पालीया, ग षोलीयो । ८ ग षेत्र । १० ख नं, ग. पिण । ११ ख लूट । १२ ख कावें, ग. कावे ।

१९४ – १ ख नरदळं, ग निरदले । २ ख ल्यावियो, ग लावीयो । ३ ख जीत । ४ ख. ग. द्वारामती । ५ ख कसन । ६ ख बन्यं, ग. बिन्हें । ७ ख. किया । ८ ख. सेसरो, ग सैसचो । ९ ख. ऊतार आणे । १० ख. ग श्रीया ।

[श्रीकृष्ण का विजयी हो द्वारिका लौटना]

*वंभमें[1] आज [2]वामांग वांमी वला[2] ।
[3]हलंते मो मती समंद हालोहला[3] ॥*
कुशल[4] हर आवीया[5] साथ [6]सारो कुशल[6] ।
[7]धोलहर धोलहर[7] मंगल [8]दीजें धमल[8] ॥ १९५

[1]गाजीया वाजत रन नगारा गडगडी[1] ।
[2]चाह वीवाह बहू[2] प्रज ओटे[3] चडी[4] ॥
[5]चंद्रचे चंद्रचे चाहीया चोहटा[5] ।
घूघटी[6] अंबरें जांण[7] बाराह[8] [9]घटा[9] ॥ १९६

[1]कांगरे कांगरे मोर[1] कंगावीया[2] ।
पाट पाटंबरें[3] हाट पेहरावीया[4] ॥
[5]मालीए मालीए[5] हीर हाटक मणी ।
[6]जालीए जालीए[6] नगररी[7] जोपणी ॥ १९७

[1]सेरी[a]ए सेरीए पाटपट सांधीए[1] ।
बारणे बारणे [2]तोरणे बांधीए[2] ॥

---

१९५ -*—*ख. प्रतिमें यह अंश नहीं है । १ ग वभमै । २ ग वामग वामी वन्ना । ३ ग. हिलतै गोमती समुद्र हलोहला । ४ ख कुसळ, ग कुसल । ५ ख. आविया । ६ ख सारे कुसळ, ग सारो कुसल । ७ ख धमळ घर घोलिया, ग धवलहर । ८ ख वाजो धमळ ।

१९६ – १ ख. वाजते गाजते आज उरवड़ी, ग गाजीया वोजतर नगारा गड़गड़ी । २ ख चाहवा माहवा, ग वाह वीमाह बहु । ३ ग. ऊटे । ४ ख ग चढ़ी । ५ ख. चांद्रवा चद्र ओछाड़िया चोहेटी, ग चन्द्रूए चद्रूए छाईया चौहटा । ६ ख. घूघरे, ग घूघटी । ७ ख जीण । ८ ख पूरी, ग वारै । ९ ख. घटी ।

१९७ – १ ख कगरे-कंगरे मूर । २ ख त्री गाइया, ग क्रींगाईया । ३ ख. ग. पाटवरे । ४ ख. पैहैराइया, ग. पहिराईया । ५ ख माळिये माळिये । ६ ख जाळिये जाळिये । ७ ख नग तणी, ग. नगरी ।

१९८ – १ ख. सेरिये सेरिये पाट पट साइये । २ ख. तोरणा वधवालियै ।

---

[a]पत्र स० १० का ख भाग पूर्ण ।

[3]ओदणे ओदणे जुवती ओदणे[3] ।
[4]चोतरे चोतरे[4] [5]हंस मोती[5] चुणे[6] ।। १६८
[1]वाडीए वाडीए वाटका[1] वनरे[2] ।
आलपे[3] कोकिला[4] कंठ [5]ऊंचे सरे[5] ।।
[6]मारगे मारगे गहमही[6] मालणी[7] ।
[8]चोसरे चोसरे मेल[8] [9]थई चोगणी[9] ।। १६६
*तोडरे तोडरे माल मोती[1] तणी ।
गोषडे गोषडे [2]लूंण ल्ये[2] गेहणी ।।*
[3]आंगणे आंगणे[3] [4]चोक पूरे[4] अवल[5] ।
कन[क]रे[6] आंगणे[7] केल कलसा कमल[8] ।। २००
*मांडहे मांडहे नागवेली मली[1] ।
[2]आपणी आपणी गुडीयां[2] ऊछली ।।*
[3]घंटवे घंटवे[3] संष[4] झालर घुरे[5] ।
आरती आरती [6]वेद विप्र[6] उचरे[7] ।। २०१
[1]मंदरे मंदरे[1] तूर भेरी मृदंग[2] ।
इयें[3] उनमांन[4] [5]सो वसदेवरे[5] उछरंग ।।

---

१६८ – ३ ख. तोडरे तोडरे ' '' ल मोती तणी, ग. ऊजले ऊजले जोवती उदणें । ४ ख गोषड़े गोषड़े, ग. चौतरे चौतरे । ५ ख लूण ले । ६ ख ग्रीहणी, ग चुणें ।

१६६ – १ ख. वाडियै वाड़ियै वाटकी । २ ख वीदरें, ग वानरे । ३ ख अलापें, ग आलापें । ४ ख कोकले । ५ ख ऊंचा सरें । ६ ख मडवे मडवे नागवोली । ७ ख. मळी, ग मालिणी । ८ ख आपणे आपणे गूंडिय, ग चौसरें चौसरें मोल । ९ ख ऊछळी ।

२०० – *—*ख प्रतिमें यह अश क. प्रतिके छंद सख्या १६८ के साथ है । १ ग मोत्यां । २ ग. लौण लें । ३ ख आंगणें आगणें । ४ ग. चौक पूरें । ५ ख अवळ, ग. अवल । ६ ख ग कनकमें । ७ ख. अंगणें, ग आगणें । ८ ख कमळ ।

२०१ – *—*ख प्रतिमें यह अश क प्रतिके छद सख्या १६६ के साथ है और इस स्थान पर यह पाठ है—"देहली देहली दोव सींचो दही । मेंहली मेंहली धूपणा महमही ।।" १ ग मिली । २ ग अपणी अपणी गोडीया । ३ ख, घाटजें घाटजें, ग घटवें घटवें । ४ ख भेर । ५ ख ग घुरें । ६ ख वीद वेद, ग विप्र वेद । ७ ख ग ऊचरें ।

२०२ – १ ख. मडवे मडवे । २ ख. म्रदग । ३ ख. अेह, ग एण । ४ ख सनमन्न । ५ ख. वसदेवरें, ग वसदेवरें । ख प्रतिमे आगे यह पाठ है—"घूमरे घूमरे पात्र नाचें घणा । वीठले साजियें कोड वधमणा ।।"

उधव पधरावीया[६] [७]किसन घर[७] आपणें[८] ।
नाचीया[९] नेव [१०]तिण ताल[१०] ओधा[११] तणें[१२] ।। २०२

[श्री कृष्ण-रुक्मिणी का विवाह]

[१]पूछीयो तेड वसुदेव[१] जोसी प्रसन ।
लीजीयें[२] देवकी [३]कहे घडीओ[३] लगन ।।
आषीयो[४] देवकी रास उद्योतरी[५] ।
जसोदा नंदरे[६] घरे जांमोतरी[७] ।। २०३

पष कहे[१] देवकी कवण कहे[२] दिन[३] पहर[४] ।
[५]वार वरतीओ लगन रुषमणी[५] वर ।।
भाद्रवो[६] मास [७]नें कृष्णपष[७] भावई[८] ।
तिथ[९] तो[१०] आठमी[११] बुद्ध[१२] हूंतो[१३] तई[१४] ।। २०४

रोहिणी[१] नष्यत्र[२] [३]नें राति[३] आधी रही ।
[४]ससिरे उगमण[४] जनम जांणो[५] सही ।।
जोवतां[६] जनम दन[७] जनमपत्री[८] जुडी[९] ।
घणो[१०] सिध[११] जोग गोधुलक[१२] वाली[१३] घडी[१४] ।। २०५

---

२०२ – ६ ख. पधाराविया । ७ ख कुसल घर घर । ८ ख अणे, ग आपणे । ९ ख. नाचिया । १० ख. तण चार । ११ ख उधव, ग ऊधव । १२ ख. ग तणे ।

२०३ – १ ख पूछियो तेड वसदेव, ग. पूछीया तेथ वसदेव । २ ख वरतिया, ग लीजीयें । ३ ख. तेम घड़ी, ग. कहि घडीयो । ४ ख आषियो, ग. आषीयो । ५ ख. ऊदोतरी, ग उदोतरी । ६ ख जसोदनदरे, ग. जसोदानदरे । ७ ख. ग. जनमोतरी ।

२०४ – १ ख कही, ग कहि । २ ख है, ग. कहि । ३ ख. दन । ४ ख. पोहोर । ५ ख वसन है देवकी रुषमणी तणो, ग. वरतीयो रुषमणी लगन तणो । ६ ख. भादवा, ग भाद्रवो । ७ ख. ने पष अधार, ग नै किसन पष । ८ ख. भयो । ९ ख तीथ, ग. तिथि । १० ग तो । ११ ख. असटमी, ग अष्टमी । १२ ख ग बुध । १३ ख हुतो, ग हुतो । १४ ख. तयो ।

२०५ – १ ख. ग. रोहणी । २ ख नषत, ग नषत्र । ३ ख ने रात, ग रात । ४ ख. सस तणो [उग]मण, ग. सिस तो ऊगमण । ५ ग. जाणो । ६ ख. जाणियो, ग जोईयो । ७ ख. ने, ग. दिन । ८ ख. जनमपुत्री । ९ ख ग जुड़ी । १० ख. घणे, ग. घणो । ११ ख. सध । १२ ख. गयुधोल, ग. गोधूल । १३ ख वाळी । १४ ख ग घडी ।

हल करो[1] [2]सार ही[2] जिमण[3] विहला[4] हुसी ।
[5]पाछली रातरे पोहर हर[5] परणसी ।।
छप्पन[6] कुल[7] तेडीया[8] भोग [9]वस कीया[9] छपन ।
वालीया[10] [11]पांतश्रा उसदां षट वरन[11] ।। २०६

*[1]घणे माहातम सार ही आदर अती घणे[1] ।
[2]पोषीयां विसन व बलदेवरे प्रीसणे[2] ।।*
क्रसनसुं[3] राजगुर[4] [5]एम आवी[5] कहे[6] ।
विलंब[7] कोजें[8] नहीं[9] लगन वेला[10] वहे[11] ।। २०७

पेंहरीयो[1] लाल [2]इजार पंचवरनीयो[2] ।
[3]तांण तण ऊपरां सष्षरा[3] तनीयां[4] ।।
के[⁄]सरी[5] पाग[6] नें[7] चोलणे[8] केसरी ।
[9]एक तारी घणी[9] घेर आडंबरी ।। २०८

पीत पछेवडी[1] ओढणे[2] दोपटी[3] ।
नंद-गामी[4] नमो धरण गांमी[5] नटी[6] ।।

---

२०६ – १ ग करो । २ ख ठाकुरां । ३ ख ग जमण । ४ ख. वैहैलो, ग बहिला । ५ ख पाछले पोहर रुषमण कसन, ग पाछलै पहर किसन रुषमणी । ६ ख ग. छपन । ७ ख. कुळ । ८ ख तेडिया, ग तेडीया । ९ ख कीधा । १० ख वळे । ११ ख असद किया काज नव दू वरन, ग पांतीया उसदे नव दोर वन ।

२०७ – *—*यह अश ख प्रतिमें नहीं है । १ न. घणो आदर महत सार ही अति घणै । २ ग पोषीया त्रिसन बलदेवरै प्रीसणै । ३ ख कसनसु, ग किसनसौ । ४ ग राजगुरू । ५ ख गगाचारज, ग गगचारज । ६ ख. ग कहै । ७ वलब । ८ ख कीजो, ग कीजै । ९ ख नथी । १० ख. वेळा । ११ ख. ग वहै ।

२०८ – १ ख पैहैरिया, ग पहिरीयौ । २ ख. अेजार पचव्रनिया, ग ईजार पचवरनीयां । ३ ख ताणीया सषर ऊपरै, ग ताण तिण ऊपरा सघरा । ४ ख तनिया । ५ ख केसरि । ६ ख. ग पाघ । ७ ख ने, ग नै । ८ ख चोलणो, ग. चौलणौ । ९ ख आगताई घणे ।

२०९ – १ ख पछेवडो, ग पाछेवड़ी । २ ग. उढणे । ३ ख दूपटी, ग. दोवटी । ४ ख नद-नमी । ५ ख घमी । ६ ख ग घटी ।

[⁄]पत्र स० ११ का क. भाग पूर्ण ।

आदरस[७] [८]पूरस प्रमांण इक आंणीयो[८] ।
[९]तिलक मृगमद[९] तणो[१०] महमहण तांणीयो[११] ॥ २०६

आंणीया[१] अरगजा[२] घात[३] सूंधे[४] घणा[५] ।
छपन कोड[६] [७]करे परस्पर[७] छांटणा[८] ॥
रंग बीडां[९] तणो[१०] [११]डस्सणें राजीयो[११] ।
छात[१२] [१३]भण लोकरो सेहरो छाजीयो[१३] ॥ २१०

*कोट कोटी तणा नंग[१] जे कुंदणे[२] ।
[३]ओपीयो जादवें[३] इंद्र आभूषणे[४] ॥*
जांनोए[५] जादवे बंभ[६] बंदी[७] जणे[८] ।
चंदणे[९] महकते[१०] [११]गहकते चारणे[११] ॥ २११

*परठ[१] पग पागडे[२] चढे[३] त्रिभुवणपती[४] ।
[५]ढलकतै मेलीयो चोसरीं[५] ढलकतीं ॥
[६]ढलकते चोसरे[६] कोट [७]चांमर ढले[७] ।
मदनहर[८] वदनचो[९] रूप [१०]जोवा मले[११] ॥* २१२

---

२०६ – ७ ग आदि । ८ ख. परस सु अर अरक आणियो, ग पुरुष परिमांण एक आंणीयो । ९ ख तलक ऋघमद । १० ख चो, ग तणो । ११ ख ताणियो, ग आणीयो ।

२१० – १ ख आणिया ग. आंणीयो । २ ख अरगजै । ३ ग घाति । ४ ख. सुधै, ग सुधे । ५ ख. घण । ६ ख. ग कोड़ी । ७ ख. घणा उपर करै, ग करै परसपर । ८ ख छटणा । ९ ख वीडी, ग बीडा । १० ग. तणो । ११ ख डसण पण राचिया, ग डसणे राजीयो । १२ ग छात्र । १३ ख त्रीलोकरी सैहरो छाजिया, ग. त्रीलोकरो सेहरो छाजीयो ।

२११ *—*ख. प्रतिमें यह अश नहीं है । १ ग. नग । २ ग कूंदणे । ३ ग उपीयो जादवा । ४ ग. आभूषणे । ५ ख. जाणियो, ग. जानीए । ६ ख वेद । ७ ख वेदी, ग. ववी । ८ ख जुणे । ९ ख चदणो । १० ख मैहैकतो, ग महिके । ११ ख गैहैकते चारणे ।

२१२ – *—*ख प्रतिमें यह अश क. प्रतिके २११ वें छन्दसे पूर्व प्राप्त होता है । १ ख· · ·[परठ] । २ ख पागडे, ग पागडे । ३ ख. चडयो । ४ ख त्रभवणपती, ग त्रिभुवनपती । ५ ख ढलकते मे[लीयो चो]सरा, ग ढलकतो मोलीयो चोसरी । ६ ग. ढलकतो चोसरा । ७ ख चोमर ढुळै, ग, चामर ढलै । ८ ख. मदहर, ग मनहर । ९ ग वदनचो । १० ख जोव मळे, ग. जोग मिलै ।

*चोक[1] पूरावीयां [2]चंद नें चाउलें[2] ।
हाथ हेकां[3] भरीं थाल मोताहलें[4] ।।
सुभ[5] हर आरती जुवती[6] संचरी ।
[7]कांगरे कांगरे[7] दीपमाला करी ।।* २१३

*देवकी [1]रोहणी राव धारामती[1] ।
लूंण[2] लेती [3]करे ऊपरां[3] आरती ।।*
[4]पोहर पेहला[4] समा पुहचीया[5] हर परण ।
गोत्र[6] गुण लषण बत्रीस[7] हंसा गमण ।। २१४

कवण[1] [2]कव सकत[2] रसण हेकण कहे[3] ।
[4]लेहणो गेहणो तास लषमी[4] लहै[5] ।।
[6]रुषमणी किसनरे रंग पूगी रयण[6] ।
[7]रंग-रस कहत जो[7] सेस देतो[8] रसण ।। २१५

कीध[1] केसर तणा[2] मंजणा[3] कुंकमें[4] ।
आभरण पंगरण[5] तिलक[6] आचंभमे[7] ।।

---

२१३ – *—*ख. प्रति मे यह छन्द नहीं है । १ ग चौक । २ ग चाहने चाउले । ३ ग एकोत । ४ ग मोताहले । ५ ग. सुभं । ६ ग. जोवती । ७ ग कांगुरे-कांगुरे ।

२१४ – *—*ख. प्रतिमें यह अंश नहीं है । १ ग. रोहिणी द्वारामती । २ ग. लूण । ३ ग. करैं ऊपरा । ४ ख. पोहोर पैहैला, ग पहर पहिला । ५ ख पोहोचिया । ६ ख. गत, ग. गात । ७ ख. ग वतीस ।

२१५ – १ ख. कमण । २ ग. कवि सगति । ख. प्रतिमें आगे "गुण" शब्द अधिक है । ३ ख. ग. कहै । ४ ख लहण ग्रैहैणो लछी लछमी, ग ग्रिहणौ लैहणौ तरस लिषमी । ५ ग ग्रहे । ६ ख. पोढिया हर परण पलग रुपमण परण । ७ ख राग-रस कँहत तो । ८ ख. दैतै, ग. देतौ । आगे ख प्रतिमें यह पाठ है—"रुषमणी कसनरें संग पोहोती रयण । मैहैल जादव मळे सभळे महमहण ।।"

२१६ – १ ख कहर । २ ख उमर, ग. घणा । ३ ख. अगरमैं । ४ ख. कुम-कुमा, ग. कमकमैं । ५ ख. पूगरण, ग पगुरण । ६ ख तलक । ७ ख. आचेभ्रमा, ग. अचंभमैं ।

करण घोर आधार अरक दीपग उजियाळो।
नमो वडा वणवीर मयक हू नपत्रा मीळो ॥

अकवीस व्रहैम ·· ·· ··ढाढ गर रपणा।
पधर अबर आकास थतास थलावण थभणा ॥

पै कियो पेष परमेसवर, ऊपर सायर अप्रडा।
सोइलो घणो साइडो भणै, तोनै मूझ तारत्तडा ॥

६ ख. इति श्री गुण रुषमणीहरण सपूर्णम्, ग. इति रुषमणीहरण सपूर्णम्। ख और ग प्रतियो में लिपिकाल नहीं है।
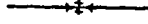
परिशिष्ट १

शब्दार्थ और टिप्पणियां

ई० – गुरु के आगे ६ श्री लगाने की परम्परा रही है। सभवतः यह ६ श्री अथवा ॐ का परिवर्तित एव अलकृत रूप है।[1]

अथ – ग्रन्थ का आदि-सूचक शब्द-प्रयोग, (स०)।

रुपमणी – रुक्मिणी (स०) का राजस्थानी रूप।

लिष्यते – लिखा जाता है। सस्कृत लिख् धातु (कर्मवाच्य) लट् लकार का प्रथम पुरुष का एक वचन। प्रस्तुत सस्कृत क्रियापद का राजस्थानी के अनेक ग्रन्थो में यथावत् रूप में ग्रहण हुआ है।

गाहा चोसर – एक प्रकार का 'गीत' नामक राजस्थानी छन्द। 'गाहा चोसर' सावक अडल नामक गीत का उपभेद है।[2] गीतो का एक प्रकार 'चोसर' भी है किन्तु यह 'गाहा चोसर' से भिन्न है।[3] गाथा एक प्रकार का अर्द्ध-मात्रिक छन्द है। इसके प्रथम और तृतीय चरण में १२-१२ तथा द्वितीय और चतुर्थ चरण मे १५-१५ मात्राए होती हैं। गाथा के प्रथम, तृतीय, पचम और सप्तम गण में जगण नहीं होना चाहिए किन्तु छठे गण में जगण आवश्यक है।[4]

किसनाजी आढ़ा कृत 'रघुवरजस-प्रकास' नामक राजस्थानी भाषा के काव्यशास्त्रीय ग्रंथ में गाथा के २६ भेद बताये गये हैं।[5]

श्रीकृष्ण भट्ट-गुम्फित 'वृत्त-मुक्तावली' में गाथा छन्द का लक्षण इस प्रकार दिया है—

> पूर्वार्द्धे त्रिशत् स्युः परतोऽपिच सप्तविंशतिर्मात्राः।
> तर्हि भवेत् सा गाथा तद्विपरीता विगाथास्यात् ॥ ३३[6]

गाथा अथवा गाहा नामक छन्द की प्राकृत भाषा में प्रधानता रही है, जिसके कारण प्राकृत का अपर नाम ही गाथा प्रचलित हो गया है।

---

[1] राजस्थानी साहित्य-सग्रह, भाग २, पृ. ६८। रा प्रा. वि. प्र. जोधपुर।

[2] रघुनाथरूपक गीता रो, मछाराम कृत, स. महतावचद्र खारेड, पृ. ११३। का. ना. प्र. स. वाराणसी।

[3] पिंगल सिरोमणि, हरराज कृत, स नारायणसिंह भाटी, पृ. १५७। परपरा, रा शो सं. चौ जोधपुर।

[4] राजस्थानी शब्द कोश, स. सीताराम लालस, पृ. ७१८। रा शो स चौ जोधपुर।

[5] स सीताराम लालस, पृ ७६। रा. प्रा. वि. प्र. जोधपुर।

[6] स. मथुरानाथ भट्ट, पृ. २१, प्रकाश्यमान रा. प्रा. वि. प्र जोधपुर।

[8]साकसू पाकसूं क्रसन[8] भोयण[9] करे[10] ।
ऊपरां[11] आचमण[12] भरण [13]बीडा उरे[13] ॥ २१६

[श्रीकृष्ण की राज्य-सभा का वर्णन]

छपन कुल[1] [2]कोड सो जोड बैठो[2] सभा[3] ।
षेल पायक[4] करे[5] [6]मल्ल ओडे[6] षभा ॥
उरवसी मेंन[7] रंभा जसी[8] अपछरा ।
मोहणी[9] रोहणी[10] रंभरा[11] मुंजरा[12] ॥ २१७

सूंण[1] [2]हद हेक[2] नारद[3] मल[4] सारदा ।
नाद अहिलाद[5] [6]पेहलाद सो[6] नारदा ॥
गंधर्वा[7] चारण[8]* भाट मोटा गुणी ।
[9]चोज रूपकरी रागरी[9] चाहणी[10] ॥ २१८

[1]वेद वापार[1] उदार[2] मोटी वजा[3] ।
साव[4] आदर [5]लहे कूड[5] पांमे[6] सजा[7] ॥

२१६—८ ख साकसु पाक श्रीकसन, ग साकसू पाकसूं क्रिसन। ९ ख भोजन। १० ख ग करै। ११ ख. ग ऊपरै। १२ ख आचवन, ग. आचमन। १३ ख वीडी भरै, ग वीडा उरै। आगे ख. प्रतिमें यह पाठ है—"कसन आया मैहेल माहे कसना-गरै। चरचिया पारजातीग तणे चोसरै॥"

२१७—१ ख. कुळ। २ ख कोड सजोड़ वैठा, ग कोडसो जोड वैठो। ३ ख. ग छभा। ४ ख पायक। ५ ख ग. करै। ६ ख मेल वैठा, ग. मल उडै। ७ ख. मघ, ग मेन। ८ ग जिसी। ९ ख. रोहणी। १० ख. मेघणी, ग. रोहिणी। ११ ख रामरा। १२ ख मूजरा।

२१८—१ ख सनक, ग सुणे। २ ख सनकदन। ३ ख आद। ४ ख मळै, ग मिलै। ५ ख. अहेलाद। ६ ख. पैहेलाद मैहै, ग पैलाद सौ। ७ ख ग [घर्वा], ग गद्रवा। ८ ख. चारणा। ९ ख. राग रूपगरी चो[ज]रा। १० ख. ग. चासणी।

२१९—१ ग वेदचा पार। २ ख ऊदार। ३ ख. वाजा, ग विजा। ४ ख. ग साच। ५ ख. [लहे कू]ड। ५ ख. पावै, ग. पामै। ७ ख. सभा।

---

*पत्र स० ११ का ख भाग पूर्ण।

[८]केसरी कांन दे[८] [९]धर्म-कांमो[९] करे[१०] ।
पाप ले[११] घातीयो[१२] लोहरे[१३] पांजरे[१४] ।। २१९

[१]तेथ भेला चरे सिंह सूरही तटा[१] ।
सींह[२] नें[३] बाकरी मींनडी[४] सूवटा ।।
[५]तेथ वरणा वरण सरस वसूदेव[५] तण[६] ।
मांडीयो[७] [८]त्याग द्वारामती[८] महमहण ।। २२०

करण[१] [२]लीधो जिसे तमें जसो[२] हठ करी ।
[३]साइडें राषीयो[३] त्याग[४] वृजसुंदरी[५] ।।

[६]इति श्रीरुषमणीहरण सपूर्ण ।। श्री ।।[६]

सवत १९०४ ना चैत्र सुद १० गुरौ सपूर्णो भवता ।। लिखित पं० । कीर्तिकुशल गणि । वाचनार्थं चिरजीवी गुलालचंद तथा रंगजी ।। श्री कच्छ देसे गाम श्रीमानकूआ मध्ये इद पुस्तकं लिपीकृता ।। यादृश दृष्ट्वा तादृशा मया लिपीकृता ।। श्री ।।

---

२१९ – ८ ख कसनरे करणवे, ग केसरा करणची । ९ ख धरम-नमा, ग धरम-कामो । १० ख ग करै । ११ ग. लै । १२ ख. घाळिये, ग. घातीयो । १३ ख ग. लोहरै । १४ ख पींजरै ।

२२० – १ ख जन स आछी रमै साप जू जू [सू]वटा, ग जेथ आवी रमै सघ सुरही घटा । २ ग. सीहै । ३ ख नै, ग. प्रतिमे यह शब्द नहीं है । ४ ख मीनकी, ग. मीनडो । ५ ख. सेस वरणो वरण तेथ वसदेव, ग. आव तेथे रहै सरस वरणा । ६ ग वरण । ७ ख. भमियो ग माडायो । ८ ख. लाग दूरीमती ।

१ ख करी । २ ख लाधा जगत जोडिया, ग. लीधो जिही तिमो छसों । ३ ख साइडो राखियो, ग. साइडे राषीयो । ४ ख नेग । ५ ख. वजसुदरी, ग व्रिजसुदरी ।

आगे ख. प्रतिमें निम्नलिखित पाठ है—

।। कवत ।।

कसन परण रुषमणी माण रुकमयिया माटै ।
जुरासिंघ सिसपाल पोहोव परहस भर पाटै ।।
कर उद्धार भीमक वार जादव वरणाई ।
देष-देष वसदेव भलो कहै वलभद्र भाई ।।
आरती करै जो[ज]सोदा अनत, पग मडे पधराविया ।
कर जोडै विनती करै, सायै आयै साइया ।।

गाथा को लोक-साहित्य का एक प्रकार भी माना गया है जिसमें कथानक और गेयता का समन्वय होता है।[1]

इस विषय मे 'ढोला मारू रा दूहा' में निम्न उल्लेख है—

गाहा गीत विनोद रस, सगुणा दीह लियति ।
कइ निद्रा, कइ कळह करि, मुरिख दीह गमति ॥ ५६८[2]

गाहा चोसर

[१]

भल कव – भले कवि, श्रेष्ठ कवि से तात्पर्य है। वहण – वाहक, वाहन। उकत विसेष – उक्ति विशेष के कारण। काला ई वाला – कृष्ण-चरित्र का निरूपण। त्राये – तैराये, कृष्ण-चरित्र का गान कर तरण-तारण हुए।

[२]

सब्द-जयाज – शब्द रूपी जहाज। सकव – सुकवि। तण ताली – उसी समय, तत्काल।

महण – महार्णव, महासागर। तरण – तैरने के लिए।

वनमाली – हे वनमाली ! हे कृष्ण ![3]

जोडिस' तुवा-जाली – एक तुवे की जाली जोडूगा। नदी और सरोवर आदि को पार करने के लिए तुंवा-जाली का प्रयोग किया जाता रहा है। एक राजस्थानी कहावत है—

तुवो तरै नै तुवो तारै ।
तुवो कदी नी भूखा मारै ॥

तुवे के स्थान पर घड़े भी जोड़े जाते रहे है। ऐसे साधन को 'घड-नाव' कहते हैं।

[३]

दरीआ' सेन उतारे – राम के द्वारा ससैन्य समुद्र पार कर लका जाने की ओर सकेत है।

समर क्रसन तणो – श्रीकृष्ण का स्मरण।

तुवे-वेठा – तुवे पर वैठने पर, तुवे पर वैठे हुए को। केम – कैसे।

दूहा – राजस्थानी काव्यशास्त्र में दूहे के मुख्य भेद ४ माने गये हैं—दूहो (छोटो), सोरठियो दूहो (हिन्दी का सोरठा), सांकळियो दूहो और तुबेरो दूहो। किसनाजी आढ़ा ने अपने 'रघुवरजस-प्रकास' में दूहे के २३ भेद लक्षण और उदाहरण सहित बताए हैं।[4]

---

[1] हिन्दी साहित्य कोश, स डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, पृ. २५८–२५६। ज्ञा. म वाराणसी।

[2] स प सूर्यकरण पारीक, नरोत्तमदास स्वामी और ठा रामसिंह, दोहा स ५६८। का. ना प्र स वाराणसी। इस भाव के अन्य श्लोक से मिलाइए—

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन तु मूर्खाणा निद्रया कलहेन वा ॥ (हितोपदेश)

[3] वनमाली वलिध्वसी कंसारातिरधोक्षज । ४२, अमरकोश, प्रथम काण्ड।

[4] स सीताराम लालस, पृ ६२–७०, रा प्रा. वि. प्र. जोधपुर।

दूहा

[१]

हूं गाइस – मैं गाऊँगा ।

पूरण कुला – पूर्ण कलाओं से युक्त । श्रीकृष्ण पूर्ण पुरुषोत्तम और १६ कलाओ के अवतार माने जाते हैं ।

छंद झपताल – छन्द झपताल के लक्षण किसनाजी आढ़ा कृत रघुवरजस प्रकास में इस प्रकार से वर्णित है—

गुर अत मत चवदह गिणै । भल झपताळी कवि भणै ॥
रघुनाथ जेण रिझावियौ । पद उरध तै कवि पाइयौ ॥

'पिंगलसिरोमणी' नामक हरराज कृत राजस्थानी काव्यशास्त्रीय ग्रंथ में इस छन्द के लक्षण इस प्रकार दिए गए है—

रिस मेघ मत्त विसामय ताटंक रिस फिर रस तयं ।
झंपटाळ झफालियं इण दोय नामा दाखियं ॥[1]

उक्त लक्षण 'रुखमणी-हरण' में प्रयुक्त 'झपताल' छंद में नहीं मिलता है। संभवतः इस कृति में प्रयुक्त छन्द झपताल का अन्य भेद है।

छंद झपताल

[१]

प्रगटया – प्रकट हुए। वमल – विमल, निष्कलंक। पत मात – पिता और माता।
छात – (क्षात्र ?) क्षत्रिय-कुल। जणावियो – पैदा हुए। लार – पीछे।

[२]

राय-कुअरी – राजकुमारी। ऊजली – उज्ज्वल। सोझीये – खोजने, शोध करने हेतु।

[३]

भाषीयो – बोला। चवद जोता भुवण – चौदह भुवनो को देखते हुए।
जोर वर – जोडी का वर। सूझे – दिखाई देते हैं, समझ में आते हैं।
जलण घृत रालयो – अग्नि में घी डाला, बात को बढ़ावा दिया। भालयो – देखा।

[४]

अवर – अन्य दूसरे। अपरोग – अपरोक्ष, उपेक्षित। एतला – इतने।
सोझ – देख, शोध कर। भरुवाड – एक पशु-पालक जाति। आहीज – यही, ऐसी ही।

वुधपण आव ए – वृद्धावस्था आने पर।

---

[1] स. नारायणसिंह भाटी प ६३। रा शो सं. चौ जोधपुर।

[५]

वीमाहरी – विवाह की। सोछ – सोच कर। वली – फिर, पुनः। गोत – गोत्र।

गुलणे गली – (?) मूमालणे – ननिहाल में।

पोढ • पालणे – पालने में सोते हुए वास्तव में कभी रोये नहीं। बालक जन्म लेते ही रोता है।

[६]

मासी तणे – मौसी का [यशोदा का]।

गलो ग्रह रेसिओ – गलग्रह बना रहा। आफत बना रहा।

माउलो घेसीओ – मामा को मारा और उसको अनेक प्रकार से खींचा।

साप – साक्षी, गवाही। सावता – सबके सब। दापा – कहा।

[७]

लपण बत्तीस – श्रेष्ठ पुरुष और स्त्री के ३२ लक्षण माने गए हैं परन्तु यह तेतीस लक्षणो वाला है। व्यङ्गय प्रेक्ष्य है। पसू नवेनत – पशु-नवनीत, गायो का मक्खन।

पत गली – विश्वास गळ गया अर्थात् उठ गया।

आगली'' गली – अगुली पकडते इसने बाह पकड़ ली। एक मुहावरा।

[८]

वीवाह'' टली – विवाह की झझट टल गई।

मेलयां मली – अनेक स्त्रियो से मेल कर उन्हें घर में रख लिया।

साझ मूर ''पणहारीया – सायकाल और सूर्योदय वेला में खोजने पर माता-पिता को उनका पुत्र पणिहारियों के घाट पर मिलता।

[९]

दीह वोले – दिन दहाडे। ताकतो – देखता। पागरण – प्रावरण(सं०), कपड़े, वस्त्र।

नहण नारी तणा – स्नान करती हुई स्त्रियो के।

कदम ञसन – झूठा कृष्ण कदम्ब की डाली पर चढ़ कर गोपीयो के वस्त्र रख लेता। चीर-हरण लीला से तात्पर्य है।

नीर मे कमंरे – पानी मे किनारे पर।

[१०]

वीठ – बट, कर, हिस्सा। तण हीज वरस – उसी वर्ष। माडीयो फंद – जाल रचा।

दाण मस – कर लेने के बहाने। महीयारिया – दूध-दही बेंचने वाली स्त्रियां।

साझ सूधा – सायकाल तक।

लपण एरा ' लहे – इसके लक्षण इसी में हैं, दूसरों में नहीं है।

[११]

आगणे – आगन मे। उलाहणा – उपालभ। दाषवे – कहते हैं। सचरा केथ – किधर (से) जावें। जोय – देख। चूनडी – एक प्रकार का रंगीन बधेज का वस्त्र जो राजस्थान, मध्यभारत तथा गुजरात मे विशेष प्रिय रहा है। गालरी – गली हुई, जीर्ण।

[१२]

नित्तरा – नित्य ही। मुना – मुझे। चोहटे-चाल – चौहटे में, प्रसिद्ध है। राचना – रचना, काम।

[१३]

ढांकीया न रहे – छिपाने पर भी नहीं छिपते। सभळावसो – सुनाओगे। जेम – जैसे। कोड पुरु...कोटडी – इसके पिता के किसी नगर, गाव, बस्ती या मकान का पता नहीं है। माह .मूठडी – एक मुट्ठी मुंह में भरी।

[१४]

कहण केवा घणा – कहने के लिये अनेक बाते हैं। काटवा किनरा – किनारा काटने के लिये, बचने के लिये। त्रीजो – तृतीय, तीसरा। हेक – एक। मोनु – मुझे, मुझको। तिको – उसका। सामलो आप – स्वय कृष्ण सांवला (श्याम) है। सको – सभी।

[१५]

भारज्या...भुग्रा – इसकी एक भुआ पाण्डु राजा की भार्या है, कुन्ती से तात्पर्य है। जूजुआ – भिन्न-भिन्न। वडोटी – वहू, वधूटी। वली – फिर। महेली ..मली – पाचो ने मिल कर एक महिला से विवाह किया।

[१६]

आणियो – लाया गया। एहिज – इसी। यु उचरे – इस प्रकार कहता है। मात .. नको – मातृपक्ष और पितृपक्ष कोई भी प्रतिष्ठित नहीं है। सुर . महे – सुर, असुर, नर, नाग सबको पूछ कर देख लीजिये। पाणी रहे – पानी रहता है। यजरो – ऐसा, इस तरह का (?)।

[१७]

बालपण...वधावीओ – यह बाल्यावस्था मे ओखल के बांधा गया। एहवो...आवियो – ऐसा सम्बन्धी क्या कभी अपने यहां आया है। कुमेरा – कुबेर के, यमलार्जुन के प्रति सकेत है।

[१८]

माणतु गारडी – आनन्द करने वाला विषवैद्य। (?)। चोक . चडी – गोकुल के चौक में सांप चढ कर बैठ गया। गरडधुज – कृष्ण, जिनकी ध्वजा पर गरुड का चिन्ह था। गारडो ..विषवैद्य – गर्भवास के जहर को उतारने की भी जड़ी श्रीकृष्ण के हाथ में है। वे ऐसे विषवैद्य हैं।

[१९]

जलनिध...थीये – समुद्र को अगस्त्य के अतिरिक्त अञ्जलि में कौन ले सकता है ? नाग नाथीयें – कृष्ण के बिना कौन काली नाग को नाथें (वश में करें) । एवडी – ऐसी। असन – भोजन । दीकरा ..दहन – जिस लड़के ने दो बार अग्नि-पान किया ।

[२०]

जाणपण – ज्ञान, जानकारी । जाणीयें – जानना चाहिये । मेले – छोड कर । आहीर – अहीर, आभीर, ईर । एहीजरा – इसी के । जम...जरा – यम, वृद्धावस्था, माया और ऐश्वर्य इसी के दासानुदास है ।

[२१]

कीत – कीर्तन, कीर्तिगान । नाथ ..त्रीलोकरे – जो त्रिलोकी का नाथ है—उसका नाथ कौन होगा ? लोवडी – वस्त्र (?) । सुरह चारे धणी – देवताओ के बहुत विचरण करती है, बहुत गाए चराता है (?) । तरे तणी – यह तो त्रिलोकी का श्रेष्ठ धनी, स्वामी है ।

[२२]

ठाकचा – ठाकुर के (?) । छत्रवासे ठगा – क्षत्रिय निवास में ही बैठे हो। ठगा – स्थित-स्थगित । पनही .पगा – बिना पादत्राणो, जूतियो के ही समस्त व्रजमण्डल का अवगाहन करता है । कोट पगला भरे – करोड़ों तीर्थ करने पर ही करोडो व्रज-सुन्दरियाँ उस भूमि पर पैर धरने योग्य होती हैं ।

[२३]

वात . वरे – उतनी ही बात करनी चाहिए जितनी श्रेष्ठ हो । वम.. वावरे – वश की वृद्धि और सहार किसी दूसरे ही के हाथ में है । वावरे – दूसरे । मानीये.. मले – पिता की बात मानिये जो आगे मिलने वाली (घटित होने वाली) है । देवदेवाधस् – देवाधि-देव से ।

[२४]

भँछक – भौचकी (?) । सपेप – देख कर । चारदह – चौदह । जमुना तणे – यमुना के । परमोरथी – परमार्थी, परोपकारी । थापियें – स्थापित किया । तण दीहथी – उस दिन से ।

[२५]

हालियो – चला । आण...आपण – अपने बछड़े नहीं ला सका । दुरसठ – छलपूर्ण कार्य (?) । ततकाल कीधा तदे – तब तत्काल किये । रोम भूलो नही – बलराम नहीं भूला (?) । धेन आरदे – रक्खी हुई गायें लाकर दी । ब्रह्मा द्वारा श्रीकृष्ण और ग्वालो की गायें हरने की ओर सकेत है ।

[२६]

वालीया – पलटे। उलट-पलट कर देखे। सोभीयो – देखा, शोध की। सखूश्रो – यह शब्द शङ्खासुर के लिए प्रयुक्त हुश्रा हैं। शङ्खासुर ब्रह्मा के पास से वेद चुरा कर समुद्र के गर्भ मे जा छिपा था। इसी को मारने के लिए विष्णु का मत्स्यावतार हुश्रा था। मरजादरो – मर्यादा का। नीत – नित्य। मोहीउ – मोहित हुश्रा। मोरली-नादरो – मुरलीनाद का।

[२७

मोरली...मूंकावीया – मुरली ने मुनियो का ध्यान छुडवा दिया। धेनूश्रा...धावीया – गायें श्रौर वछड़े श्रथवा गायो के बछड़े बिना दौड़े हुए स्थिर रह गये। पानरे – स्त्री के स्तन से निकला हुश्रा दूध।[1] ध्यानरा कोट ..धानरे – (?)।

[२८]

साध्रा मरे – साधना मे मरते हैं (?)। घराडे – घर में, कुल मे। कठ .कठला – जिसके गले में गुजे के कठले हैं।

[२६]

वावीयां...वीसरें – पुत्र ने मोती बोये जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता। धन्ना जाट की कथा की श्रोर सकेत है। पोला – पहिने हुए वस्त्र का छोर। वीजोये वार – दूसरी वार। जाचवा – मांगने के लिये। बभणी – ब्राह्मणी।

[३०]

पूरणावण लीश्रो – (?)। जगिन – यज्ञ। वापडा – बेचारे। श्रईजरे – इसी के।

[३१]

चाढीयो – चढाया। जगन पुरष – यज्ञ-पुरुष। श्रोलपे – पहिचान कर। जीमाडियो – भोजन कराया। जमरण-वेवार – भोजन-व्यवहार। जठे – जहाँ पर। सगपरण तणो – सम्बन्ध का। काय सभधो – क्या विचार सभव है (?)।

[३२]

जूठ कज – झूठ के लिये, झूठे कार्य के लिये। वाल . पुसो – (?)। पाडीयो पडी – वृषभ को मारा, जिसका भारी कलक लगा। कृष्ण द्वारा वृषभासुर को मारने से तात्पर्य है। छोतगरण – श्रछूत समझ कर। नेश्रडी – निकट।

[३३]

दैत – दैत्य। कोड – करोड़, प्यार। कुगुरण – श्रवगुण। वसन – व्यसन, वस्त्र।

---

[1] राजस्थानी साहित्य-सग्रह, भाग २, रा.प्रा.वि प्र जोधपुर, पृष्ठ १२।

[३४]

देव-पुड – देवपुर, स्वर्ग। नेडो – समीप। दरो – स्थान, निवास। परवरयो – प्रचारित हुआ। वाचसे – पढ़ेंगे। सुणसे – सुनेंगे। तजे . तिके – वे गर्भवास (आवागमन) के चक्कर और यमराज के त्रास से मुक्त हो जावेंगे।

[३५]

आण ऊतारीओ – (?)। एवडो . आहारीओ – कृष्ण ने ऐसे अन्न-पानी का आहार किया। जोई ने . त्रिपत – इसके पेट वाली युक्ति को देख कर (कहना पड़ता है कि यह) तुम्हारे पीसणे, पीसे हुए अन्न से कैसे तृप्त होगा ?

[३६]

थयो – हुआ। अनकोट सभारीयो – अन्नकूट सम्बन्धी घटना से तात्पर्य है। एवडो. ऊतारीओ – ऐसा इन्द्र का मान उतारा, मान-भजन किया। एकण...उद्धारीओ – एक हाथ से पर्वत को उठाया। उवारीओ – उद्धार किया, बचाया। केम विसारीओ – कैसे भुला दिया ?

[३७]

मावड – माता। दडा – स्थान, घर। क्रित – कार्य, कृत्य, (सं०)। छानु – गोपनीय (प्रच्छन्न स०)। दीकरा – लडके। वांछतो – चाहना करता। वाछ – चाहता है। पूरा दसम – पूरे दशमस्कंध (श्री मद्भागवतान्तर्गत) (?)। जती – जितनी।

[३८]

कूवडी – कुब्जा से तात्पर्य है। कीधी – की। ढले – अनुकूल। थाहरी – आपकी। वाघ इण रे पले – इसके पल्ले से बाधो अर्थात् इसके साथ विवाह करो। एवडा – ऐसे। लाज भर – लज्जावती। न द्यु – नहीं दू।

[३९]

भेदे नही – प्रभाव नहीं करते। वीलषा – बिना देखे, तथ्यहीन (?)। रावरा वेण – राजा के वचन। जूसण – कवच[1]। देणारो – देने का, देने योग्य। सूत – पुत्र, सूत्र, सूत का धागा। नथी – नहीं है। मेहल तो.. सथी – इस स्त्री (लक्ष्मी) को तो इसी ने सागर का मन्थन कर प्राप्त की।[2]

[४०]

हेकठा – एकत्रित। ते समे – उस समय। दाणव – दानव, राक्षस। हूता – हुए थे। सानीया पूत – हे! नीतिज्ञ, सयाने पुत्र, व्यग्य। इण हीज – इसी, कृष्ण के। रोल – विध्वंस

---

[1] कवि का तात्पर्य है कि बन्धु के तथ्यहीन बोल वेधन न करें इसलिये रुक्मिणी ने अपने पिता राव के वचनों का कवच बना लिया।

[2] रुक्मिणी को लक्ष्मी का अवतार माना गया है।

कर, जीत कर। आणी रमा – रमा (सीता से तात्पर्य है) लाई गई। रामण तणा – रावण के। कीध आंगण समा – आगन के समान सीधे कर दिये अथवा धूलि में मिला दिये।

[४१]

छेहलो – अन्तिम। पाथरा – पत्थर। छेहडे – अन्तिम किनारे पर। निरषजो – देखना। तीसरी बार – लक्ष्मी और सीता को जीतने के बाद तीसरी बार रुक्मिणी को जीतना। नीमडे – निवृत्त हो जावे, काम हो जावे। मेल गयो – छोड़ गया, भाग गया। मधुपुरी – मथुरा। वावरया – लौट आया (?)। तेग नह वावरी – तलवार का प्रयोग नहीं किया। वल – वापस।

[४२]

उठ मे – वहाँ से। आगली – आगे। खोहण – अक्षौहिणी सेना। कुसथली – द्वारका का नाम है। कुसस्थली नामक स्थान।[1] गोडियो – सपेरा (गारुडिक, स०)। नेट गयो – कठिनाई से बाजी समेट कर गया। कालजवना – कालयवन नामक असुर का।

[४३]

असुर्‌यो अतनें भगत छो – असुर अन्तत. भक्त था। अभीग्रहो – अनुग्रह किया, कृपा की। आणियो आग्रहो – उसके लिये आग्रह कर लाया गया। वयण पालीओ – मुचकंद ने वचन का पालन किया। जवन...जालीओ – मुचकद को कृष्ण समझ कर जगाया तो कालयवन जल गया।[2]

[४४]

मारीओ मचकद री – मुचकंद की नींद उडा कर कालयवन को मारा। कुवर कहे. . वाणीआ-ब्रुधकरी – कुवर कहता है कि हे पिता! उसने वणिक-बुद्धि (चतुराई) की। मरम इण वात रो – इस बात का मर्म (भेद)। न लहो मुने – मुनियों ने भी नहीं प्राप्त किया। लहो – लब्ध (स०)। ब्रह्मचो – ब्रह्मा का। पहिचाणियो वामनें – स्त्री (रुक्मिणी) ने अथवा ब्राह्मणों ने पहिचाना।

[४५]

असुर परजालीयो – राक्षस को प्रज्ज्वलित किया, जलाया। वण ओपधी – वनौषधी। अवनिचो – पृथ्वी का। ओचधी – सरलता से। अवनछो...न लगें – पृथ्वी पर तो हमारा भाग्य इनके समान नहीं लगता, हम इनके समकक्ष नहीं हैं। पगे नही.. उलगें – (?)।

---

[1] द्वारिका के पास कुश अधिक पाई जाती है।

कुशस्थल वृकस्थल माकन्दी वारणावतम्।
प्रयच्छ चतुरो ग्रामान् कञ्चिदेक तु पञ्चमम्॥

[2] मुचकद-कथा श्रीमद्भागवत के दशमस्कध उत्तरार्द्ध के ५१वे अध्याय मे वर्णित है।

[४६]

आहीरारे अने ..भारीओ – अहीरो के यहाँ इसने पेट भरा। सोभत्रणो – सुदर्शन, देखने अच्छा। कुवर...पावन करे – हे कुवर ! गगा जो कि तीनों लोको को पवित्र करती है। नरवुदा . नीसरे – नर्वदा इसी के चरणों से निकली है।

[४७]

सार.. सचरे – गगा खगोल और भूगोल के सार (समस्त वल) को लेकर चलती है। घरहरे – गर्जना करती है। जडधार – महादेव। उतमग – मस्तक। नदरी.. नूजणी – नव की गायो के पिछले पैरो में रस्सी बाधता हुआ। नूजणी – चञ्चल गायों का दूध निकालते समय उनके पिछले पेरो में बाधी जाने वाली रस्सी, जिससे वे स्थिर रहे। दोहतो – दूध निकालता हुआ। वीछले – वीच मे लेता हुआ। दोहणी – दूध निकालने का पात्र।

[४८]

वाघतो वोलावीयो – गायो को बाधता, छोडता और परिवार को बुलाता हुआ। आज .आवीओ – आज नवीन रूप धारण कर द्वारिका में आया है। रुकम...छोडीया – रुकम ! सत्य कहो कि (क्या इसने) आक्रमण कर छत्रपति (राजा) वलि जैसो को (नहीं) वाधा और छोडा।

[४९]

माडनें मडपं – मण्डप वना कर। ओछवा – उत्सवो के लिये। आगता – शीघ्रता करने वाले। कर सगो – सम्बन्धी (समधी) बनाओ। कोट व्रह्मंड वालो – कोटि-कोटि व्रह्मांडों का स्वामी। क्रता – कर्ता, ईश्वर। हेक – एक। दड – दृढ। मतो – मत। कीधो – किया। छतो – प्रकट किया।

[५०]

पात – पक्ति, वैठक। थारा पगा – आपके पेरों के लिये, आपके लिये। मूडण होस्ये – मुण्डन होगा। माह मोटा सगा – वड़े सम्बन्धियो में। अटपटो – अटपटी। वित - धन, पशुधन। वद – वोलो, विधि। एवडो – ऐसा, इस प्रकार। घेर घण – (पशुओं को) वहुत घेर कर। वेल ने – पक्ति के (?)। चो – चारों ओर से, का। छावडो – बछडा, लड़का।

[५१]

वेर – शत्रुता, समय। मता – नहीं। पहलाद – प्रह्लाद। ग्या – गया, आज्ञा। भाषलो – कहा हुआ। ओडवट – उद्‌भट (?)।

[५२]

विणसे नही – नहीं वनेगी। राजगुर – राजगुरु। दोहणी – दोषी (?)। वेग – शीघ्र ही, तुरन्त। चलवो – चलने के लिये। लषी – लिखा। तेण – उसने (स० तेन)। उतांमले –

उतावले, शीघ्रता। आपीयो – अर्पित किया, दिया। ताय – उसको, ताहि। आधले – अञ्जलि में। ढूंढाड़ी बोली में अञ्जलि को 'आदला' बोलते हैं और यहाँ 'द' 'ध' हो गया है।

[५३]

साचरे...मांमटा – शिशुपाल के सुभट मिल कर चले। अपसकुन एकटा – अपशकुन और अशुभ योग एकत्रित हुए। दशासूल...कीयो – प्रस्तुत अंश मे कवि ने ज्योतिष के अनुसार अपशुकन का वर्णन किया है। दिसासूल – दिक्शूल, वह समय जब किसी दिशा में जाना वर्जित हो। भद्रा – विशेष पक्ष की द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथियां जो किसी शुभ कार्य के लिये वर्जित मानी गई है। क्रमीयो काल – मुहूर्त्त टल गया। वितीपात – एक अशुभ योग।

[५४]

बुद्ध...रासरो – ज्योतिष के अनुसार चतुर्थ स्थान का बुद्ध, बारहवें स्थान का शनि, आठवें स्थान का मंगल, शुक्र का बृहस्पति का आश्रय लेना और राशि बदलना अशुभ योग माना जाता है।

[५५]

लगरा – लगर, बन्धन। अस – अश्व, घोड़ा। आगलें ले आवीया – आगे ले आये। टेगडें – कुत्ते ने। कान टपरावीया – कान फडफडाये। कालरी चोघडी – काल की चोघड़ी, अशुभ काल। पाघडे पाउ देता – पागडे में पैर देते हुए। पाघडी – पाग, पगडी, शिरोवस्त्र।

[५६]

पुर – सुर, स्वर (?)। थावर – शनिवार। रगता तिथ – रिक्ता तिथि, चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी तिथिया।[1] घराहू – घर से। जान मेले घणी – बडी बारात जुटा कर। जीमणी...जोगणी – अपशकुन होना।

[५७]

चीबरी – एक जानवर। छडो – एक जानवर। चिडा – चटक (सं०)। चमरूआ – चमार। पडहडे चावडो – चमडा खडहडाता है। मीनडी – बिल्ली। साम्हो – सामने। मडो – शव (?)। सोनार – स्वर्णकार। सूतार – सूत्रधार (स०), सुथार, खाती। सूवडो – सूम, कजूस।

[५८]

समली – चील। थआ – हुए। एकारसा – एक रस, एक समान। बाव – सर्प, बम्बी – बिल में रहने वाला। जूजुई – अलग। नीमार – निकल कर।

---

[1]. नन्दा-भद्रा-जया-रिक्ता-पूर्णाश्च तिथय: क्रमात्।
चारत्रय समावर्त्य तिथय. प्रतिपन्मुखा.॥

[५९]

ओलषीआ – पहिचाने । वावरण – आवरण, वस्त्र (?) । वेवसा – वेश्या (?) । करकसा – कर्कशा (स०) । राड – विधवा । हांडले कूकसा – मिट्टी के बर्तन मे भरे हुए कूकसे – कपासिए । जम्म रूपी जसो – यमराज जैसे रूप का । फालू – एक जानवर । फरे आडो ससो – खरगोश सामने फिरता है ।

[६०]

हरण डावा दनो – बाई ओर हरिण आया । हेक – एक । हणू – हनुमान, बन्दर । जीमणो – दांई ओर । कसू कहीयें घणू – अधिक क्या कहा जावे । रेलीयो – रेला, प्रवाह । माजनो – सफाई मार्जन (स०) (?) । मेलाण रो – मिलन का, मिलने का ।

[६१]

ऊपडे ..धाणरो – धान का (अनाज का) नित्य ही ऐसा खर्च होता है । पडवडे... पचाणरो – (?) । आवीओ – आया । घणे – बहुत । अहवानीए – अभिमान से । दत – दैत्य । वगतर सारीपे – वख्तर (?) जैसे ।

[६२]

त्रवके रोल – नक्कारे बजते हैं । त्रह कोड – तीन करोड । रोदा तणी – असुरों की । जवना तणो – यवनों का, असुर शब्द के अर्थ मे यवन शब्द का प्रयोग हुआ है । केवां – शत्रु । कुदनपुर कीओ – कुंदनपुर की सीमा मे आकर ठहरे । छोडता.. छीकीओ – घोड़े की रकाव से पैर निकालते समय सामने की छींक-अपशुकन हुआ ।

[६३]

उच्छरग – उत्सव । नयर – नगर । कुवर – राजकुमारी, रुक्मिणी । अणमुणी – अनमनी, उदास, खिन्नमना । जेहर – जहर, विष । भाईत – भाईचारा, भ्रातृत्व । भीर – भीड, कष्ट । विमासे से – उदास । इम – इस । उद्दिम – उद्यम । हर आसना – हरि (कृष्ण) की आशा (?) ।

[६४]

सेत पेहरण जुई – श्वेत वस्त्र पहिने हलाहल छोडता – जहर तैयार करते समय । वभ – ब्राह्मण । तिण – उसने । दूसरी आण वोलावीओ – दूसरे को बुलाया । अतरजामी तणो – अन्तर्यामी का, कृष्ण का । जाणीयें – मानो ।

[६५]

भणे – कहती है । रिष – ऋषि (स०), ब्राह्मण । भई – भाई, हुई । यादवाइद्रने जई । जाकर यादवेन्द्र को (श्रीकृष्ण को) कागज अर्पित करो । जाइस – जाऊंगा । वूघडे – प्रातः काल ही, सूर्योदय से पहले । एम ब्राह्मण जपे – ऐसा ब्राह्मण कहता है । फुरमावीयो – फरमाया हुआ, कहा हुआ । मूझ सू न थपे – मुझसे स्थित नहीं होगा अर्थात् मै प्राप्त सन्देश को तुरन्त ही पहुँचा दूंगा ।

[६६]

इण वातरी – इस बात की। तास आडो – उसके आगे। पुहचसा काल–कल पहुँचेंगे। केंह – कैसे। वयण – वचन। परमाणीओ – प्रमाणित, सही। जगतरा रावरो – ससार के स्वामी का, ईश्वर का।

[६७]

जामिनी – यामिनी (स०), रात्रि में। कुदनपुर···जिके – जो कुदनपुर नगर में सोया था। द्वार माहाराजरे···द्वारके – द्वारिका मे महाराज श्रीकृष्ण के द्वार पर जागा। जान–जान कर। वल – फिर। सोभी जुवे – शोभा देखता है। हेतरा .वैकुठ हुवे – प्रेम की युक्ति से संसार स्वर्ग हो जाता है।[1]

[६८]

भ्रात – हे भाई! गरजें – गर्जना करता है। कवण – कौन। छिलत – छल। कहो कवण – कहो कि नगर कौनसा है और नगर का राजा कौन है? गडीयडे समद – समुद्र गर्जना करता है। गगोमती – गोमती नदी।

[६९]

हरषीयो – हर्षित हुआ। जामण मरण कीध – जीवन और मृत्यु बनाये। जोषम-जुम्रो – आपत्ति को देखा। देवनै.. दीयो – ब्राह्मण देवता को देवाधिदेव श्रीकृष्ण ने दर्शन दिया। पेहल पूछीयो – पहिले प्रणाम कर कुशल पूछी।

[७०]

कदे मेलीया – कब छोड़ा? आपणे वास कत – अपना निवास कहा है? क्यो[2] हूओ आवणो – क्यो आना हुआ? पाट ताय भीमस – भीष्मक राज्य करता है। वसू – रहता हूँ। राज · कुवर – कुवरी (रुक्मिणी) आपकी ओर दृष्टि किये हुए है (?)।

[७१]

ब्रह्म · वले – ब्राह्मण! आप अकेले है अथवा अन्य कोई दूसरा भी साथ है? कहाडीयो ·· कागले – मौखिक वचन कहलाये हैं अथवा कागज में लिखा है? छोडीयो जतन – जिस छाप वद (पत्र) को यत्नपूर्वक रखा था उसको छोड़ा (दिया)। काट. .श्रीक्रसन – श्रीकृष्ण थेली को काट कर[3] (कागज निकाल कर) पढते हैं।

[७२]

करन·· करुणा-करण – कृपालु! जिस प्रकार (आपने) हाथी का उद्धार किया। गजेन्द्र – मोक्ष की ओर सङ्केत है। असरण-सरण – अशरण को शरण देने वाले। पाथ – नष्ट कर (?)। पण – भी, प्रण।

---

[1] हेतरा जुगतसु जगत वैकुठ हुवे—कवि की मौलिक और उत्तम उक्ति है।

[2] 'क्यो' प्रयोग मे उर्दू का प्रभाव लक्षित होता है।

[3] मध्यकाल मे महत्त्वपूर्ण पत्र को मुहरबद कपड़े की थैली मे बन्द कर के भेजा जाता था।

[७३]

उवाराया – उवारे, उद्धार किया। लापागृह – लाक्षागृह, लाख का घर। केमवा – केशव, कृष्ण। कृष्ण द्वारा लाक्षागृह मे से जलते हुए पाडवो के उद्धार की ओर सकेत है। उतरा – उत्तरा (अभिमन्यु की पत्नी)। ग्रभ – गर्भ। अवलोकणी – अवलोकनीय।[1] राषि इम राषि इम – पाहिमा त्राहिमाम्। इम ऊचरे – ऐसा कहते हैं।

[७४]

वेद पारणी – जिसके चरित्र का वेद और पुनप स्पर्श नहीं कर सकते और पार नहीं प्राप्त कर सकते।

[७५]

दीकरो – पुत्र। माझिया – मुखिया, मध्य। वेर वण वालीयें – शत्रुता का बिना बदला लिए। नेट – नेष्ट, जघन्य।

[७६]

सुमर – ससुर, देव, श्वसुर (दक्ष प्रजापति)। वह्यो [वर्‌यो] वरण किया, चलाया। साभली – सुनी। माहेसना – महेश को। जनम दूजे मली – दूसरे जन्म में मिली। दुणे [पुणे ख] – पुनः, कहा। सेहट – सकेत (?)।

[७७]

निमपरो – निमिष का। नथी – नहीं। आण रथ सारथी – हे सारथी! रथ ला। सारही – सारथी। ततकाल – तत्काल। वही – चल कर।

[७८]

आवीयो नयर – नगर आया। ऋष – ऋषि, ब्राह्मण। वेहला – वेला (स०), समय, यहां शीघ्रता से तात्पर्य है। वहें – चल कर। दुजराज – द्विजराज, ब्राह्मण। गो – गया। काज वधांमणी – बधाई देने के लिए। राज…रहण – कुंवरी के रहने के भवन में। जित – जहां।

[७९]

सोज – वही। वाट जोती सीया – श्रीया–रुक्मिणी (अथवा पूर्व जन्म की सीता) जिसकी राह देखती थी। सुव पष – शुद्ध पक्ष, अच्छे दिन। अमी – अमृत। ऋष तणे – ऋषि की, ब्राह्मण की। कवण निध – कौनसी निधि।

[८०]

ओरीया मूठ भर – मुट्ठी भर डाले। माह मुष आपरा – अपने मुंह मे। तंदलां – तदुल। सदामरा – सुदामा के। हर्ष आउ जुवो – हर्ष को आ कर देखो। हरन्पतें…प्रेमल हुवो – उष्ण (हिरण्यरेता = अग्नि) वायु चन्दन के परिमल से युक्त हो गई।[2]

---

[1] उत्तरा के गर्भ में परीक्षित की रक्षा की ओर सकेत है।

[2] हुताशनश्चन्दनपङ्कशीतल—भोजप्रबन्ध।

[८१]

आव – आ कर। भणहरो – बोलो (?)। दुज हेक आवियो – एक ब्राह्मण आया। दुरतरी – दूर का, परदेशी। पत्री – पत्रिका, पत्र।

[८२]

जोवीओ – देखा। वाछ – पढ कर (वाचन सं०)। पण जणावीओ – किन्तु कह कर प्रकट नहीं किया। आपरा – अक्षरों को। गेहलता – समझते हुए, ग्रहण करते हुए। रथ आणावीओ – रथ मगवाया। ओधारीया – धारण किये। साधारीया – रवाना हुए, सिधारे।

[८३]

नालहू – प्रकाश से, मार्ग से। दक्षिण धरे – दक्षिण की धरती में। काहका . करें – किसको भाग्यशाली और किसको अभागा करेंगे? पवन वेग – पवन जैसे वेग वाले [घोड़े]। नें – और। पाणी-पथा पपरे – पानी के मार्ग में चलने वाले घोड़े, घोडो की एक जाति। साहणी – सईस। मन वेग – मन के वेग से दौडने वाले। सज – सज्जा, सजावट।

[८४]

सूरमे सूर – शूरवीरों में [श्रेष्ठ] शूर। साव परां – अच्छे और खरे अथवा श्रेष्ठ शाखा के। तेडीया – बुलाए, आमन्त्रित किए। राम – बलराम। परतीतरा – विश्वास के। जरद जोसण – जिरह बख्तर। हाथल – हस्तरक्षिका (?)। जोपती – सुशोभित होती। रागमे – राग, जघा। लोहमी मोजडी – लोह की पादरक्षिका। घुटने तक के भाग की रक्षा करने वाले जूते को 'मोजा' कहते हैं। 'मोजडी' शब्द इसी 'मोजा' से बना है। 'मोजा' का आविष्कार 'हारूंअलरशीद' नामक अरब के शाह ने किया था।

[८५]

भूसण – जुसण्या(ख.) सुने गए, जूझारू (?)। जमात नव नाथरी – ९ नाथों का समूह। नव नाथों के नाम निम्नलिखित हैं—१ मत्स्येंद्रनाथ, २ गाहनिनाथ, ३ ज्वालेंद्रनाथ (जालधरनाथ), ४ करणिपानाथ (कानिया), ५ नागनाथ, ६ चर्पटनाथ (चर्पटी), ७ रेवानाथ, ८ भर्तृनाथ (भरथरी), ९ गोपीचन्द्रनाथ।—योगी सम्प्रदायाविष्कृति, पृ० ११-१४।

सुधाकरचन्द्रिका के अनुसार नवनाथ इस प्रकार हैं —

१ एकनाथ, २ आदिनाथ, ३ मत्स्येंद्रनाथ, ४ उदयनाथ, ५ दण्डनाथ, ६ सत्यनाथ, ७ सतोषनाथ, ८ कूर्मनाथ, ९ जालंधरनाथ – पृ० २४१।

नेपाल-कैटलाग के अनुसार नवनाथों के नाम भिन्न हैं—

१ प्रकाश, २ विमर्श, ३ आनंद, ४ ज्ञान, ५ सत्य, ६ पूर्ण, ७ स्वभा, ८ प्रतिभा, ९ सुभग।—भाग २, पृ० १४९।

महादेव आदिनाथ और गोरखनाथ दसवें नाथ माने जाते हैं।[1]

छापीया – चापीया (ग) अगो से लगाये हुए, छाप वाले। पाग – तलवार। छत्रीस – छत्रधारी। 'छत्तीस आवध' से तात्पर्य, ३६ प्रकार के शस्त्रों से है जिनके नाम इस प्रकार है— चक्र, धनु, वज्र, खड्ग, तुरिका, तोमर, कुन्त, त्रिशूल, शक्ति, परशु, मक्षिका, भल्लि, भिण्डिपाल, मुष्टि, लुण्ठि, शङ्कु, पाश, पट्टिश, यष्टि, कणय, कम्पन, हल, मुशल, गुलिका, कर्तरी, करपत्र, तरवार, कुद्दाल, कुस्कोट, कोफणि, डाह, डथ्यूस, मुद्गर, गदा, घन और करवालिका। श्रीद्याश्रय महाकाव्य, पृ २२, वस्तुरत्नकोश, डॉ प्रियवाला शाह, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर – पृ ७८।

सुधा छरी – छुरी (एक शस्त्र), अथवा छड़ी सहित। लाय लगाण – लगाम, वाग लगा कर आग लगाने वाले, तेज। पलाण सपष्परी – जीन और पाखर सहित। ताणिया तग – तग ताने गए। उतंग – ऊंचे। तुरी – घोडे।

[८६]

वेगमे – शीघ्रता मे। पोहणी – अक्षोहिणी सेना। हेक – एक। वीणारिया – विनाशक, सहारक। पापरा घाल – पाखर डाल कर। लार पधारीया – साथ गए। कुत – भाले। रागां – ध्वजाएँ, राग। समा – बराबर। रोपीया – खड़े किए। कधली – पुष्ट कधे वाले (स्कधल, स)। ढलकती मेली पेंग – तलवारें लटकती हुई रक्खी, लटकाई। वागा ढली – लगामे लगाई, लगामें ढीली की अर्थात् घोडो को तेज चलाया। घुडसवारो का चित्रण विशेष दृष्टव्य है।

[८७]

आपडो – अपना, आत्मीय (?)। आपै – कहता है। कथ आहीरीया सारषो – अहीरों के स्वामी के समान। पण – प्रतिज्ञा, भी। तारव्या – तैराया। माट सेढा तणी – (?)। धामण वृप – चितकबरे बैल (?)। अतरीप – अन्तरिक्ष, आकाश। ओपाधणी – ओखा-मण्डल के स्वामी, श्रीकृष्ण। ओखा सौराष्ट्र में एक बन्दरगाह है।

[८८]

वेलीये – रक्षक ने। वहली – बैल गाड़ी को। रथा – योद्धा, रथी (स०)। वेडीया – पैठाया। पाग वाहे – तलवार चलाने वाले ने। पेडीया – चलाये। वेढीमण – शूरवीर। तेजीया ''धोटीया – तेजी से दौड़े। सोरा तण – शूरवीरो के।

[८९]

जाण'' गिर – पहाड के समान (वियोग का) अन्त जान कर (?)। निमप न रहे जुआ – क्षण भर के लिये अलग नहीं रहते। हलधरे ' हुआ – बलदेव और कृष्ण आ कर एकत्रित हुए। अणपीयो – क्रोधित (?)। आकरो ''ओलाहणो – बलदेव ने बडा उपालभ दिया।

---

[1] नाथ-सम्प्रदाय, प हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, पृ० २४-२५।

[६०]

घेंग – तलवार, घोड़ा। पेंने – तेज। घणो – बहुत। पेह भीने – धूलि से भरे हुए। पत्रे – क्षत्रिय (?)। नंदरो नापत्रे – नंद का पुत्र श्रीकृष्ण नक्षत्रो में चांद की भांति सुशोभित हुआ। श्री कृमन ' साभली – श्रीकृष्ण और बलदेव को आया हुआ सुन कर। राव भीमंक रली – राव भीष्मक को मानो हर्ष प्राप्त हुआ, जाण पूगी रली – इच्छित बरात पहुंच गई।

[६१]

विसनु – विष्णु, कृष्ण वरतीया – व्यवहृत हुआ, गाया गया। रुकमीया ' थीया– एक रुक्मैया के बिना सभी प्रसन्न हुए। दीनवधू ' दरसावीया – दीनबन्धु श्रीकृष्ण की सेना दिखलाई दी, सेना के दर्शन हुए। चोसरी प्रज – चौ सरी, चार-चार की पंक्ति में अथवा फूल-मालाए लिये हुए प्रजा। मेडे चडे चाहीया – मेडी (ऊपर के कक्ष) में चढ़ने की इच्छुक हुई।

[६२]

मन ' मन – जिसके मन में जैसी मन की कल्पना थी। दुरस त्या तेहडा आपीया – उनको वैसे दर्शन दिये। दक्षिण अग – अनुकूल, श्री कृष्ण ने। अग दहन – कामदेव जैसे सुन्दर श्रीकृष्ण ने (?)। जोसती – स्त्रियां, योषितः (सं०)। सकलची – सब की। जनार्जन – श्रीकृष्ण। मोरीया मन – मन प्रफुल्लित हुए। कंधु – कैधो, मानो। वसते अबवन – वसन्त में आम्रवन जैसे मञ्जरी-मण्डित हो जाता है।

[६३]

परम – स्पर्श (स०), यहां प्रत्यक्ष दर्शन मे तात्पर्य है। साधु – सज्जन। पेष – देख कर। त्रुर – तीन। भुवणपत – भवनपति, श्रीकृष्ण। विकसीया 'सरदरत – मुह शरद ऋतु के कमलो की भांति प्रफुल्लित हो गये।[1] अरपीयें – अर्पित किया। उदक सु – जल से, अर्घ्य के रूप में। परणज्यो रुपमणी किसन वर – दूल्हा श्रीकृष्ण रुक्मिणी से विवाह करे। दळ पणो – पुन्य-दल के प्रताप से।

[६४]

जानरे – वरात के। कान प्रत – श्रीकृष्ण के प्रति, श्रीकृष्ण के विषय मे। साभल्यो जू जुवो – जिसने सुना उसने देखा। हेक तो मोटो हुवो – एक तो लग्न में वडा विघ्न हुआ, सुनने और देखने वाले ने ऐसा कहा। गामरा गूढ – गाव के मुखिया। सपेष – देख कर। डेरे – निवास-स्थान। थाहरे थाहरे – स्थान-स्थान पर। जाणवाणा थया – जानकार हो गये।

---

[1] गोस्वामी तुलसीदास ने भी सतो के सरल मन को कमलो की उपमा दी है—

उदित उदयगिरि मच पर, रघुबर बाल पतग।
विकसे सत-सरोज-मन, हरषे लोचन-भृङ्ग॥

—२५४, वालकाण्ड, रामचरित मानस।

[९५]

आवीया – आये । अण कोकीया – बिना बुलाये, बिना निमन्त्रण के । सुहड''' भैभीतया – शिशुपाल के सुभट और राजा डर गये । ताहरी – तुम्हारी । सामला – कृष्ण । ओलपे असुण पण – पिशुन (शत्रु) भी पहिचानते हैं । तजे न न आमला – मलीनता (वैर) नहीं छोड़ते ।

[९६]

पाग धूणे पत्री – क्षत्रिय तलवार हिलाते हैं । कुत – भाला । कोजें कीयें – तैयार किया (?) । मूछ ताणे मुहें – मुह की मूछें तानते है, मूछो पर बल देते है । होड – प्रतिस्पर्द्धा । कूदें हीयें – हृदय उछलते हैं, यहां उछलते हैं । गाजते ''गया – राव वाद्य बजवाते हुए स्वागत में सामने गये । अगमो ''आलंगया – अग से अग लगा कर श्रीकृष्ण का आलिंगन किया (?) ।

[९७]

सवेन' 'समी – अच्छे वचनों से सताप और पाप का शमन हो गया । आठ'''अमी – अष्टाङ्ग शरीर के आठों अगो पर मानो अमृत ढल गया । महमहणग' उपेलीया – मधु-सूदन (कृष्ण) और बलदेव के भेजे हुए उद्यमी (?) व्यक्तियो ने मार्ग के पगपावडे के वस्त्र और पाट उठाये ।

[९८]

आव आगणे – भीष्मक को ऐसा प्रतीत हुआ मानो वह अपने आगन में कल्पवृक्ष की छाया तले आ गया हो । केहल ' कणे – कस्तूरी के केल्हू से और माणिक्य-कणो से निर्मित महल । थभ'''पण – प्रवाल (मूगे) के स्तभ और माल्यिा (ऊपर के कक्ष) सात खण्डों के थे । देव'''कालीदमण – कालिय नाग का दमन करने वाले देव श्रीकृष्ण ने वहा डेरा दिया (ठहरे) ।

[९९]

किसन '' करे – राजा भीष्मक कृष्ण-बलदेव की भक्ति करता है । पापलि – प्रक्षालन कर । घर'' वावरे – घरा, वर्ण और मुख के लिये व्यवहृत किया । लगरू – लगर, समूह । कुटब ' कीयो – प्रथम अपने सारे कुटुम्ब को पवित्र किया ।

[१००]

देत''''मने – कन्यादान के मिस अपने हृदय का सारा हेत देते हैं, ऐसा श्रीकृष्ण मन में समझ गये । चोकस – सावधानी पूर्वक, पूर्ण रूप में । काल ''कसी – काल न जाने किस करवट बैठे ? अथवा कल की बात कौन जानता है कि कैसा परिणाम हो ?

[१०१]

दायजो .दीजीयें – आशीर्वाद के मिस दहेज आज ही देना चाहिये । लाग – लागत, भेंट । दापो – विवाह आदि अवसर का दान । घूपणो – धूपदानी, धूपारणा । आण – ला कर । उर वहा ''आसीसरी – प्रथम आशीष देने के लिये उनके हृदय में उमग मची ।

[१०२]

जरा – जन, भक्त, सेवक। गार मृग-मादलो – कस्तूरी गला कर। छीर – दूध, क्षीर (सं०)। ठाढा – ठंडा। वर-मालीयादि वसर्द – श्रेष्ठ माला आदि राजा की वस्तुए।

[१०३]

आज' 'उभरे – आज लगन का दिन देख कर प्रिय प्रसन्न होते हैं। घरण जपे – स्त्रियां कहती है, जल्पन्ति सं०। कटक'''घुरे – दोनों (श्रीकृष्ण और शिशुपाल की) सेनाओं में नक्कारे बजते हैं। किम हुसे – कैसे होगे ? जरद पाखर जडे – जिरह-बख्तर धारण करते हैं। कन्या हेक'''कडे – एक कन्या है और दो वर सवार होकर तैयार है।

[१०४]

कामरण – जादू, विशेष प्रयत्न। पसा – तर्क (स्पशा सं०)। केरण – किस। हरि तरणो'''हुसे – अन्त में हरि का जाना हुआ ही होगा। देवरी'' हूओ – देव की यात्रा के लिये माता-पिता ने आज्ञा दी। हेरती वाट तिथ – जिस तिथि की राह वह (रुक्मिणी) देखती थी। माग मुगतो हूओ – मार्ग मुक्त हुआ।

[१०५]

अंबिका'''आदरे – रुक्मिणी अम्बिका-दर्शन के लिये जाने का निश्चय करती है। कुवर'''करे – कुंवर शिशुपाल को जान कर डरती है। मनें ''मतें – शिशुपाल और जरासिंध मन में निश्चय कर बैठे हैं। जालवरण – ग्रहण (?)। अंबिका जोहरते – अंबिका के जुहार के समय।

[१०६]

पोहरण – अक्षोहिणी सेना। आवसे नही – नहीं आवेगी। चोगान – युद्धभूमि। अणी – सेना (अनीक सं०)। जपे – कहता है। घात – आक्रमण। सेंघणी – प्रबल। रापीयें... रुषमणी – रुक्मिणी की रत्न के समान रक्षा करनी चाहिये।

[१०७]

पाटवी कंवर – युवराज। वरण सेंहर – उस नगर का। सहु पारको – सबसे (अथवा निश्चय ही) बढ कर। मूंसलेह – मूसल। मारको – मारने वाला योद्धा। ओलख्यो पालख्यो – जाना-पहिचाना। कुवको – दुर्वचन बोलने वाला, क्रोधपूर्ण बोलने वाला। कोमता – दुर्मति, विवेक हीन। धीरता को मतो – धीरता कोई मत रक्खो। अवस देसी धको – अवश्य धक्का देगा, जोरदार आक्रमण करेगा।

[१०८]

सांहणी – सईस, घोड़ों के रक्षक। आंरण पलारण – जीन ला कर। सह – सभी। वांकडा भडा – बांके वीर। कज'''वलह – तेज घोडो की सवारी के लिये उतावले हो रहे हैं। सावता – शूरवीर, कुलीन। पेंहरो सलह – बख्तर पहिनो। कुंवर घरे – कुवर के घर पर। अजु – अभी। हुई त्रहकह – युद्ध वाद्य बजे।

[१०९]

साकतें सावप्परां – जिन्होने अपनी शक्ति से श्रेष्ठ वीरो को आलोड़ित किया। पूठ – पीठ, पीछे। कोडी धजा – करोड़ो ध्वजाए। घातजें पष्परा – भूलें डालते है। नागारा वाधिया – नक्कारे बाजे। आमो साभा – आमने-सामने। नाडीया – बाधे (?)। ऊपरें... अवाडीया – हाथियो पर होदे डाले गये (सिधुर स०–हाथी)।

[११०]

रूपत – रूप वाले। सरूप लीधे – स्वरूप धारण कर। जाए – मानो। राजिंद्र – राजा। जोगिंद्र – शिवस्वरूप। जोपती · जड़े – अच्छी दीखने वाली और अच्छी लगने वाली जीनसाल (कवच) पहिनते हैं। भालड़े – भाल, भाला। नेत – बन्धन। भडे – योद्धा।

[१११]

परठ. पजर – ढाल, तलवार, भाला और खजर धारण कर। साग – एक प्रकार का भाला। सीगण – धनुष। जमदढ – कटार। वाजीआ – बजे, चले। तरकसे – तरकस में।

[११२]

पटतीम – छत्तीस वश के क्षत्रिय, जिनके नाम इस प्रकार है—१ सूर्यवशी, २ चंद्र-वशी, ३ यादव, ४ कछवाहा, ५ परमार, ६ मदावर (तवर), ७ चहुआण, ८ चालुक्य (सोलकी), ९ छद (रादेल), १० शिलार, ११ आभियर, १२ दोयणत (दाहिमा), १३ मकवाणा (झाला), १४ गोहिल, १५ गहिलोत (शीशोदिया), १६ चापोत्कट (चावडा), १७ परिहार, १८ राठोड़, १९ देवड़ा, २० टॉक, २१ सिधव, २२ अनिध, २३ पोतिक, २४ प्रतिहार, २५ दधिभट, २६ कार्टपाल, २७ कोटपाल, २८ हुन, २९ हरितक, ३० गोर (गौड), ३१ कमाड (जेठवा), ३२ भट (जाट), ३३ ध्यान पालक, ३४ निकुम्भ, ३५ राजपाल, और ३६ कालवर।[1] नामीयो कध – मस्तक झुकाया। आगल – आगे, सामने। मुणे – बोलता है, एक जात वण – एक ही जाति और वर्ण। माहरी – मेरी। सावता – पूर्ण। पडो सग सुदरी – सुन्दरी (रुक्मणी) के साथ चलो।

[११३]

आपीयो – कहा (अल्पात् सं०)। तोचा – कम (तुच्छ स) जदप – यद्यपि। मेलाण – मेल, मिलन। जुडे – एकत्रित हो। सरग डाडा – स्वर्ग-दड, सीधी। जही – जैसी। वांट – मार्ग, बाट कर। सारिपो – समान। रापीयो.. रुपो – रुक्मिणी की ओर आधा-आधा रखा।

---

[1] क रासमाला, फार्बस लिखित, अनुवादक और सम्पादक श्रीयुत् गोपालनारायण बहुरा, एम.ए.. प्रथम भाग, पूर्वार्द्ध, मगल प्रकाशन, जयपुर पृ. १९०-१९१। ख एनल्स एण्ड एण्टीक्विटीज आफ राजस्थान, कर्नल जेम्स टॉड, भाग १, अ ६। ग. हिस्ट्री आफ मेडाइ-वल हिन्दु इडिया, मी वी वैद्य, दी ओरिएन्टल बुक एजेन्सी, पूना १९२४, पृ. २३।

[११४]

भीष – भीष्मक (?) भागा कीया – विभाग, भाग किये। करण कथ – कथनीय कार्य के लिये। भारती – योद्धा। सारषा – समान। अथरता – अस्थिर, चञ्चल, विशिष्ट सैनिक। सिणगार दह च्यार दो – सोलह शृंगार। आवरी – धारण किये। इछाहसो – इच्छा से, उत्साह से। कोह – प्रेम। आयत करी – अधीन की।

[११५]

भेटवा – भेंट करने हेतु। देवल दिस सचरी – मन्दिर की ओर चली। पाषती – पार्श्व में, पास में। परवरी – प्रवृत्त हुई, चली। मेघमाला जही – बादलो जैसी। सोमरथ – सामर्थ्य। पीजरे – पीला, पीत वर्ण। अबरे – आकाश में। गरदरी – गर्द की, धूल की। पालषी – पालकी, म्याना।

[११६]

पापथी – पास में (पार्श्व स)। हालियो हेम दल – घोडो का दल चला। मयक... तारा-मडल – मानो चन्द्रमा तारा-मण्डल के साथ मिल कर चला हो। आव .सकेतरा – सभी सकेत के काम के लिये आ खड़े हुए। देहली ओलगी – डेळी (प्रवेश द्वार का एक भाग) को उलागी (पार की)। भीतरे – भीतर (अभ्यतर स०) देहरे – मन्दिर (देवगृह स०)।

[११७]

वीटय'' वले – चारो ओर से चक्रवेष द्वारा घेर लिया। सिसपाल वाले दले – शिशुपाल की सेना ने। गैदला – हाथी-दल (गयद-दल स०)। हैदला – घोडो का दल (हय-दल स०)। गूथणी – जमावट, ग्रन्थन, व्यूह। चालतो' चुणी – चारो ओर मानो चलायमान चहार-दीवारी बनाई।

[११८]

परसती – स्पर्श करती, पूजती। वरमालती – वरमाला से सुशोभित (?)। मोह बाण समा – मोह-बाण के समान। द्रोह – सेना को, द्रोहियो को (?)। मुरछावीया – मूर्छित हो गये। गत भागी भडा – वीरो की गति नष्ट हो गई। ग्रबीया – गर्व किया।

[११९]

भेटतां – भेंट करते हुए। हुओ मन-भावीयो – मन चाहा हुआ। अतरीष पेडि – अन्तरिक्ष को पार कर। रथ महमहण आवीयो – मधुसूदन (कृष्ण) का रथ आया। दुलहणी' देपीयो – दुल्हिन को पकड कर बैठाते हुए देखा गया। एवडो'' आलेपीयो – ऐसी (भारी) सेना थी किन्तु चित्रलिखित सी (स्थिर) रही।

[१२०]

लछण – लक्षण। छेतरण – छलना, रणक्षेत्र। हालीयो'''हरण – युक्तिपूर्वक रुक्मिणि का हरण कर चला। सषधर – शखधारी कृष्ण। पूरीयो सष से नाद – शख से नाद किया।

भयो ''भुवण – उस समय तीनों लोको मे (स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल में) तीन वार जय-जय-कार हुआ ।

[१२१]

दइत – दैत्य । वर कीधो नवे – नया वैर किया । यादवा इद्र – यादवो के इन्द्र, कृष्ण । भलो थीयो यादवे – यादवो से जा मिला (भेलो-मिलन) । वार भाभी – समय व्यतीत हो गया (?) । घणी – वहुत । तेथ वर वालीया – वहां वैर लेने के लिये । सूरमें ' साभलीया – वहा युद्ध के लिये शूरवीरों ने हाथी सम्हाले ।

[१२२]

तार – तैयार होकर, तब । चाल्या तुरी – घोडे चले, घोडों को चलाया । काहर्के – कोई । जूपीआ – जोते, जुट गये । सार – शस्त्र । फेरा करी – फिरा कर । जीनसाला – जीनसाल, घोडो का कवच । सावुधे जोवुधे – जैसा समभ मे आया वैसे । जूमणा – कवच (सहित) । साचरी – चले, सञ्चरण किया ।

[१२३]

नाल गोला तणो – तोपो और वन्दूको का । साज कीधो – साज किया । नरे – लोगों ने । दारु – वारूद ।[1] सिधुरे – सिधु अथवा सिधुर राग, वीर रस की राग । नेजा – भाला । पूठ – पीछे । घवे करी – एक शस्त्र । फरहरे ''फरहरी – रथ की ध्वजाएँ आकाश में फहरती हैं ।

[१२४]

घरहरे – ध्वनि करती है । घोर वाजा घुरे – वाद्य जोर से वजते हैं । पैंदला'' पसरे – पैंदलो, घोडो और हाथियों के वल चले, प्रसारित हुए । आपरा'' हुआ – अपनी सेना के आगे हुए । नाप – डाल कर । तोपची'''कीया – तोप चलाने वालों ने तोपें चलाईं ।

[१२५]

वाजूए – वाजू में, दोनो हाथो की ओर । जोध वाणावली – धनुर्धारी योद्धाओ को । हगरा – प्रत्यञ्चा (?) । ताण – तान कर । वध सूधा पडे – कमरवध सहित चले । वे ववधा – दोनों भाई । सूर'' उचीश्रवा – सूर्य अपने घोड़े की लगाम खींच कर रुक गया[2] ।

[१२६]

थाट ' वहे – सेनाओं ने भिड कर तलवारें चलाईं । वाहर थाट हुवै – युद्ध होता है । थाट – मार्ग । जोला वहे – (?) । पालतू'''पोकारपण – युद्ध-नाद हुआ और पैदल सैनिक (पदाति स०) अथवा सेवक आया (और शिशुपाल से कहा) । कथला – स्वामी, कंथ । गाका करण – युद्ध करने वाले, युद्ध करने हेतु ।

---

[1] वारूद का प्रचलन भारतवर्ष में वस्तुत मुस्लिम-शासनकाल में हुआ है ।

[2] उच्चैश्रवा, वास्तव मे इन्द्र के घोडे का नाम है ।

[१२७]

रायगुर – राज्यगुरु। सेल भुंज रोलीये – भाले को, हाथो से भुजाओ से (?) घुमाया। घडहड्यो – ध्वनि की। जाणकें'''ढोलीयें – मानो अग्नि मे घी डाला गया हो। भोंह मूंछा भडे – भोहो तक मूछे तनी हुई थी। रोड – युद्ध के नगाड़े। वाजत्र रडे – चारो ओर ध्वनि प्रसारित करने वाले सुन्दर वाद्य-यत्र बजते थे। चतुरग सेना – हाथी, घोड़ो, रथ और पदाति (पैदल) युक्त सेना।

[१२८]

ऊपडी वाग – लगामें उठीं। रज अंबरे ऊपडी – आकाश मे धूल उठी। दाट वाराह डिग – वाराह की दाढ डिग गई। कोम कध कडकडी – कच्छप (कूर्म सं०) के कधे कडकडाने लगे।[1] दला सिसपालरां तणो – शिशुपाल के सैन्य-दलों का। दोडारव वण – दौड, आक्रमण। पेहण राजे रही – धूलि सुशोभित हो रही थी। सीस – मस्तक। भाला षवण – भाले सहन करने (क्षमण सं०) वालो के।

[१२९]

जाक्वा – झाक कर (?)। चाकवे – तृप्त, चक्रवर्ती। पीलवाणा जुआ-फीलवान (हाथीवान) जुड गये। पाहाड पाषे – पख वाले पहाड। घमीयो – बजा। घर कहर – पृथ्वी चलायमान हुई। पाअल षपी – पैदल (?) रोष से भर गये (?)। दीह'' सारषी – दिन भी धूलियुक्त हो कर रात जैसा हो गया (शर्वरी स०)।

[१३०]

पूर – पूर्ण, पूरी। रयणी चिया – रात की चिन्ता हो गई। गेहणी – ग्रहिणी, पकड। भरथार – पति (सं० भर्तृ)। दूरें गिया – दूर गये। मेगा पुड ऊपडी – कामदेव (स० मदन) का समय आया। मली – मिली। आपरां अनली – अनलपक्षी अपने बच्चो को नहीं पहिचानता। अनल पक्षी आकाश में उड़ते हुए अडे देते है और पृथ्वी पर गिरने से पूर्व ही उनमें से बच्चे निकल कर उड़ने लगते है।

[१३१]

मैगले – हाथी। चंचले – चञ्चल, घोडे। मेण वेह – मद बहता है। तेमथी – इस कारण, उसमें से। सूझे – दिखाई दे। नकु – नहीं। सूरने – सूर्य को, शूरवीर को। लावीओ – लाये। सूरमे – शूरमा, वीर। सेड – शस्त्र, (शल्य स०) (?)। सूधी – तक, सीधी। लुली – झक कर, झुकी। कुदीया – कूदे। टार छोटार – बड़े छोटे (?)। कली – कलह, युद्ध, (कलि स०)।

[१३२]

माकडा – (मर्कट सं०) वन्दर। डाण ओडाण – छलाग, उडान। मरू – भूमि, क्षेत्र (?) पेडीया – चलाने पर। मारगें ना वहे – मार्ग में नहीं चलते। षीगरू – घोड़े। वहें ''

---

[1] पृथ्वी वाराह और कच्छप अवतार पर आधारित मानी गई है।

वाहरे – शिशुपाल के सैनिक दुल्हिन के पीछे होने युद्ध में चले। नापता – डालते हुए, करते हुए। वाह – वाहवाही। झोका लीया – झोके लिये (?)। नाहरे – सिंह की भांति (?)।

[१३३]

जानमा – वरात मे, वरयात्रा मे, नहीं जाना। आपरी जात – अपनी जाति। जगातीया – सम्बन्धी। घरण'' घातीया – बडो की गृहिणी के तुमने हाथ लगाया। ढके – ढँके हुए, भरे हुए। महीयारीया – ग्वालिनो के। माटला ढोलीया – मिट्टी के वर्तन उंढेले। दीठा नही – नहीं देखे। कूत – भाले। ककोलीया – (?)।

[१३४]

पालरो – वन्ध के, पाल के। परी – वास्तव में। एह – यह। पूरे पषे – पूर्ण पक्ष में, सभी दिन, पूर्ण रूपेण। रासभा – रासभ, गधे। तणा – के। गणतो – गिनता। वाळता – मरोड़ते। वेदसी – (?)। नदरा – नद के पुत्र, कृष्ण। घोवटा – लडके।

[१३५]

वरवर – वरावर, वार-वार। ज्यागरा वोकडा – यज्ञ के वकरे। पामसे'' परलोकडा – आज हरि के हाथों द्वारा परलोक (मृत्यु) प्राप्त करेंगे। वहे – चलते है। जोघ – योद्धा। सूधा वगा – सीधे वेग में। सामरी – युद्ध की, स्वामी की। चाडने – रक्षा को। चाले – चले। सगा – साथ, समधी।

[१३६]

भूचरां – पृथ्वी पर चलने वाले। षेचरा – आकाश में विचरण करने वाले। मन भावीओ – मन चाहा। आंपणे भाय – अपने लिये। अढारमो – महाभारत का युद्ध जो अठारह दिन तक हुआ था, बड़ा युद्ध। आवीयो – आया। वल भरण गात – शरीर में वल भरने वाले। धाडीत – डाकू। वाहरवटी – लुटेरे। मोहरला – आगे के। वासलां – पीछे के। तेथ वहा। वेरे मटी – वैर मिटता, वैरी नष्ट हो जाते।

[१३७]

धाडूए पालूए – खार खाये हुए, मुखिया। षेंग षेहारवे – खड्ग चलाने वाले, योद्धा। जगमा ''जादवे – यादवों ने (मूंछें) तान कर युद्ध में मुंह किया, युद्ध प्रारभ किया। ओडीया'' अणी – यादवों की सेना चौड़े मैदान मे मुड़ गई। साव – श्रेष्ठ, महान्। ध्रोहे – द्रोह में, युद्ध में। भडे – शूरवीर। लडेवा कथणी – सराहनीय रूप में लड़ने के लिये।

[१३८]

ऊपडी वाग – लगामें उठी। नें – और। आवली आहची – विकट हा-हाकार मचा। रावते – राजपूतो ने। माहुते – महावतों ने, हाथी के सवारों ने। दीठ – देखा। दमघोपरे – दमघोष के पुत्र शिशुपाल ने (?)। घरण ''घण – रुक्मिणी को कृष्ण के साथ (?)। टोप ' कसण – टोप का वन्धन टूट गया।

[१३९]

तवें – कहता है (स्तु स०) । सावतो – जीवित, सामन्त । मेक – एक (?) । मेलीया – भेजो । पूछ मोने मतो – मुझसे मत पूछो, मेरा मत यदि पूछो । आगमे – वश में अणी – सेना (अनीक स०) । वढस काय – किससे मारा जावेगा ? दस वेधणी–दस सेनाओ का वेधन करने वाला ।

[१४०]

जुडो – लगो, लडो । थे – तुम । वेग – शीघ्र ही, आक्रमण का वेग । जाणे जठी – जिधर जानो, जिधर ठीक समझो । जेठ जिम – जहा जैसे भी । कान जाये कठी – कृष्ण किधर जायगा ? हालीयो हलधरें – शिशुपाल की सेना बलदेव पर चली । धूअर आसाढरी – आषाढ मास में पडने वाले कुहरे के समान । जाण धोलागरे – मानो धवलगिरि हो ।

[१४१]

देत – दैत्य । देवा समा–देवताओं के समान । घात कर–आक्रमण कर । दाटीए–दबाये । करकरा – तेज, कडाहट से । लोहडे – शास्त्र । माड पग – पैर जमा कर । माह मजा – रण में युद्ध कर आनन्दित हुए । तन पडे – शरीर गिरते । जीतवा सेहवाला – सिंह जैसी विजय । तजा – (?) ।

[१४२]

सोहड – सुभट्ट, सैनिक । सामहो – सामने । सात्वकी – सात्वकी नामक यादव योद्धा । वहुसने – उत्साह से, होश से । हेक – एक । वायक – वचन । हुओ हुसी – हुआ सो देखा और आगे होगा सो देखोगे । लोहे लामा – शस्त्र (भाला) तानने पर । आतरो लाभसी – अन्तर प्राप्त करेंगे (?) ।

[१४३]

उछजे सेल – भाला उठाइये । सालव आर्षे इसे – वीर (सवळ, भाला उठाने वाला यादव शाल्व (?) ऐसा कहता है । हेदले – घोडों का दल । लूण – नमक । पार···षरो – आगे तो खारे पानी का वडा समुद्र अथवा राजा बाधक है । मोहरें – आगे सामने । महराण –महार्णव, समुद्र स० । महीराण – पृथ्वीपति । आडो – आडा, बाधक । पूठ – पीछे । साहणि – प्रत्यक्ष, सवृश (?) । सेन समपालरो – शिशुपाल की सेना ।

[१४४]

दापवां – कहने के लिये । टूकडो – कुटुकडो, दूत (?) । घण तणो घूट – (?) । बोकडो – बकरा । पावीया – प्राप्त किया । ऊतरे···आवीया – यह आकाश से उतर कर नहीं आये ।

[१४५]

सालबा – शाल्व, यादव योद्धा । वीधु – वधु, बींधू, मारूं । वे – दो । केतला – कितने । उर्षे तणा – (?) । एतले अबरे – इतने में आकाश में दुदुभी बजी । पूरीया सपरा-नाद – शख-नाद पूरा । पाटोधरे – पटह (ढोल) धारण करने वाले, सिंहासन धारण करने वाले, शस्त्र धारण करने वाले ।

[१४६]

अने – और । डाहूल दळा – शिशुपाल के दल, डाहूल – श्रीकृष्ण से डाह करने वाला शिशुपाल । साफलो माचीयो – युद्ध हुआ (?) । मांझीया – नेता, मध्य । सावला – सबल, वीर । कोड – करोड । हिमे – अब । ईस – महादेवजी, शिवजी । जगदीश जुध जोअवा आवीयो – श्रीकृष्ण का युद्ध देखने के लिये आये ।

[१४७]

आघो फरे – आगे चला (?) । अछरे–अप्सरा । रछीया – रक्षित । आहेचीया – शीघ्रता की (स्वागतार्थ) । नचीया – नृत्य किया । पलचरा – मासभक्षी । पेचरां भूचरां – आकाश में और धरती पर विचरण करने वाले । पपरणी – चील । गहकीया – एकत्रित हुए ।

[१४८]

वीर – वीरो की सख्या ५२ मानी गई है । पैंगालरी पोहणी – खड्गधारियो की सेना । आहचे – (?) । चाड – रक्षा । अवका · जोगणी – देवियो के नाम हैं ।

[१४९]

साकणी – शाकिनी । कार भेरू तणी – काल भैरव की । हडमत री कलकली – हनुमान (वीर) की किलकिलाहट । दहू – दोनों । दडवडे वंकडे दागीओ – रणबांकुरों ने दौड कर (अथवा तोपें ?) दागी । जाजरे – जर्जरित (?) । गयण···जागीयो – आकाश और पाताल कम्पायमान हुए ।

[१५०]

तड अहे – तडडवर (?) । घूतणा – रणतूर और भेरू वाद्य वजते हैं । सालले रवदा – शत्रुओ के लिये कष्टदायक । पाच सवदा – पञ्च शब्द, पाच बार वाद्य बजाना । पेलरी – युद्ध की (?) । नीधसण – ध्वनि । ढीकली रा ढोआ–एक प्रकार की तोप के आकार के यत्र, जिनसे युद्ध के समय बडे-बड़े पत्थर फेंके जाते थे, से प्रहार । साल कीया सवद – डराने वाले शब्द हुए । थाट – सेना । सोहा – सभी, सुशोभित हुए ।

[१५१]

गाज त्रंबाल पड – नक्कारो पर चोट होने लगी । रोल गैणाइया – शब्द हुए, आकाश (गगनाङ्गण) गूज गया । सालुले – होता है । सिंधुये रागसरणाइया – शहनाईयों पर सिंधु राग हुआ । कूद गया काहली – काहली (युद्ध के समय में बजाया जाने वाला वाद्य विशेष) के वजते ही कायर भाग गए । वीर · वलकुली – आकाश मे (स्वर्ग के मार्ग मे) वीरों की भीड हो गई, वीर मरने लगे ।

[१५२]

मारका – मारने वाले । फारका – चीरने वाले । द्रीठ मुठी मली – दृष्टि और मुट्ठी मिली अर्थात् निशाने साधे गए । नाल गोला वहे – तोपो से गोले छूटने लगे । बाण छूटें

नली – तरकशो और धनुषो से बाण छूटने लगे। नालरा चोक – तोपो का प्रहार (?)। नरघोष नोसाणरा – नक्कारो की ध्वनि। धमजगर माचियो – घमासान युद्ध हुआ। कहर ऊपर धरा – पृथ्वी पर मारकाट, विपत्ति, आपत्ति मच गई।

[१५३]

कोहांक हाका समो – तोपो की ध्वनि से। लोक नर कापीयो – ससार काप गया। डूबके' कपीयो – युद्ध में मारक यन्त्रो से पाताल काप गया। नाग ' धरण – पृथ्वी को धारण करने वाले निद्रालु नागो की नागिनिया। द्ये ढोलडे – ढोल बजा कर सतर्क कर रही है। षड-हडचो ' षोलडो – मानों आकाश की परत भी डोलायमान हुई।

[१५४]

घरण पुड ऊपडी – पृथ्वी का धरातल उखड गया। मातो धमस – जोर का धमाका, घोर युद्ध। आतस बाजीया – आतिशबाजी से और तोपो आदि से अग्नि निकलने से (?)। माझीया उरकस – मुखिया-नेता उत्साहित हुए। वहे जत्रबाण – यन्त्र-बाण चलते। चद्र-बाण छूटें वला – चन्द्रबाण बला के, गजब के (?) छूटते। भूडड' 'तडला – धनुषबाण से भुजदड और हाथ टूक-टूक होने लगे।

[१५५]

ऊकटें ' समा – उत्कट सेना आमने-सामने हो कर मार-काट मचाती है। गाजीया धनुष – धनुष बजे। धोकार – ध्वनि। वेवे गमा – दोनो ओर। गाज चदेरीएं – शिशु-पाल ने गर्जना कर (शिशुपाल चन्देरी का माना जाता है)। चाप कीधो गुणे – धनुष की प्रत्यन्चा चढ़ाई। माझीओ – अगुआ। ओघा तणे – वीर का (?)।

[१५६]

सम समा – समान। मोष – अमोघ, अचूक (?)। सरा – तीर। कुजरा क्रीह – हाथी चिंघाडते। हिंसारवरा हैमरा – घोडों की हिनहिनाहट हुई (?), (हयवर स०)। जोर दारू जले – जोर से बारूद जलती। राग मारू जमी – मारू राग जम गई, मारू राग होने लगी। आज ''अमी—आज किसी शूरवीर ने मानो अमृत पी लिया कि वह मृत्यु से नहीं डर कर युद्ध करता है।

[१५७]

घूघटी वे घडा – दोनों सेनाएँ उमडी। घोर मातो घणो – घनघोर युद्ध हुआ। मेहणी ' तणो – पृथ्वी पर तीर और गोलिया मेह की भाति बरसने लगी। छेह – अन्त। पापा – गोत्र, वश, कफन, विनाश (क्षपण स०)। पाघडा – रकाबें, पगटिया। छाडीया – छोड दिया, खोल दिये। मैण – (?)। वासगरी – वासुकी नाग की, काल की। माडीया – मण्डित किये, बनाये।

[१५८]

काघले ''कालासीआ – योद्धाओ ने काल-रूप होकर भाले चलाये (?)। बगतरे – कवच। खलकते – ध्वनि करते हुए, रक्त प्रवाहित होते हुए। तुरस छांह वासीआ –

ढालों की छाया में (ओट में) रहने लगे, बचाव करने लगे। हूह''हाथरू – मनुष्यों, घोड़ों और हाथियो (?) की घोर गर्जना होने लगी। वाजीया'''वाहरू – घाड़ैती और लडाकुओं के शस्त्र वजने लगे।

[१५६]

वे हथा – दोनो हाथो मे। पेग – खड्ग। परा – तेज। साल – शस्त्र (?)। पूरवी – शिशुपाल के सैनिक जो पूर्व के थे, पूर्व दिशा के। सोरठरा – सौराष्ट्र के, श्री कृष्ण के, कृष्ण द्वारिका के माने गये है। श्री कृसन'' ससपालरा – श्री कृष्ण और शिशुपाल के वीर। षाग षरा – युद्ध में तेजी से शस्त्रो के प्रहार होने लगे।

[१६०]

सेल – भाला। पेला – शत्रु। भडा – शूरवीर। छकडां – कवच, शस्त्र। सू सरां – तीर (?)। फुरल फेफरा – पेट, कलेजे और फेफड़े फूटने लगे। आढ दोटें – शस्त्र चलाते (?)। अणीता – नोक वाले। कणी – शस्त्र। तीनी ए – तीनो ही। अग आवे वढे – अग कट आते। साग – शस्त्र से, भाले से। उछीनीए – अलग हो कर (उच्छिन्न सं०)।

[१६१]

उभी – खड़ी हुई। ताय – उसको। आडीए – आडी करते, प्रहार करते। त्रूटतां कध – कधो के टूटते हुए। समा – समय। तरपवे – तडपते। ताडीए – मारते (ताडन स०)। आयुधें आहुडे – योद्धा एक दूसरे के सामने हो युद्ध करते है। भीच – योद्धा। भाद्रवरा – भाद्रपद के। भडे – भिड़ते है, लड़ते है।

[१६२]

फाचरा ऊतरें – टुकड़ें कटते। चाचरा – मस्तक। फरसीए – फरसे से, कटते। सिघुरा आवटे – हाथी लोट-पोट होते। झाट – प्रहार। पाडासिए – तलवार। धूवके धार जोधार – योद्धाओं का रक्त प्रवाहित होता। धारु जला – जल-धारा, झरने की भाति, अथवा तलवारों से (?)। सूड'' दतूसला – हाथी की सूड दतुसलें सहित कट कर गिरती।

[१६३]

गजमोती'' गदा – गदा का प्रहार ऐसा होता कि गजमोती गिरते। जाणजें''' जुदा – मानो दाड़िम से बीज अलग किये गये हो। वाजीया'' वाराधीए – श्रेष्ठ वीरों ने युद्ध कर वहुत वीरता प्रकट की। रोहीया – जगल, वन। जाण – मानो, जानकर। वाराह पाराधीए – शिकारी ने शूकर पर प्रहार किया हो।

[१६४]

समा – समान, सभी। धजवडे – तलवार। खाग ' वेधडे – वीरों की तलवार लगते ही आगे वाले (शत्रु) भागते अथवा शत्रुओ का अग्रभाग टूटता। गहके गडा – गोफन गहकता और उससे पत्थर छूटते। तेवडा'''तुवडा – तिहरे टोप (शिरस्त्राण) टूट कर कितने ही मस्तक टूटते।

[१६५]

दापीयो – कहा। ग्रोव – यहां। केवी – किस। वीजूजले – तलवार से। पजरे ऊनरे – खजर से प्रहार खा कर। दैत – दैत्य। दोरे – वीर, कठिनाई से विजित होने वाले (दुरूह स०)। परा – तेज। रणि ' जरसिधरा – जरासिध के सैनिक, जो रणक्षेत्र में खड़े थे अब भागते हैं। 'मुडे भाग जरसिधरा' का अर्थ 'जरासिध का भाग्य मुड़ गया' भी किया जा सकता है।

[१६६]

दाणवा ''दहू – दानव (शत्रु) और यादव दोनो युद्ध के लिये कहते। करण दीठो न जुध – कानों से न सुना न आखों से देखा। पडे घडउ – धड गिरता। रस चढे – रक्त (?) बहता अथवा वीर रस बढता। धार – धारा, तलवार। वाही – चलाई। सपो-धारीयां – शंखधारी श्रीकृष्ण, असंख्य धाराए।

[१६७]

पाग'''आवटे – शत्रुओ के मस्तक पर तलवार चलाते। उनगा – नग्न, खुली हुई, पहाड़ (नग स०) (?)। आजका ' अगा – युद्ध में तलवारो से कट कर अंग ढोल की भांति डोलते (तैरते) (?)। कृसन 'वेढीमणा – श्रीकृष्ण ने शूरवीर योद्धाओ की प्रशसा की। आज'' आपणा – आज वलदेव ने भी थोडी-बहुत अपनी वीरता बताई (?)।

[१६८]

कोट कोटा समा – करोड़ो (वीरो) के समान (?)। अग्रज ऊपर – बड़े भाई (वलदेव को) अपने से भी बढ़ कर। उचरे – बताते। राड – युद्ध। रातवरी – रक्ताम्वर। राम – वलदेव। रातपीयो – क्रोधी। दाणवे ' दापीयो – दानवो (शत्रुओं) ने उन्हें (वलदेव को) कल्पान्त का काल कहा।

[१६९]

आवटे ' आयुधे – वलदेव के हथियार से सेना नष्ट होती। ऊतरे अधे – मनुष्यो के अग आधो-आध कट जाते। लडथडे 'लोहडे – शस्त्र-प्रहार से धड़ कट कर लडखडा कर गिरते। पांणगो – प्राणहीन, पानी वाले। पांनडे – हाथ, पत्ते।

[१७०]

रोहणी रतन ग्रभ – रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न रत्न (वलदेव)। रेवतीचो रमण – रेवती-रमण, वलदेव (के शस्त्र लगने पर शत्रु)। मुध – अचेतना। वाट पाणी पीयण – मार्ग में पानी (नहीं) पीता अर्थात् तुरन्त मरता। जत्र जडी – यत्र, मंत्र, आराधना, अजन और जडी का उपचार नहीं होता। गद – रोग स०। नन गारडी – सपेरे की झाड फूक भी नहीं होती। वलदेव के प्रहार अचूक और मर्मस्थान पर होते जिनसे शत्रु तुरन्त मर जाते।

[१७१]

पूरवा पापती – पूर्व पाश्र्व में, पाश्र्व पूरा करने के लिए। वेल – सेना (?)। हैदला मैंगलां – घोडों और हाथियों (मातग स०) से युक्त। सत्र सांमो – शत्रुओ के सामने। सप - 'गदा –

उस (श्रीकृष्ण) ने शंख, धनुष, गदा और चक्र धारण किये। घणा – बहुत। कप छूटी – कंपन होने लगा, कांपने लगे। रदा – शत्रुओ मे, हृदय में।

[१७२]

वाधयो वाधती – उस समय अपना वल वढाया जिस प्रकार कलह वढी अथवा कलह वढी उसी प्रकार अपना वल वढाया। दाणवा वण करण – दानवो को नष्ट करनेके लिये। सपत देपावती – पतन दिखाती है (?)। परदले ' पाहरू – शत्रुओ के दल में सैनिको के गर्द को नष्ट कर दिया। भोम भरु – भूमि का भार भरण-पोषण करने वाला (भरू) (?) उतारेगा।

[१७३]

मोपीया मधुसदने – मधुसूदन (कृष्ण) ने निशाने साध कर वाण खींच कर छोड़े। विमनर ' वने – मानो खाडव वन में अग्नि (वैश्वानर स०) प्रज्वलित हुई हो। भाभा नामी चकर – झझावात की भाति चक्र चलने लगा। सीस लागा झडण – चक्र से मस्तक कटने लगे। पतर. पीयण – योगिनी पात्र (खप्पर) भर कर रक्तपान करने लगी।

[१७४]

डहडहे डाक – जोर से आवाज होती। होय हाक होकारवण – हल्ला और हुकार होती। घाय घूमे – घायल घूमते। धुले भडे – वीर भिड़ते। भाजण घडण – सेना भागती, सेना को भग करने वाले। विसनरा ' वेरीया – विष्णु का चक्र वैरियो के मस्तक पर पड़ता। दडदडे – गिरती (?)। झाल – झोका। पत्र कोरणे कोरीया – पूरी पकने पर कैरिया (आम) (?)।

[१७५]

रोल – नष्ट होते। अंतोल त्रूटे तला – जड़ो से आंतें टूटती। भालवा – देखने के लिए। पाल – रक्षा का साधन। जूटें – जुट गये, सलग्न हुए। भला – अच्छी तरह से। संकरपण'' साझीया – वलदेव और कृष्ण जैसे जोडीदार से। वेढ ' वाझीया – नेताओ के लड़ने पर ही युद्ध हो सकता है, युद्ध में रग जमता है।

[१७६]

कहे करी – जरासिध कहता है कि तू मुझसे जोर कर। हरी हरी – हे कृष्ण! तुमने शिशुपाल की वरण की हुई स्त्री का हरण किया है। भरमीयो'' भणे – वलदेव कहता है कि हे जरासिध! तू भ्रमित कैसे हुआ? ए वडो आपणे – यह अपना मथुरा जैसा वडा मिलन (युद्ध) है, ऐसा अपना युद्ध मथुरा में भी हो चुका है।

[१७७]

तेहीज तुं – तू वही है। पारकी छठी जागी तहो – (?)। नेट ' नही – लोमडी (?) किसी भी प्रयत्न से वाघ को उत्पन्न नहीं करेगी। गाल वे – (?)। वाजीया – लड़े। भाव उपर मुग – (?) आयु पर, जीवन पर, प्राणो पर। मुमला ''गदा – मूसलो और गदा की भयकर मार से गुजार हुई।

[१७८]

जोध…जुडे – जरासिंध और बलदेव दो-दो योद्धा भिड गये। धभ… पडहडे – पृथ्वी और पहाड़ खम्भ ठोकने से कांपते और खडखडाते। चोसरा…छाइया – ब्रह्माण्ड के खण्डों मे चारो ओर शूरवीर छा गये। घाय तणा – घायलो के शरीर से। सपत…धाइया – सातों पातालों[1] की परतें भर गईं।

[१७९]

मरगडा…मुसले – बलदेव के मूसल से शत्रुओ के धड गिरते। गया गले – जरासिंध के हाथी (अथवा सब, शरीर के जोड) भागने लगे (अथवा टूटने लगे)(?) हरखयो हलधरे– रुक्मिणी हरी गई उस दिन बलदेव ने हल उठाया। जेम जरासिंधरे – जरासिंध के जैसे पचास वैसे सौ (सैनिक मार दिये)।

[१८०]

जुडण जसा – रावण से युद्ध हुआ, उसी प्रकार बलदेव ने जरासिंध से युद्ध किया। ताल वसा – कृष्ण ने भी उस समय वीरतापूर्वक शिशुपाल से युद्ध किया। परठीयो… चक्रपाणसो – शिशुपाल ने कृष्ण से युद्ध ठाना। बाणसो… सो – बाण से बाण का वेधन होने लगा।

[१८१]

बाथसो हथी – बाथोबाथ और हथियारो से (अथवा हाथापाई से) भिडे। रालीयो असथी – शिशुपाल के हाथी को (हस्ति > असथी) पृथ्वी पर डाल दिया। गाल… गणी – कृष्ण ने शिशुपाल की गालिया गिनी (एक सौ से अधिक गालियां होने पर श्रीकृष्ण ने शिशुपाल को मारने का सकल्प किया था)। घाये वहीया पसूण – शत्रुओ के घाव वहे। धाक वागी घणी – जोर की धाक हुई।

[१८२]

सार झड – शस्त्रो का प्रहार, शस्त्रो की झडी। ऊभडे – शरीर पर। जलतो सोहीओ – प्रज्वलित होता हुआ अथवा सहन करता (झेलता) हुआ शोभित होता था। रुकमणी… रोहीयो – बलदेव ने रुक्मैया को (श्रीकृष्ण पर प्रहार करने से) रोका। रुक्मैया और बलदेव का रोष दूर हुआ (?)। सावीआ सामुहा – रुक्मैया ने जिन (बाणो) को श्रीकृष्ण के सामने साधे थे। महमहण मुहा – मधुसूदन ने अपने बाणों के मुह से उन बाणो को छेद दिया।

[१८३]

भई मनभावती – भगवान के लिये मनचाही बात हुई। जोवीयो जूवती – युवती (रुक्मिणी) ने श्रीकृष्ण के सामने देखा, अथवा श्रीकृष्ण ने रुक्मिणी के सामने देखा। ताप… तणो – प्रभु ! भाई को मारने का क्रोध शान्त करो। घरा… घणी – घर-घर में लोग बहुत उपहास करेंगे (कि श्रीकृष्ण ने अपने साले को मारा)।

---

[1] तल, सुतल, वितल, महातल, तलातल, रसातल और पाताल नीचे के सात खण्ड माने जाते हैं।

[१८४]

तिका ऱ्या – इस रुक्मिणी को तब इस प्रकार कहेगी। कालकूल वध – यमराज (मृत्यु) के बन्धन मे। मारावतो छाकीया – मारते हुए तृप्त हुए। पथ ' पालसी – पिता-माता और पीहर के मार्ग का (परम्परा का) भाई ही पालन करेगा। सासरे ''सालसी – ससुराल मे सोतों के उपालभ कष्टदायक होगे। महमहण मरे – हे मधुसूदन ! यदि आज मेरा भाई मरता है। एह ऊतरे – यह दोष मेरे मस्तक से कभी नहीं उतरेगा। मतो ' कीयो – कृष्ण ने इसको (रुक्मैया को) मारने का निश्चय किया। लावडो लीओ – लवा पर मानो बाज ने झपाटा मारा।

[१८५]

मूडावीओ – मुण्डित करवाया। तणो – का। साबूत – सही, पूर्ण। साधणो बोल – गर्वोक्ति। वाहतो – चलाते हुए, कहते हुए। साहीओ – साथी। वडो झूझारपण – वड़ी वीरता। वाहीओ – डाल दिया।

[१८६]

भणे – कहते हैं। धणी'' टलो – हे द्वारिका के स्वामी ! अब चलो। सामठो '' मही – शिशुपाल वास्तव में अच्छा जोरदार साथ लाया। कपट ''कही – कपट रहित हो कर बाललीला का बखान किया।

[१८७]

मूक्यो – छोड़ा। अवगुण' ऊपर – उसमें अनन्त अवगुण थे फिर भी उसके गुणों को ऊपर मान कर। फरे – फिर। वण – उस। फावीओ – सुशोभित हुआ। मलग्यो वीदणी – दुल्हिन छोड़ गया (?)। साथ मारावीओ – साथी सैनिको को मरवा दिया।

[१८८]

हे – हय (सं०), घोड़े। हरण्य – हिरण्य (स०), सोना। हसत – हस्ति (स०), हाथी। लीध – ली। उग्रसेन वाले – उग्रसेन की गद्दी पर बैठने वाले श्रीकृष्ण ने। वसत – वस्तुए। वीणारीया – काटे। अनतचा ' ऊतारीआ – अनन्त के स्वामी श्रीकृष्ण ने तलवार उतारी।

[१८९]

अनत' ईछीया – श्रीकृष्ण ने मांसभक्षियों के अनंत मनोरथ पूर्ण किये। वेर ' वाछीआ – वारांगनाओ (अप्सराओ) ने मनोवांछित वर (वीरो की मृत्यु से) प्राप्त किये। निघुरां ' मदी – सैकड़ो हाथी-घोडो सहित पडे (कटे)। नीर नदी – नदी रक्तवर्ण नीर से पूर्ण होकर बहने लगी।

[१९०]

पोये ' पनद्दग – अनेक मास-भक्षी जानवरो ने आ कर पिघले हुए (बहते हुए) मांस (रक्त) को ग्रहण किया। भाद्रवो ' भूचरा – आकाश और पृथ्वी पर विचरण करने वालो के लिए भाद्रपद (आनन्द का समय) हुआ। चसलके'''चलूवले – गिद्धिनी ने चोंच भर कर

आनन्द सहित रक्तपान किया। काय ' कवले – उसने गर्दन डुबो कर काया की सीमा तक (रक्त का) पान किया।

[१६१]

मुमले ' कंदली – बलदेव की मण्डली ने मूसल और हल से कदली-वन मे काटे गये केलो की भांति (शत्रुओ को) डाल दिया। मार मले – मूसल और हल से मार कर शत्रु का मर्दन दिया। पेत बळदेवरो – बलदेव का क्षेत्र। सेलो – घास। षले – खलिहान में।

[१६२]

साथ ' सवे – सभी शत्रु अपने पूरे साथियो सहित पडे थे। जाणीओ ' यादवे – यादव कृष्ण का माहात्म्य जाना। भाजगयो – भाग गया। हेम – अब (हिमे), रुक्मैया। वलीया – आज्ञा (?)। षोलीए पेन – खेत और खलिहान। लूट कावे लई – काबो ने लूट ली।

[१६३]

नरदले – दलन किया, मार दिया। असपती – अश्वपति। दुलहणी ''धारामती – दुल्हिन को जीत कर द्वारामती लाया। किसन कीया – कृष्ण ने एक पथ दो काज किये। सेसचो' सीया – शेष का भार उतारा और श्री (रुक्मिणी) को लाया।

[१६४]

वभमे – ब्राह्मण (?), शोभित होती हैं। वामाग वामी वला – वामाग में रहने वाली बाला। हलते'' हालोहला–मेरी मति में जैसे समुद्र मे विष हिलने लगा। कुशल ' कुशल – श्रीकृष्ण सकुशल अपने साथियो की कुशलता के साथ आये। घोलहर धमल – घर-घर में मगलगान हुए।

[१६५]

गाजीय गडगडी – रण-नक्कारो के वजने से गडगडाहट और गर्जना हुई। चाह''' चडी – विवाह की चाहना में बहुत प्रजा अटारी पर चढ़ी। चद्रवे'' चोहटा – चौहट्टो पर चन्दोवे ही चन्दोवे छाये गये। घूघटी घटा – मानो आकाश में बारह घटा उमड़ी हो (?)।

[१६६]

कागरे ' कगाविया–प्रत्येक कगुरे पर मोर बोलने लगे (केकावाणी मयूरस्य)। पाट ' पेहरावीया – बाजार में पाट-पाटवर लगाये गये। मालीए मणी – प्रत्येक ऊपर के कक्षो पर हीरे, मणिया और सुवर्ण (हाटक स०) सजाया गया। जालीए ' जोपणी – जाली-जाली में नगर की दीपमाला शोभित हुई।

[१६७]

तेरीए ' साधीए – गली-गली में पाट-वस्त्र लगाए गए। बारणे'' बाधिए – द्वार-द्वार पर तोरण बाँधे गये। ओदणे ''ओदणे – युवतियो ने उज्वल वस्त्र धारण किये। चोतरे''' चुणे – प्रत्येक चबूतरे पर हंस मोती चुगने लगे।

[१६८]

वाडीए ' वनरे – प्रत्येक वाटिका, वन और उपवन में। आलये'' मरे – कोयल ऊचे

स्वर से आलाप लेने लगी। मारगे' मालणी—प्रत्येक मार्ग में मालिन प्रसन्नता से घूमने लगी। चोमरे ' चोगणी – प्रत्येक फूलमाला का मूल्य चौगुना हो गया।

[२००]

तोडरे ' तणी – भवनो की प्रत्येक टोड़ी[1] में मोतियो की मालाए लगाई गई। गोषडे ' गेहणी – प्रत्येक झरोखे मे स्त्रियाँ नमक ले कर[2] खडी हुई। आगणे ' अवल – प्रत्येक आगन मे उत्तम (अथवा अवला, स्त्रियो ने) चौक पूरे। कनकरे' कमल – सुवर्णमय आगन में केल, कलश और कमल लगाये गये।

[२०१]

माडहे मली – प्रत्येक मण्डप में नागवेल छाई गई। आंपणी उछली – अपनी-अपनी गुड्डिया (झण्डिया) उछाली गईं। घटवे ' घुरे – घटे-घटे से शख और झालर वजे। आरती '' उचरे – प्रत्येक आरती के अवसर पर ब्राह्मणो ने वेदो का उच्चारण किया।

[२०२]

मदरे मृदग – प्रत्येक भवन में तूर, भेरी और मृदंग वजे। इयें 'उछरंग – इस अनुमान से (इन प्रकार) श्रीकृष्ण के यहा उत्सव हुए। उधव'' आपणे – उद्धव ने श्रीकृष्ण को अपने घर में प्रवेश कराया। नाचीया...तणे – उद्धव के नेग लेने वालों ने उस समय (प्रसन्नता में) नृत्य किया।

[२०३]

पूछीयो'' प्रसन – वसुदेव ने ज्योतिषी को बुला कर प्रश्न पूछा। लीजीये... लगन – देवकी कहती है कि (शुभ) घडी का लग्न लीजिये। आपीयो ' उद्योतरी – देवकी ने जन्मराशि और नक्षत्र कहा। जसोदा'' जामोतरी – यशोदा और नन्द के घर जन्म के पश्चात् रहे।

[२०४]

पख' पहर – हे देवकी ! जन्म-पक्ष, दिन और प्रहर बताओ। वार'' वर – श्रीकृष्ण के लिये वार और लग्न निश्चित करने हेतु। भाद्रवो भावई – भाद्रपद मास और शुभ कृष्ण पक्ष में जन्म हुआ। तिथ ' तई – तब अष्टमी तिथि थी और बुधवार था।

[२०५]

रोहिणी ' रही – रोहिणी नक्षत्र और अर्द्धरात्रि शेष रही। ससिरे'' सही – चन्द्रमा के उदय होने के समय श्रीकृष्ण का जन्म जानना चाहिये। जोवता घडी – जन्मदिन देखते हुए जन्मपत्रिका को गोधूलि वाली घडी से सिद्धयोग मे जोड़ा गया।

[२०६]

हल करो – चलो। मार ''हुमी – सब के लिये भोजन का समय होगा। पाछली'''

---

[1] गवाक्ष आदि टोडो पर आधारित होते हैं।

[2] राई-नूण अनिष्ट टालने के लिये वारा जाता है।

परणसी – पिछली रात के प्रहर में कृष्ण विवाह करेंगे। छप्पन ''छपन – छप्पन कुलों को निमन्त्रित किया और छप्पन प्रकार के व्यजन तैयार हुए। वालीया' वरन – वहां पटवर्ण (ब्राह्मण, चारण, सन्यासी, योगी, यति और भट्ट) के लिये लम्बे वैठने के वस्त्र विछाये गये।

[२०७]

घणे घणे – सबका बहुत महत्त्व के साथ बहुत आदर किया। पोपीया प्रीसणे – विष्णु (कृष्ण) और बलदेव ने भोजन परोस कर सबका पोषण किया। कृमनसु ' कहे – कृष्ण से राजगुरु आ कर ऐसा कहने लगे। विलव ' वहै – अब विलम्ब न करें क्योंकि लग्न का समय होता है (वेला स०)।

[२०८]

पेहरीयो लाल इजार – लाल रंग का इजार पहिना। पचवरनीयो – पांच रगो का। तांण'''तनीया – उस पर सुन्दर तनिया तानी गईं। केसरी'' केसरी – केसरी रग की पाग और चोला। एकतारी' आडवरी – एकतारी वस्त्र की वहुत घेर और शोभावाली (धारण की)।

[२०९]

पीत ' दोपटी – पीले रंग की पछेवडी और दुपट्टी धारण की। नद-गामी ''नटी – ऐसे नद्रग्राम-वासी, नटनागर को नमस्कार है (?)। आदरस'' आणीयो – एक पुरुष-प्रमांण का आईना लाया गया। तिलक तांणियो – श्रीकृष्ण ने कस्तूरी का तिलक लगाया।

[२१०]

आणिया ' घणा – अनेक सुगधित पदार्थ डाल कर अर्गजा लाया गया। छपन ' छाटणा – छप्पन करोड़ व्यक्ति परस्पर छांटने लगे। रग ' राजीयो – दातो पर पान-बीडों का रग सुशोभित हुआ। छात्र – छत्र (स०)। भण लोकरो – लोक में प्रशसित। सेहरो छाजीयो – सेहरा सुशोभित हुआ।

[२११]

कोट ' कुंदणे – करोड-करोड़ (रुपयो) के नग कुंदन मे जडे हुए। ओपीयो आभूषणे – यादवो में इन्द्र श्रीकृष्ण के आभूषणों से शोभित हुए। जानीए'' जणे – यादव (श्रीकृष्ण) की वरात में ब्राह्मण और वदीजन थे। चदणे'''चारणे – चन्दन के महकते हुए और चारणो के बोलते हुए (श्रीकृष्ण की वरात चली)।

[२१२]

परठ ' त्रिभुवणपति – रकाव में पैर रख कर श्रीकृष्ण (घोड़े पर) सवार हुए। ढलकतै ''ढलकतै – लम्बे पुष्पहार को लटकाते हुए पहिना। ढलकते ढले – लटकते हुए पुष्पहार के साथ करोड (अथवा दुर्ग में) चँवर ढुलने लगे। मदनहर ' मले – कामदेव को लज्जित करने वाला सुन्दर रूप देखने को मिला।

[२१३]

चौक'' चाउलें – चन्दन और चावलों से चौक पूरा। हाथ'''मोताहले – एक (स्त्री) ने मोतियों से भरी थाल ली (मुक्तावली स०)। सुभ'' मचरी – युवती श्रीकृष्ण की शुभ आरती के लिये चली। कागरे'' करी – (दीवार के) प्रत्येक कांगुरे पर दीपमाला प्रज्वलित की गई।

[२१४]

राव धारामती – द्वारिका के स्वामी (श्री कृष्ण की)। लूण ' आरती – ऊपर नमक लेती हुई आरती करती है (लवण स०)। पोहर ' परण – श्रीकृष्ण पहले प्रहर में विवाह कर पहुचे। गोत्र' गमण – जिस हंसगमनी (रुक्मिणी) में उत्तम गोत्र और बत्तीस प्रकार के लक्षण[1] हैं।

[२१५]

कवण' कहे – कौन कवि एक जिह्वा से कह सकता है। लेहणो-गेहणो – खाने के पदार्थ और गहना। तास लषमी लहे – उसको लक्ष्मी ही ले सकती है। पूगी – पहुँची, गई। रयण – रैन, रात्रि। रग-रस – काम-क्रीडा। सेस देतो रसण – शेष जिव्हा देता।

[२१६]

कीध ' कुकमे – सुगन्धित जल और केशर से स्नान किया। आभरण – आभूषण। पगरण – वस्त्र (प्रावरण स०)। आचंभमे – आश्चर्यमय (?)। साकसू –शाक से। भोयण – भोजन। आचमण – आचमन। बीडा – पान।

[२१७]

कोड – करोड, प्रेम। पायक – प्यादे, सैनिक। ओडे षभा – खभ ठोकते हैं, ताल ठोकते हैं। मेन – मेनका। मुजरा – अभिवादन-सूचक गान।

[२१८]

सूण – सनक-सनंदन, शकुन। हेक – एक। मल – मिल कर। अहिलाद – आल्हाद से, प्रसन्नता से। पेहलाद – प्रह्लाद। गुणी– कलाकार। चोज – इच्छा, उत्साह। रूपगरी– रूपक की, काव्य की, रूपकली (राग) की। चाहणी – चाहना।

---

[1] नायिका के ३२ गुण निम्नलिखित हैं—

१ सुरूपा, २ सुभगा, ३ सुवेषा, ४ सुरतप्रवीणा, ५ सुनेत्रा, ६ सुखाश्रया, ७ विभोगिनी, ८ विचक्षणा, ९ प्रियभाषिणी, १० प्रसन्नमुखी, ११ पीनस्तनी, १२ चारुलोचना, १३ रसिका, १४ लज्जान्विता, १५ लक्षणयुता, १६ पठितज्ञा, १७ गीतज्ञा, १८ वाद्यज्ञा, १९ नृत्यज्ञा, २० सुप्रमाणशरीरा, २१ सुगंधप्रिया, २२ नातिमानिनी, २३ चतुरा, २४ मधुरा, २५ स्नेहमती, २६ विमर्षमति, २७ गूढमंत्रा, २८ सत्यवती, २९ कलावती, ३० शीलवती, ३१ प्रज्ञावती, ३२ गुणान्विता।—वस्तुरत्नकोश', सम्पादिका डॉ० प्रियबाला शाह, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर, पृ. ४२।

[२१६]

वापार – व्यापार, उच्चारण। वजा – पुरस्कार, भेंट (?)। साव – अच्छा। लहे – लेते हैं। कूड पामे सजा – बुरे लोग सजा पाते हैं। केसरी – सिंह। कानदे – श्रीकृष्ण। धर्म कामो – धर्म-कार्य। घातीयो – डाला। लोहरे पाजरे – लोहे के पींजरे में।

[२२०]

तेथ – वहां। भेला – सम्मिलित हो कर। चरे – खाद्य प्राप्त करते, विचरण करते। सूरही – गाय, सुरभिः (स०)। तटा – वहा। बाकरी – बकरी। मीनडी – बिल्ली। सूवटा – सूए, तोते। वरणा वरण – सभी वर्णों के। वसूदेव तण – वसुदेव के पुत्र। माडीयो त्याग – दान दिया। द्वारामती – द्वारिका। महमहण – महान्‌महा, मधुसूदन, श्रीकृष्ण।

[२२१]

करण ' करी – तुमने जैसा करना निश्चित किया वैसा कर लिया। साइडें – स्वामी नें, सायांजी भूला (काव्यकर्ता) कहते हैं। राषीयो – रक्षा करना। वृजसुदरी – वृज-सुन्दरियों के त्याग की रक्षा की (उस प्रकार कवि कामना करता है कि उसकी भी श्रीकृष्ण रक्षा करें∠।

[ख प्रति में लिखित कवित्त]

परण – विवाह कर, परिणय स०। माण – मान। माटै – मिटा दिया, के लिए (माटै गुज.)। पोहोव – पृथ्वी (पुहुमी स०)। परहस – प्राणी। पाटै – पाट दिया, नष्ट कर दिया। वार जादव वरणाई – यादवों का समय (राज्य) चलाया (व्यवहृत किया)। पग मडे – पावडा, स्वागत में मार्ग पर बिछाया जाने वाला लम्बा लाल वस्त्र। सायं आयं साइया – सायाजी झूला की सहायता करें, सायाजी झूला का स्वामी आया। करण – करने वाला। अरक दीपग उजियाळो – सूर्य रूपी दीपक का प्रकाश। वण वीर ' मीळो – वह वीर जो नक्षत्रो में चन्द्रमा की भांति (प्रकाशमान) है। अकवीस – इक्कीस। व्रहम – ब्रह्म। ढाढ – दाढो में। गर – गर्भ में, भीतर (?)। पधर – रखने वाला। थताम – स्थिति (?)। थलावण – स्थल, धरती। थभण – ठहराने वाले। पं – प्रवेश। पेप – देख कर (प्रेक्ष्य स०)। ऊपर सायैर अन्नडा – सागर पर लाने वाले। वराह अवतार की ओर सकेत है जिन्होने पृथ्वी का उद्धार किया। सोहलो घणो – बहुत सुशोभित होने वाला। साइडो भणे – सायाजी झूला कहते हैं। तोने मूझ तारत्तडा – तुम ही मेरे तारक हो, मेरे उद्धार का कार्य तुम पर ही निर्भर है।

परिशिष्ट २

छन्दानुक्रमणिका

—ः—

राजस्थान पुरातन ग्रन्थ-माला

प्रधान सम्पादक—पद्मश्री मुनि जिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य

++++++++++

राजस्थानी और हिन्दी ग्रन्थ (प्रकाशित)

१. कान्हडदेप्रबन्ध, महाकवि पद्मनाभविरचित, सम्पा०—प्रो० के.बी व्यास, एम. ए.। मूल्य—१२.२५
२. क्यामखां-रासा, कविवर जानरचित, सम्पा०—डॉ दशरथ शर्मा और श्रीअगरचन्द नाहटा। मूल्य—४ ७५
३ लावा-रासा, चारण कविया गोपालदानविरचित, सम्पा०—श्रीमहताबचन्द खारैड। मूल्य—३.७५
४. बांकीदासरी ख्यात, कविराजा बांकीदासरचित, सम्पा०—श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम ए., विद्यामहोदधि। मूल्य—५.५०
५ राजस्थानी साहित्यसग्रह, भाग १, सम्पा०—श्रीनरोत्तमदास स्वामी, एम.ए.। मूल्य—२.२५
६ राजस्थानी साहित्यसग्रह, भाग २, सम्पा०—श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम. ए, साहित्यरत्न। मूल्य—२.७५
७ कवीन्द्र-कल्पलता, कवीन्द्राचार्य-सरस्वतीविरचित, सम्पा०—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत। मूल्य—२.००
८. जुगलविलास, महाराज पृथ्वीसिंहकृत, सम्पा०—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत। मूल्य—१ ७५
९. भगतमाळ, ब्रह्मदासजी चारणकृत, सम्पा०—श्री उदैराजजी उज्ज्वल। मूल्य—१ ७५
१०. हस्तलिखित ग्रर्थोकी सूची, भाग १। मूल्य—७ ५०
११. हस्तलिखित ग्रन्थोकी सूची, भाग २। मूल्य—१२ ००
१२ मुहता नैणसीरी ख्यात, भाग १, सम्पा०—श्रीबद्रीप्रसाद साकरिया। मूल्य—८.५०
१३ ,, ,, ,, ,, २, ,, ,, मूल्य—९ ५०
१४ ,, ,, ,, ,, ३, ,, ,, मूल्य—८ ००
१५ रघुवरजसप्रकास, किसनाजी आढाकृत, सम्पा०—श्री सीताराम लाळस। मूल्य—८ २५
१६. राजस्थानी हस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग १, सम्पा० पद्मश्री मुनि जिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। मूल्य—४.५०
१७. राजस्थानीहस्तलिखितग्रन्थसूची, भाग २, सम्पा०—श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया एम.ए, साहित्यरत्न। मूल्य—२ ७५
१८ वीरवांण, ढाढी बादरकृत, सम्पा०—श्रीमती रानी लक्ष्मीकुमारी चूडावत मूल्य—४ ५०
१९ स्व० पुरोहित हरिनारायणजी विद्याभूषण-ग्रन्थसग्रहसूची, सम्पा०—श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए. और श्रीलक्ष्मीनारायणगोस्वामी दीक्षित। मूल्य—६.२५
२०. सूरजप्रकास, भाग १, कविया करणीदानजीकृत, सम्पा०—श्री सीताराम लाळस मूल्य—८.०००
२१. ,, ,, २ ,, ,, ,, ,, मूल्य—९.५०
२२ ,, ,, ३ ,, ,, ,, ,, मूल्य—९ ७५

२३. नेहतरग, रावराजा बुधसिहकृत, सम्पा०—श्रीरामप्रसाद दाधीच, एम.ए. मूल्य—४.००
२४. मत्स्यप्रदेश की हिन्दीसाहित्य को देन, डॉ० मोतीलाल गुप्त,एम.ए ,पी-एच डी. मूल्य—७.००
२५. वसन्तविलास फागु, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०—श्री एम. सी. मोदी। मूल्य—५.५०
२६. राजस्थान में सस्कृतसाहित्य की खोज—एस आर. भाण्डारकर, हिन्दी-अनुवादक श्रीब्रह्मदत्तत्रिवेदी, एम ए, साहित्याचार्य, काव्यतीर्थ मूल्य—३ ००
२७ समदर्शी आचार्य हरिभद्र, श्रीसुखलालजी सिंघवी, मूल्य—३ ००
२८. बुद्धिविलास, वखतराम शाहकृत, सम्पा०—श्रीपद्मधर पाठक, एम ए.। मूल्य—३ ७५
२९ रुक्मिणी-हरण, सायाजी झूलाकृत, सम्पा०—श्रीपुरुषोत्तमलाल मेनारिया, एम.ए.,सा.रत्न मूल्य—३ ५०

सस्कृत, प्राकृत, अपभ्र श (प्रकाशित)

१ प्रमाणमञ्जरी, तार्किकचूडामणि सर्वदेवाचार्यकृत, सम्पादक — मीमासान्यायकेसरी पं० श्रीपट्टाभिरामशास्त्री, विद्यासागर। मूल्य—६.००
२ यन्त्रराजरचना, महाराजा सवाई जयसिहकारित, सम्पादक—स्व०प० केदारनाथ-ज्योतिर्विद्, जयपुर। मूल्य—१ ७५
३ महर्षिकुलवैभवम्, स्व० प० मधुसूदन ओझाप्रणीत, भाग १, सम्पादक—म०म० प० गिरिधरशर्मा चतुर्वेदी। मूल्य—१० ७५
४ महर्षिकुलवैभवम्, स्व० पं० मधुसूदन ओझाप्रणीत, भाग २, मूलमात्र मम्पादक-प० श्रीप्रद्युम्न ओझा। मूल्म—४ ००
५ तर्कसग्रह, अन्न भट्टकृत, सम्पादक—डॉ. जितेन्द्र जेटली, एम ए., पी-एच डी., मूल्य—३ ००
६ कारकसम्बन्धोद्योत, प० रभसनन्दिकृत, सम्पादक—डॉ० हरिप्रसादशास्त्री, एम. ए., पी एच डी। मूल्य—१ ७५
७ वृत्तिदीपिका, मौनिकृष्णभट्टकृत, सम्पादक—स्व पं पुरुषोत्तमशर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य। मूल्य—२ ००
८ शब्दरत्नप्रदीप, अज्ञातकर्तृक, सम्पादक—डॉ हरिप्रसादशास्त्री, एम. ए, पी-एच डी। मूल्य—२ ००
९ कृष्णगीति, कवि सोमनाथविरचित, सम्पादिका—डॉ प्रियबाला शाह, एम ए, पी. एच डी., डी. लिट्। मूल्य—१.७५
१० नृत्तसग्रह, अज्ञातकर्तृक, सम्पादिका—डॉ प्रियबाला शाह, एम ए, पी-एच. डी., डी लिट्। मूल्य—१ ७५
११. शृङ्गारहारावली, श्रीहर्षकविरचित, सम्पादिका—डॉ प्रियबाला शाह, एम. ए, पी-एच डी, डी लिट्। मूल्य—२.७५
१२ राजविनोदमहाकाव्य, महाकवि उदयराजप्रणीत, सम्पादक—पं० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए.,। मूल्य—२.२५
१३ चक्रपाणिविजय महाकाव्य, भट्टलक्ष्मीधरविरचित, सम्पादक—प० श्रीकेशवराम काशीराम शास्त्री। मूल्य—३.५०
१४. नृत्यरत्नकोश (प्रथम भाग), महाराणा कुम्भकर्णकृत, सम्पादक—प्रो. श्रीरसिकलाल छोटालाल पारिख तथा डॉ० प्रियबाला शाह, एम. ए, पी-एच. डी., डी लिट्। मूल्य—३ ७५

१५. उक्तिरत्नाकर, साधसुन्दरगणिविरचित, सम्पादक–पद्मश्री मुनिजिनविजय, पुरातत्त्वाचार्य, सम्मान्य सचालक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर। मूल्य–४.७५

१६ दुर्गापुष्पाञ्जलि, म०म० प० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पादक–पं० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी, साहित्याचार्य। मूल्य–४.२५

१७ कर्णकुतूहल, महाकवि भोलानाथविरचित, इन्ही कविवर की अपर सस्कृत-कृति श्रीकृष्णलीलामृतसहित, सम्पादक–प० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम. ए., मूल्य–१.५०

१८. ईश्वरविलासमहाकाव्य, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक–भट्टश्रीमथुरानाथशास्त्री, साहित्याचार्य, जयपुर। स्व. पी. के. गोडे की (अग्रेजी मे) प्रस्तावनासहित। मूल्य–११.५०

१९. रसदीर्घिका, कविविद्यारामप्रणीत, सम्पादक–प० श्रीगोपालनारायण बहुरा, एम.ए. मूल्य–२ ००

२०. पद्यमुक्तावली, कविकलानिधिश्रीकृष्णभट्टविरचित, सम्पादक–भट्टश्रीमथुरानाथशास्त्री, साहित्याचार्य। मूल्य–४.००

२१. काव्यप्रकाशसकेत (टीका) भाग १ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पा०–श्रीरसिकलाल छो० पारीख, अग्रेजी मे विस्तृत प्रस्तावना एव परिशिष्टसहित मूल्य–१२.००

२२. काव्यप्रकाशसंकेत (टीका) भाग २ भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पा०–श्रीरसिकलाल छो० पारीख, मूल्य–८.२५

२३. वस्तुरत्नकोष, अज्ञातकर्तृक, सम्पा०–डॉ० प्रियबाला शाह। मूल्य–४-००

२४. दशकण्ठवधम्, प० दुर्गाप्रसादद्विवेदिकृत, सम्पा०–प० श्रीगङ्गाधर द्विवेदी। मूल्य–४.००

२५ श्रीभुवनेश्वरीमहास्तोत्र, पृथ्वीधराचार्यविरचित, कविपद्मनाभकृत भाष्यसहित, पूजापञ्चाङ्गादिसंवलित, सम्पा०–प० श्रीगोपालनारायण बहुरा। मूल्य–३ ७५

२६. रत्नपरीक्षादि-सप्तग्रन्थ-संग्रह, ठक्कुरफेरुविरचित, सशोधक–पद्मश्री मुनिजिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। मूल्य–६ २५

२७. स्वयभूच्छन्द, महाकवि स्वयभूकृत, सम्पा०–प्रो० एच डी वेलणकर। विस्तृत भूमिका (अंग्रेजी मे) एव परिशिष्टादिसहित मूल्य–७ ७५

२८. वृत्तजातिसमुच्चय कवि विरहाङ्करचित, ,, ,, ,, मूल्य–५.२५

२९ कविदर्पण, अज्ञातकर्तृक, ,, ,, ,, मूल्य–६.००

३०. कर्णामृतप्रपा, भट्टसोमेश्वरकृत, सम्पा०–पद्मश्री मुनिजिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। मूल्य–२.२५

३१ त्रिपुराभारतीलघुस्तव, लघुपण्डितविरचित, सम्पा०– ,, मूल्य–३.२५

३२ पदार्थरत्नमञ्जूषा, प० कृष्णमिश्रविरचिता, सम्पा०– ,, मूल्य–३.७५

३३. वृत्तमुक्तावली, कविकलानिधि श्रीकृष्णभट्ट कृत; स० प० भट्टश्रीमथुरानाथशास्त्री। मूल्य–३.७५

३४ इन्द्रप्रस्थप्रबन्ध, सम्पा०–डॉ दशरथ शर्मा। मूल्य–२ २५

३५ प्राकृतानन्द, रघुनाथकविरचित, सम्पा०–पद्मश्री मुनिजिनविजय पुरातत्त्वाचार्य। मूल्य–४ २५

अग्रेजी

1 A Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts Part I, R.O.RI (Jodhpur Collection), ed, by Padamashree Muni, Jinavijaya Puratattvacharya Rs 37 50 n.P.

सूचना–पुस्तक-विक्रेताओ को २५% कमीशन दिया जाता है।